कोई कुछ कह गया

कोई कुछ कह गया

लेखक

कमल शुक्ल

प्रकाशक

नेशनल पब्लिशिंग हाउस,

९६, दरियागंज, दिल्ली

प्रथम संस्करण
फरवरी, १९५९

मूल्य
दो रुपए

मुद्रक :
बालकृष्ण, एम० ए०
युगान्तर प्रेस, डफ़रिन पुल, दिल्ली

प्राक्कथन

'कोई कुछ कह गया' हाथ-करघा उद्योग पर आधारित एक लघु उपन्यास है। इसकी कथा मध्यवर्ग के उन लोगों की है जो अन्दर ही अन्दर घुट रहे हैं, विवशताओं के बीच पल रहे हैं और इस जीवन्मृतावस्था में भी परिस्थितियाँ उनके सामने विकराल रूप बनाये खड़ी हैं। उनकी प्रत्येक राह परिष्कृत न होकर काँटों से भरी है। यह कृति उन्हीं लोगों का मार्ग स्पष्ट करती है कि किसी के सहारे न रहो। अपनी गरीबी स्वयं दूर करो। परिश्रम करो और हर क्षण आगे बढ़ते रहो।

स्वतंत्र भारत में हाथ-करघा और चर्खे को विशेष महत्व प्राप्त है। चर्खा निर्धनों का एकमात्र अवलम्ब है। देश के अगण्य लोगों को उससे रोटी मिलती है और कपड़े भी वे अपने आप बुनकर पहनते हैं। दिन-प्रतिदिन हाथ-करघा उद्योग विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। बेकारी और भुखमरी की समस्या का यह एक अत्यन्त सरल हल है।

प्रस्तुत कृति में एक ऐसा ही चित्र खींचा गया है कि गृह-उद्योगों का विकास, उनकी प्राथमिकता और उनका प्राधान्य हमारी निर्धनता दूरकर राष्ट्र, समाज और व्यक्ति में नई स्फूर्ति और नूतन जिन्दगी ला सकता है। इस पुस्तक में जरायम पेशा लोगों के लिए भी एक सन्देश है कि यदि वे भटक गये हैं किन्हीं कारणों अथवा मजबूरियोंवश तो भटके ही न बने रहें, अँधेरी डगर छोड़ रोशनी की राह पर आयें और निजी उद्योग-धन्धों में अपने को लगायें। उपन्यास की नायिका कमला अपने बिगड़े हुए पति को सुमार्ग पर लाने के लिए बलिदान कर देती है।

!!

उसका कथन था कि जियो और जीने दो। जिन्दा रहना है तो काम करो। मेहनत करना ही इन्सान का फर्ज है।

इस प्रकार इस समस्यामूलक उपन्यास में निर्धनता की जटिल समस्या का समुचित समाधान किया गया है। पात्रों के चरित्र और उनके कार्य-कलाप यह सिद्ध कर देते हैं कि चर्खा सबका मित्र है और हाथ-करघा उद्योग बेकारों को रोजी तथा भूखों को रोटी देने में सर्वथा सहायक।

७८/२५६, अनवरगंज,
कानपुर
१९-१-१९५९ ई०

—कमल शुक्ल

कोई कुछ कह गया

१

सुनहले दिन और रुपहली रातें ऐसा था संसार अखिल का। वह पैसे से खेलता था और पैसा ही उसकी ताकत थी, उसीसे वह अखिल बाबू कहा जाता था। पटकापुर कानपुर नगर का एक प्रतिष्ठित और पुराना मुहल्ला है। वहीं अखिल की कोठी थी। वह इतना धनाढ्य था कि सारे मुहल्ले में उसकी धाक थी और ओज था। सबसे बढ़ चढ़कर अनाप-शनाप जायदाद थी बुजुर्गों की, किराया वसूल करने और उसका हिसाब रखने के लिये उसने कई आदमी नियुक्त कर रखे थे। दिन-रात घर में पड़े रहना और मित्रों के साथ ठठोलियाँ करना-यही उसकी दिन-चर्या थी। शरीर स्थूल हो गया था यह उसकी आराम-तलबी का साक्षात् प्रतीक था।

इतवार का दिन था। कोठी में अखिल के मित्रों की मजलिस लग रही थी। ताश-पत्तों का खेल चल रहा था। कोई मुँह में गिलौरी दाबे पान कुचर रहा था और कोई सिगरेट का कश खींचकर कह रहा था कि साइंस ने बेशुमार तरक्की की है। सुना है कि अब टेलीफोन में बात करने वाले का चित्र सामने आजायेगा। क्या कमाल है विज्ञान का! और किसी का कहना था कि चलिये अखिल बाबू, आपकी पारी है, यार कहीं तुमने मेरे पत्ते देख तो नहीं लिये?

इस पर अखिल खिलखिलाकर हँस पड़ता और खेल में दूनी दिलचस्पी लेने लगता। कमरे की छत में लटका नाच रहा सीलिंग फैन अपनी पूरी गति के साथ हवा प्रसारित कर रहा था। असाढ़ की उमस-

भरी दोपहर थी ; लेकिन कोठी में लग रहा था कि जैसे शिमला है। हँसी के कहकहे कभी-कभी बड़ी जोर से गूँज उठते और कभी कुछ देर के लिये खेल रुक सा जाता। लोग आपस में तालियाँ बजाकर एक दूसरे को दाद देने लगते।

ज्ञानदत्त हँसोड़ और मसखरा था। उसने सुराही पर ढँका शीशे का गिलास हाथ में लिया और पानी उँड़ेलता हुआ बोला—"पानी क्या है बर्फ को मात कर रहा है, लगता है जैसे इसमें बर्फ तोड़कर छोड़ दी गई हो!"

पानी भरा गिलास अखिल की ओर बढ़ता हुआ ज्ञानदत्त आग्रह करके बोला—"लो पियो अखिल, वर्ना कहीं इस पानी के भी नज़र लग गई तो पीते ही पेट में दर्द होने लगेगा। कल शम्भू पंसारी कहता था कि दिवाकर ने उससे कहा कि उसको शनि की दृष्टि लग गई है तभी सब बंटाढार हुआ जारहा है।"

हँसकर अखिल ने गिलास हाथ में ले लिया और पानी के कुछ घूँट उतार हँसी की मुद्रा में कहने लगा—"काहिल लोग ऐसे ही कहा करते है ज्ञानू। जिनसे मेहनत नहीं होती वे ही कहते हैं कि मेरा मुकद्दर खराब है और मुझसे भगवान रूठा है, दिवाकर के अगर लक्षण ही अच्छे होते तो किले से उसकी नौकरी क्यों छूटती ? उसे घर-गृहस्थी से बहुत मोह है; दिन-रात उसी में उलझा रहता है और कहता है कि कहीं काम नहीं मिलता, आजकल मैं बेकार हूँ।"

एक दूसरे सज्जन अखिल का समर्थन करते हुये बोल उठे—"हाँ बात तो भइया ठीक है, जिसके अन्दर कोई बू होती है, वह तरक्की कभी नहीं कर पाता। आपको शायद नहीं मालूम कि दिवाकर अपने मन में राजा बना घूमता है कि मैं मकान मालिक हूँ। न जाने कितने तगादे आते हैं, उसके घर। आज ही सवेरे दूधवाला रो रहा था कि मेरे बाईस रुपये हो गये, अब कल से दूध नहीं दूँगा।"

ताश पत्तों का खेल जैसे विश्रान्ति पर पहुँच गया था। प्रसङ्ग चल

पड़ा था दिवाकर का। लोग उसमें रुचि ले रहे थे, और बातों का दौर आगे बढ़ रहा था। ज्ञानदत्त फिर बोल उठा—"सरकार की पहली पंच-वर्षीय योजना तो कामयाब हो गई और दूसरी को भी सफल बनाने के लिये न जाने कितनी कोशिशें हो रही हैं, लेकिन दोस्तो ताज्जुब है कि इस दिवाकर को कहीं काम नहीं मिला। घर पर बैठकर मौज से रोटियाँ तोड़ना चाहता है, और भगवान के यहाँ से मुकद्दर लेकर आया है बहुत बढ़िया, दिन-रात झींकता ही रहता है। न जाने कितने बेकारों को काम मिल गया और मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि दिवाकर ने एम्प्लायमेंट एक्सचेंज का कार्ड भी नहीं बनवाया होगा। पता नहीं कितना घमण्ड है उसमें।"

अखिल तब अपनी बात कहने लगा—"करना क्या है यार, जो जैसा है वैसा ही रहेगा। कुत्ता धोने से बछड़ा नहीं हो जाता। दिवाकर को मैं आज से नहीं बचपन से जानता हूँ, उसमें कमाने का माद्दा है ही नहीं, अपना क्या राह-गली मिल गया तो दुआ-बन्दगी हो गई। मैं जानता हूँ कि ज्यादा मुँह लगाने से वह अपना उल्लू सीधा करने वाली बात करने लगेगा।"

"क्या मतलब?" एक अन्य महोदय ने अखिल से यह प्रश्न किया और वह कहने लगा—"दिवाकर को कर्ज काढ़ने की लत पड़ गई है हालाँकि वह अभी तक मेरे पास इस मसले को लेकर नहीं आया। लेकिन डरता हूँ कि कहीं माँग न बैठे इसीलिये मुँह नहीं लगाता।"

यह सुनते ही ज्ञानदत्त जोर देकर कहने लगा—"न भइया, इस चक्कर में मत पड़ना, कभी भूलकर भी। नहीं तो लेने की मछली और देने के काँटे हो जायेंगे। दिवाकर पैसा देने में बहुत मैला है।"

"सो अपने राम कच्ची गोलियाँ नहीं खेले हैं। मैं ऐसा मौका ही क्यों आने दूँ, जो दुनिया भर के झंझट हों।" अखिल ने यह कहकर विजय-गर्व से पुलकते हुये ज्ञानदत्त की ओर देखा। तब वह सिगरेट का एक लम्बा कश खींचकर नथुनों से धुआँ निकाल रहा था।

हँसी की सरिता अपनी उत्तुंग लहरों में वेग के साथ बही चली जा रही थी। उल्लास और आमोद-प्रमोद तीनों मिलकर सन्तोष की सृष्टि कर रहे थे; किन्तु असन्तोष अपने स्वत्व से एक कदम भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। लिप्सा, तृष्णा और लालसा उसके साथ थीं। यही कारण था कि अखिल खुशहाल होते हुए भी, अहर्निश धन की तृष्णा में लिप्त रहता और दिवाकर केवल इतना चाहता था कि दो रोटी मिल जायें जिससे परिवार का पेट भरे। गिरे समय में लोग आदमी की खिल्ली उड़ाते और उसमें दोष निकालने लगते हैं। वे उसके गुण भूल जाते है काश ! यदि मनुष्य की आवश्यकताओं को मनुष्य समझ पाता तो संघर्ष के स्थान पर आज सहयोग मुस्कराता होता। छोटे-बड़े सब भाई-भाई होते; गरीबी और अमीरी का भेद नहीं रह जाता।

इधर अखिल की कोठी में दिवाकर के विषय में नाना प्रकार की टीका-टिप्पणियाँ हो रही थीं और उधर ठीक दोपहर मे दिवाकर भटक रहा था नगर की सड़कों पर। उसकी एड़ियाँ फट गई थीं, उनमें बिवाइयों ने घाव जैसे कर दिये थे। चप्पलें टूटी थीं, फटर-फटर करता हुआ वह उनको हिलगाये चलता रहता। ऐसे ही कुर्त्ता और धोती दोनों में न जाने कितने पेबन्द लगे थे। सिर के बाल रूखे, लगता था उनमें महीनों से तेल नहीं पड़ा। दाढ़ी अधिक बढ़ जाने के कारण भद्दी लगती थी। इतने पैसे ही नहीं होते कि नियत समय पर वह शेव कराये। बिल्कुल फटे हाल, गर्दिश के चक्कर काट रहा था दिवाकर !

बहुत बड़ी आशा लेकर दिवाकर गया था आर्यनगर कि वहाँ उसे एक जनरल मर्चेन्ट की दूकान पर नौकरी मिल जायेगी; किन्तु निराशा उससे पहले ही वहाँ पहुँच चुकी थी। काम नहीं बना; टका-सा जवाब पाकर दिवाकर वापस लौट पड़ा। उसकी जेब में एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। रास्ता काफी लम्बा था और तमतमाती हुई दोपहर। हिम्मत कर वह आगे बढ़ रहा था। बार-बार उसे प्यास लगती, सड़क पर लगे नल से तृष्णा शान्त करता और फिर चलने लगता।

जैसे-तैसे दिवाकर फीलखाने की सड़क पर आ लगा। और चाहा कि पटकापुर की ओर मुड़े तब तक जग्गू धोबी सामने पड़ गया। वह सिर पर कपड़ों का गट्ठर लादे चला आ रहा था। देखते ही उसने टोक दिया—"काहे बाबू जी, हमारे पइसवा न मिलि हैं का, दुइ रुपया दस आना, सब मिलाय के हुइगे, धोबी का पइसा बड़ी मशक्कत क' है। फिर हम तो तुम्हारि परजा हन बाबू, लाओ, पइसा देव, आज हम लैकै रहिहन बाबू।"

दिवाकर का जैसे किसी ने सिर धड़ से अलग कर दिया हो। वह मन ही मन तिलमिलाकर रह गया और संयत होकर धोबी से बोला—"दो-चार दिन रुक जाओ तुम्हारे पैसे मिल जायेंगे।"

"नाहीं बाबू जी यहु आप गलत कहति हौ, पइसवा देव, आज कित्ती मुद्दत ह्वै गै।" यह कहकर धोबी ने गठरी उतारकर एक ओर रख दी और दोनों हाथ बाँध फिर कहने लगा—"हाथ जोड़त हन सरकार, हम गरीब आदमी हन, नाहीं पूरे तो जो कुछ हों वेई देव, आजु कहूँ एक पइसा नहीं मिला।"

अगल-बगल के दूकानदार जिनमें से कुछ लोग दिवाकर को पहचानते थे उधर देखने लगे। दिवाकर को परिस्थिति पर नियन्त्रण पाना कठिन हो गया। वह जाने का आयोजन कर आगे बढ़ता हुआ बोला—"इस समय तो कुछ नहीं है बरेठा। मैं दो-चार दिन में तुम्हारा काम जरूर कर दूँगा।"

लेकिन धोबी सामने आ गया और रास्ता रोक दोनों हाथ नचाकर कहने लगा—"दिल्लगी न करौ बाबू, आपकी जेब मं दुइ-चार रुपइया नाहीं यहु हम कैसे मान लेव, लाओ बोहनी कराओ, हम···"

दिवाकर असमंजस के वृत्त में तेजी के साथ नाचने लगा। उसकी दोनों मुट्ठियाँ स्वयं ही भिच गईं और दाँतों ने होंठ काट लिये। तमाशाई लोग चौकन्ने हो कर उसकी ओर देख रहे थे और वह झुँझलाकर धोबी

से यह कहता हुआ कि चलो जी, अपना काम देखो, पीछे क्यों पड़े हो ?—वहाँ से आँधी की तरह चल दिया।

धोबी खड़ा-खड़ा देर तक गड़बड़ाता रहा और लोग आपस में एक-दूसरे से कहने लगे कि दिवाकर किसी का पैसा लेकर फिर देना नहीं जानता। देखो, बेचारा धोबी भी वही रोना रो रहा है।

पति, पिता और भ्रातृत्व तीनों का सिर पर भार लिये तीस वर्षीय दिवाकर चला जा रहा था पथ पर। उसके पैर काँप रहे थे लेकिन चाल तेज थी। उसे लग रहा था कि आज उसके सिर पर आकाश फट पड़ेगा, बिजली टूट पड़ेगी। वह नेस्तनाबूद हो जायेगा। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा रहा था। अपनी बेबसी को वह किससे जाकर कहता ? दुनिया के दो नाम, नेकी और बदी। लोग बने का साथ देते हैं बिगड़े से बात भी नहीं पूछते। यह दस्तूर पुराना है। फिर बिचारा दिवाकर भला कहाँ जाता ? वह भटक रहा था माँ वसुन्धरा के वक्ष पर। उसे कहीं भी आश्रय की गोद नहीं देख पड़ती थी। वह सोच रहा था कि घर में आज चूल्हा भी नहीं जला होगा। पप्पू भूखा होगा। निर्मला क्षुधा से बिलबिला रही होगी और बहन कमला सन्तोष किये बैठे होगी कि भइया आते होंगे, वे जरूर कुछ लायेंगे। रह गई अन्नपूर्णा वह भी मेरी तरह मन ही मन अपनी मजबूरियों के प्रति छटपटा रही होगी। पता नहीं ईश्वर ने कितनी समाई दी है उसे। वह गर्दिश में भी मुस्कराती है। मेहनत करो और आगे बढ़ो पर उसकी अडिग आस्था है। एक वही है, जो मेरे जीवन-मरण की साथिन है। काश ! मैं अपनी पत्नी को भरपेट रोटी खिला सकता और तन के लिये कपड़े दे सकता, तो फिर मेरी गृहस्थी में कोई अभाव नहीं रह जाता। लेकिन दुनिया बड़ी बेरहम है। वह पसीजना जानती ही नहीं, उसका कलेजा पत्थर का है। लोग कहते हैं कि पत्थर की छाती में भी पानी होता है, पहाड़ों से नदियाँ निकलती हैं; लेकिन कोई-कोई पत्थर इतना सख्त होता है कि उसका चूरा बनता है तो वह भी बहुत कसकता है। काश ! मेरी जिन्दगी की कसक कोई समझ पाता,

मुझे धंधा देता, मैं काम से लगता। किसी तरह परिवार पलता, बस मुझे कुछ और नहीं चाहिये।

घर सामने आ गया था। अन्दर से किसी के रोने की आवाज आ रही थी। चौखट पर पैर रखते समय दिवाकर ने सुना, पप्पू रो-रो कर अन्नपूर्णा से कह रहा था—"लाओ माँ, रोटी दो, अब भूख नहीं सधती, पापा न जाने कब आयेंगे, मुझे रोटी दो।"

अन्नपूर्णा की वाणी आर्द्र थी। वह पुत्र को समझा रही थी—"अच्छे लड़के रोते नहीं पप्पू, पापा अभी आते होंगे, तुम्हारे लिये वे जरूर कुछ लायेंगे।"

पप्पू जिद पकड़ गया और जोर-जोर से रोने लगा। वह माँ की धोती पकड़कर झुंझलाये स्वर में कहने लगा—"नहीं माँ नहीं, मैं तुम्हारी बात नहीं मानूंगा, चलो, चूल्हा जलाओ, मुझे बड़ी जोर भूख लगी है।"

दिवाकर बरोठे में खड़ा-खड़ा यह दृश्य देखता रहा। उसकी आँखों में आँसू आ गये। पत्नी के निकट पहुँच उसने पुत्र को वक्ष से लगा लिया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुये आश्वासन स्वरूप कुछ कहता ही रह गया। होंठ हिले, लेकिन शब्द बाहर नहीं निकले।

२

कोलाहल का जन्म हुआ था एक अंकुर के रूप में, लेकिन धीरे-धीरे वह पौधा बन गया और लहलहाने लगा। उसके आकार में वृद्धि हुई और लोग कहने लगे कि दिवाकर वाकई मैली तबियत का आदमी है, लेकर देना तो जानता ही नहीं। और दिवाकर अपनी परिस्थितियों से जूझ रहा था। समय की गति बलवान थी उसके लिए कहीं कोई पनाह नहीं थी।

ऐसे में कभी-कभी दिवाकर को याद आ जाते अपने अतीत के दिन जब वह हार्नेस फैक्टरी में नौकरी करता था। वेतन के अतिरिक्त न जाने कितना भत्ता मिलता था। हर महीने खर्च करके भी अच्छी बचत हो जाती। उस बचत योजना ने ही अब तक परिवार की रक्षा की, किन्तु अब रोटियों के लाले पड़े थे, सब के पेट पीठ से लगे जा रहे थे।

दिवाकर तीन साल से बेकार था। कभी-कभी उसे ट्यूशन मिल जाते तो कभी कोई पार्ट टाइम काम। बँधी रोजी कभी नहीं मिली जिस से उसका कुछ फेर बनता। ढाक के तीन पात वाली ही कहावत रही। पप्पू की पढ़ाई स्थगित हो चुकी थी और कमला को भी मैट्रिक से आगे पढ़ाने का साहस नहीं हुआ। अब सबसे पहले उसके विवाह की समस्या थी। लेकिन जहाँ इन्सान भूख से तड़प रहा हो और उत्तरदायित्व उसके सामने हो, वहाँ तो यह स्थिति रहती है कि उसकी गति अब भंग हुई तब भंग हुई। दिवाकर लाख हाथ-पैर मारता मगर उसकी एक नहीं

चलती थी। असफलता ने उससे घना सम्बन्ध कर लिया था।

नगर के पड़ोस और गाँव तथा कस्बे के पड़ोसियों में बहुत अन्तर होता है। लोगों का ऐसा कहना है कि शहर का पड़ोसी कभी काम नहीं आता। दिवाकर की पतली स्थिति में लोग योग देने की बात तो भूल जाते, उल्टे उसकी खिल्ली उड़ाते थे। वे कहते कि वह हट्टा-कट्टा जवान आदमी है, धरती में लात मारे तो पाताल से पानी निकल आये। बड़े अफसोस की बात है, कहता है कि मुझे काम नहीं मिलता। जमाना आगे बढ़ रहा है और वह अपने परिवार की रोटियाँ तक नहीं चला सकता। इसे बुज़दिली नहीं तो और क्या कहा जायेगा ?

यह थी मुहल्ले वालों की स्थिति। चिड़िया अपनी जान से जा रही थी और खाने वालों को स्वाद ही नहीं आ रहा था। इन्सान पिस रहा था तिल-तिल करके। उसके अरमान मिट्टी में मिल गये थे और नाकामयाबी ही उसकी मंजिल बन गई थी। दिवाकर अपनी इसी मंजिल पर आँखें मूंदे चला जा रहा था। उसके सामने सन्तोष के नाम पर केवल एक धारणा ही रह गई थी कि या परवरदिगार कभी तो मुसीबतों का अन्त होगा।

ऐसी थी दिवाकर की जिन्दगी, गम से भरी, बिल्कुल कुचल गई थी उसकी आत्मा। उसकी महत्वाकांक्षाओं ने उससे चिर वियोग कर लिया था। वह दिन-रात अपनी ही धुन में लगा रहता, अपनी ही बात सोचा करता। पूरब के आकाश में जब सवेरे की सफेदी फूटती तो उसमें जीवन पनपता। दिन बढ़ता, कलियाँ फूल बन जातीं; लेकिन दिवाकर के मन की मासूम कली कभी न खिल पाती। यह दैवी अभिशाप था या भाग्य की विडम्बना ! कुछ नहीं कहा जा सकता।

चर्चा, चखचख और गुफ्तगू ये आरम्भ में मदद करते हैं कोलाहल की तभी वह मन्द पड़कर फिर बुलन्द हो उठता है। एक दिन प्रातः ही लोगों में यह चर्चा जोर पकड़ रही थी कि गजब हो गया गजब, दिवाकर ने अपने मकान के नीचे वाले हिस्से में किराये पर चमारों को बसा लिया

है। राम-राम यह अन्धेर ! कौन जायेगा उसके घर ? ब्राह्मणों के मुहल्ले में चमार भर लिये, तनिक भी छुआछूत का भेद नहीं माना उसने। घर में जवान बहन ब्याहने को बैठी है, कल को कौन राजी होगा उसके घर भात खाने के लिए ? आदमी लाख परेशान होता है लेकिन भूख में विष्ठा तो नहीं खाने लगता। ऐसी हालत में मिट्टी खाकर और पानी पीकर ही सन्तोष कर लेना आदमी का धर्म होता है।

यह तो था समाज का बाह्यरूप लेकिन दिवाकर के अन्तर्द्वन्द्व की कहानी कोई नहीं जानता था कि उसने आखिर ऐसा क्यों किया ? उसने सामयिक परिस्थितियों पर नियन्त्रण पाने के लिये ही यह कदम उठाया था। निन्दा होगी या इससे उसकी किरकिरी होगी यह सोचने का अवसर उसे न तब था और न अब। उसे रोटी चाहिये थी अपने लिये नहीं परिवार के लिये और इस समस्या का हल इसी प्रकार हो सकता था। दिवाकर ने सोचा कि मकान की हालत जीर्ण-शीर्ण हो रही है, एक मुद्दत हो गई उसकी मरम्मत नहीं हुई। पहले जब हाथ भरा था तो किराये पर उठाने का प्रश्न ही नहीं उठता था; मगर अब सोचता हूँ कि नीचे का हिस्सा किराये पर उठा दूँ, कुछ किराया आयेगा उससे फिलहाल अभी की मौजूदा जरूरतें तो पूरी होंगी। हम लोग ऊपर के हिस्से में गुजर-बसर कर लेंगे।

इसी आधार पर दिवाकर ने मकान के दरवाजे पर दो बड़े-बड़े कागज स्याही से लिखकर चिपका दिये। एक में अंग्रेजी में लिखा था—'To Let' और दूसरे में हिन्दी में अंकित था 'मकान किराये को खाली'। लेकिन किरायेदार आते और झाँककर चले जाते, कोई-कोई तो ऊबकर यहाँ तक कहने लगते कि ओह, यह मकान कितनी खस्ता हालत में है, न जाने ये लोग इसमें कैसे रहते हैं ! ऐसे घर को तो म्युनिस्पैलिटी को गिरवा देना चाहिए; क्योंकि इनके अचानक गिरने से अगल-बगल के मकानों को भी नुकसान पहुँच सकता है।

वास्तविकता स्पष्ट थी, मकान सील का आवास था। धूप तो क्या

उसमें धूप की रोशनी भी नहीं पहुँचती थी। ऐसा लगता था कि यह घर दो-एक बरसातों में बैठ जायेगा। रामनारायण बाजार की तंग गलियों में कुछ नीचे तबके के चमारों की बस्ती थी। उनके सम्मुख भी प्रायः घर न मिलने की समस्या बनी रहती थी। आजकल दिवाकर वहीं एक चमार के लड़के को ट्यूशन पढ़ाता था। एक दिन उसने मकान किराये पर उठाने की चर्चा चलाई। इस तरह बातचीत का सिलसिला बना और तीन किरायेदार उसके घर में आकर आबाद हो गये। तीनों से दस-दस रुपया मासिक के हिसाब से तीस रुपया उसे अग्रिम किराया मिल गया। उसने परिवार के लिये जिन्स खरीदकर रख ली।

मुहल्ले वाले अपनी बात कहते रहे उसका दिवाकर पर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा। कमला और अन्नपूर्णा ने भी जब यह चखचख सुनी, तो वे दोनों परस्पर एक-दूसरे को सन्तोष देने लगीं। कमला की बातों का आखिरी निष्कर्ष यह था कि तुम्हीं बताओ भाभी, आखिर भइया क्या करते? जब हमारे घर में कोई किरायेदार रहने को तैयार नहीं होता, तो चमारों को रख लिया है, यह कोई गुनाह नहीं किया। आदमी चोरी न करे, काम कोई बुरा नहीं है। और अन्नपूर्णा अपनी बात कहने लगी कि बीबी ठीक कहती हो जिस पर पड़ती है वही जानता है, उन्होंने किसी के घर में सेंध तो नहीं फोड़ी, अपना मकान था किराये पर उठा दिया।

और जब दम्पति में बातें छिड़तीं, अन्नपूर्णा समाज और मुहल्ले वालों का भय सामने रखती तो दिवाकर दोनों हाथ फटकार कर कहने लगता कि क्यों डरूं मैं किसी से जिससे माँगने जाऊँ वह न दे, मौके पर जो साथ दे मैं तो उसे भाई समझता हूँ, वह चाहे किसी जाति का हो। कुटुम्बी और पड़ौसी हँसना जानते हैं और साथ देना नहीं। जो सहयोग के नाम पर सर्वथा शून्य हैं, जिनसे किसी किस्म की कोई आशा नहीं फिर उनसे भय क्यों अन्नपूर्णा? सोचो, जब हमारे बच्चे भूख से बिल-बिला रहे थे, किसी ने उन्हें रोटी के लिये पूछा! जहाँ पर रोटी है आज

के इन्सान का वही केन्द्र-बिंदु है। मुझे ऐसी दुनिया की जरूरत नहीं जो कोरा मुंह-देखापन ही जानती हो और मौखिक सहानुभूति को सामने रख कर सहयोग को बदनाम करती हो। मुझे किसी का डर नहीं, मैंने जो किया है अच्छा है।

इस तरह दिनों का दौर आगे बढ़ रहा था। दिवाकर समस्याओं से निरन्तर लड़ रहा था। वह दिन-रात मनन और चिंतन में ही व्यस्त रहता कि कहीं कोई पचास रुपये महीने की भी नौकरी मिल जाती तो सारे संकट दूर हो जाते, ट्यूशन से दस रुपये मिलते हैं, ऊंट के मुंह में जीरा, इतने में क्या होता है? काश! जिन्दगी की मंजिल में हर-दम इन्सान पूरा उतरता चलता तो कितना अच्छा होता! कभी किसी समस्या का जन्म ही नहीं होता। लेकिन दुनिया रंग-बिरंगी है। वह रंग बदलती है, इन्सान भटकता रहता है उसकी भूल-भुलैया में। वह संसार-सागर का पार नहीं पा पाता। उम्र बीत जाती है और जिन्दगी थककर सो जाती है।

३

समाज को रंग बदलते तनिक भी देर नहीं लगती। उसकी नज़रों में जो आदमी अच्छा होता है वही एक दिन बुरा बन जाता है और वह उसके साथ गया बीता व्यवहार करने लगता है। मुहल्ले में किसी के घर मुण्डन हुआ तो किसी के घर अन्नप्राशन, ऐसे ही किसी के यहाँ कुछ काम होता; लेकिन बुलौआ और व्यवहार दिवाकर के घर नहीं आता। अन्नपूर्णा इस स्थिति को देखकर काँप उठी। वह शर्म और संकोच के कारण किसी के घर नहीं जाती। पड़ोस की स्त्रियाँ अगर कहीं राह-गली मिल जातीं तो छूटते ही कहने लगतीं कि कौन जाय तुम्हारे घर लौटकर नहाना पड़ेगा, घर में चमार बसा रखे हैं; अरे अपनी जाति-बिरादरी के लोग मर गए थे क्या ?

तब अन्नपूर्णा चुप नहीं रह पाती। यह जवाब जरूर देती कि हम लोग ऊपर के हिस्से में रहते हैं और किरायेदार नीचे के हिस्से में फिर छुआछूत का सवाल ही नहीं पैदा होता है। एक दूसरे से मतलब ही नहीं और शहरों में तो यह चलता है। एक-एक घर में न जाने कितनी जातियों के लोग रहते हैं।

इस पर स्त्रियाँ मुँह बिचका लेतीं और अन्नपूर्णा को लगता जैसे उसने बाजी जीत ली।

लेकिन घर आने पर अन्नपूर्णा का अन्तर्द्वन्द्व उसको हैरान कर डालता कि जिसे मैं अपनी जीत समझ रही हूं वही सबसे बड़ी हार है। अभी मुझे कमला का ब्याह करना है मुहल्ले वाले पास नहीं फटकेंगे;

यह कितना भद्दा लगेगा। समाज से अलग होकर नहीं, उससे मिलकर ही चलना होगा। समाज एक संस्था है और हर व्यक्ति उसका सदस्य।

अपने असमंजस को एक दिन अन्नपूर्णा ने व्यक्त किया दिवाकर पर। वह बोली—"तुमने देखा मुहल्ले वालों ने हम से कोई मतलब ही नहीं रखा है। जिस मुहल्ले में तुम्हारे बुजुर्गों की सात पीढ़ियाँ हो गईं, वहाँ के लोग अब तुम्हें पहचानते भी नहीं! कमला का ब्याह एक तो यों ही पैसे के बिना न जाने कब से पिछड़ रहा है दूसरे यह कोढ़ में खाज पैदा हो गई इसका क्या इलाज करोगे? ब्याह में कोई झाँकने नहीं आएगा!"

"न आये, मैं किसी को बुलाने भी नहीं जाऊँगा, मुहल्ले वाले ब्याह में सहयोग नहीं देंगे तो कमला का ब्याह नहीं होगा यह तुम्हें सोचना चाहिए ही नहीं! गर्दिश में इन्सान की इज्जत मिट्टी से भी सस्ती हो जाती है। मैं खूब छक चुका हूं इस समाज से। मुझे अपनी मंजिल खुद तय करनी है, किसी के साथ नहीं। सहारा आदमी की सबसे बड़ी कमजोरी है।"

पति की ये बातें सुनकर अन्नपूर्णा मौन हो गई। वह सोचने लगी कि इनसे कुछ भी कहो ये अपनी ही कहेंगे। तब तक दिवाकर फिर कहने लगा—"अगर मुहल्ले वालों से कहो कि मेरे घर में आकर रहें तो राजी नहीं होंगे, कहेंगे कि मकान में सील है, अंधेरा है और इसके अलावा पूरे का पूरा मकान जर्जर है; फिर अगर हमें छोटी जाति वाले पैसा देते हैं तो इसमें हर्ज क्या है? आज का हर समझदार आदमी छुआछूत में कोई भेदभाव नहीं मानता।"

अन्नपूर्णा उस दिन देर तक पति से बातों में उलझी रही। उसे संतोष नहीं हुआ। वह अपनी उलझन में ही व्यस्त रही। एकान्त में उसे समझाया कमला ने भी। उसने कहा—"भाभी! तुम्हारा सोचना भी ठीक है कि मुहल्लेदारी से अलग होकर नहीं रहा जा सकता। लेकिन समय की प्रगति को देखो, उस पर विचार करो। गांधी जी ने जो हरिजनोद्धार

का बीड़ा उठाया था, आज उस काम की पूर्ति कितनी शीघ्रता से हो रही है। जो नासमझ हैं, वे लोग तो कुछ न कुछ कहते ही रहते हैं। जाति-पांति के बन्धन अब जल्दी ही दूर होने वाले हैं और हो रहे हैं। माना कि हमारे घर कोई नहीं आता है, तो इससे हमें भयभीत नहीं होना चाहिए। यहाँ पेट के लिए रोटियाँ नहीं नसीब हो रही हैं, किरायेदार रख लिये वे किसी भी जाति के हों, इसमें कोई बुराई नहीं। आज राष्ट्र के सामने उसका एक बुलन्द नारा है कि हर भारतवासी भारतीय है और भारतीयता केवल एक अकेली जाति है, उसकी कोई श्रेणियाँ नहीं।"

अन्नपूर्णा कमला की बातें सुनकर चौंक-चौंक जाती थी। उसे लग रहा था कि कमला जो कुछ कह रही है, वह अक्षरशः सत्य है, लेकिन समाज के पाखंड के सामने उसका तनिक भी अस्तित्व नहीं। लोकाचार भी अपना एक अलग महत्व रखता है।

घर के सभी प्राणी अपने-अपने चिन्तन में लीन थे और सारे मुहल्ले में अच्छी-खासी थू-थू हो रही थी दिवाकर की। बरसात बीत गई, जाड़े का मौसम आ गया, किसी के पास गर्म कपड़े नहीं थे। पुराने कपड़ों से ही सारा परिवार काम चला रहा था। घर की स्थिति यह हो गई थी कि खाना केवल एक बार बनता। ऐसे में कौन कहता है किसी से कपड़े के लिए। अन्नपूर्णा और कमला दोनों दिवाकर को तसल्ली देती थीं, उसे ढाढस बंधातीं और हमेशा इस प्रयत्न में रहतीं कि हम औरतों को तो घर में रहना है कहीं बाहर जाना नहीं। मर्दों के कपड़े साफ़, सुथरे और दुरुस्त होने चाहिएं, क्योंकि उन्हें सब जगह आन-जाना पड़ता है।

अन्नपूर्णा ने चार-पाँच रुपये जोड़े थे। एक दिन उसने पति को वे दिये और बोली—"अपने लिए एक धोती तो लाओ, यह धोती तो बिल्कुल सड़ गई है, कहाँ तक सिली जायेगी···

लेकिन दिवाकर बाप भी था। उसने बाजार जाकर पप्पू की कमीज

और निर्मला की फ्राक के लिए कपड़ा खरीदा। अन्नपूर्णा बड़बड़ाती ही रह गई।

अब जाड़ा खूब कड़ाके का पड़ रहा था। पूस का पसीना था। अन्नपूर्णा का प्रसव इन्हीं दिनों होने को था। दिवाकर को बड़ी चिन्ता थी कि आखिर सौर का खर्च कैसे निपटेगा ?

ट्यूशन के अलावा दिवाकर कहीं भी सफल नहीं हुआ नौकरी पाने में। वह भटकता रहा और समय की गाड़ी के पहिये आगे बढ़ते रहे।

आखिर एक दिन प्रसव हो गया। तब दिवाकर की जेब में एक पैसा भी नहीं था। उसने कमला से बात की और पूछा कि घर में क्या दो दिन के लिये भी आटा नहीं होगा ? सौर के सामान का प्रबन्ध कहाँ से हो यही सोच रहा हूं।

कमला भाई के सामने निरुत्तर रही। उसकी बेबसी आँखों में आँसू बनकर झाँकने लगी और दिवाकर निकल गया पैसे की टोह में। आज उसे काम नहीं पैसा चाहिये था।

घर में नवजात शिशु केहाँव-केहाँव कर रहा था। कमला जच्चा के उपचार में लगी थी। दाई ने नाल छीना था वह अपना नेग मांग रही थी। अन्नपूर्णा दुःख में डूबी आँखें मूंदे लेटी थी और कमला इधर-उधर बगलें झांक रही थी।

४

मनुष्य के जन्म से लेकर मरण तक जितने भी लौकिक संस्कार होते हैं, सभी में पैसे का खर्च है, जिसमें शादी-विवाह से भी बड़े दो मोहरे बहुत बेढब है, जन्म और मृत्यु। दिवाकर घर के बाहर निकल, अनिश्चित मंजिल पर चल पड़ा। वह सोच रहा था कि कहाँ जाऊँ? किसके आगे हाथ पसारूँ? राम भजो, इस जमाने में कौन किसको कर्ज देता है? क्या अखिल से कहूँ? कभी नहीं कहा, हिम्मत नहीं पड़ती है। पुरानी कहावत है कि उधार प्रेम की कैंची है। कहीं मेरे उसके व्यवहार में अन्तर न पड़ जाये!

अखिल का चित्र आँखों के सामने आते ही दिवाकर के कदम वहीं ठिठक गये। सामने था गणेशशंकर विद्यार्थी पार्क। सूरज अभी उगा था थोड़ी ही देर हुई। सुनहली धूप पार्क में सोने-सी चमक रही थी। दिवाकर वहीं जाकर एक बेंच पर बैठ गया। सामने हरी दूब पर बाल-समुदाय किलकारियाँ मार रहा था। उनमें से कुछ के अभिभावक यत्र-तत्र आसीन बातों में व्यस्त थे अथवा बाल-क्रीड़ा देखने में। मौलश्री के पेड़ पर खंजन पक्षी बोल रहा था और लोहे की रेलिंग पर बैठा एक कबूतर गुटरगूँ-गुटरगूँ का राग अलाप रहा था। हवा चल रही थी सरदी भरी; लेकिन धूप से संगम कर वह फिर अप्रिय-गात्री नहीं लगती। दिवाकर अपनी उधेड़-बुन में व्यस्त था। उसे प्रातः के इस सुन्दर और

सलोने वातावरण से कोई सरोकार नहीं था। आखिर बैठे-बैठे ही उसने निश्चय कर डाला कि अखिल उसकी बात नहीं टालेगा, वह उससे रुपये के लिए जरूर कहेगा।

जब एक निश्चित मार्ग तय हो जाता है तो आदमी उसकी सीमा पर पहुँचने की कोशिश करता है। उस समय उसे लगता है कि वह जो करने जा रहा है, उसमें पूरा उतर कर ही रहेगा, अन्त की ओर उसका ध्यान कभी जाता ही नहीं। दिवाकर पहुँच गया अखिल के पास और बात-त के सिलसिले में अपना प्रस्ताव उसके सामने रख दिया।

अखिल चौंक पड़ा बुरी तरह। वह मुँह बनाकर बोला—"भाई ाकर, यह बहुत टेढ़ा मसला है। कैसे हल होगा ? समझ में नहीं ता। तुम्हारे पास कोई धंधा है नहीं, मकान का किराया भी कुछ अधिक ीं आता। आखिर रुपया अदा कैसे करोगे। यह पहले मुझे ताओ ?"

दिवाकर अखिल के साथ बचपन में खेला था। साथ-साथ दोनों ने एक ही कालेज से बी० ए० की परीक्षा पास की। दिवाकर खाली हाथ होगया इसी लिये दोस्ती का हाल भी पतला होगया। उसका जवाब सीधा-सा था। वह कहने लगा—"अखिल भइया, कोई धंधा हो न हो मैं निरा बेकार ही होऊँ, फिर भी आपकी पाई-पाई दे दूँगा, चाहे मुझे घर बेचना पड़े या गिरवी रखना पड़े। इस समय मैं कर्ज बाद में पहले आपसे सहायता माँगता हूँ। मदद करो दोस्त, यह एहसान कभी नहीं भूलूँगा।"

अखिल ने मन ही मन बहुत देर विचार किया फिर प्रोनोट पर हस्ताक्षर करवाकर दस-दस रुपये के दस नोट दिवाकर को पकड़ा दिये।

रुपये सम्हाल, जेब में डाल, जब दिवाकर उठकर चला वैसे ही जोर की एक छींक आ गई, अखिल को। वह मन ही मन सोचने लगा, कि यह रकम गई, डूब गई, अब शायद नहीं मिलेगी।

× × ×

घर में लक्ष्मी ने कदम रखा जिससे कुछ चमक आ गई दिवाकर की गृहस्थी में। वह महीने भर का राशन खरीद लाया और अन्नपूर्णा के लिये सौर का सामान। इसके अतिरिक्त कमला के लिये नित्य पहनने की दो धोतियाँ ले आया। शिशु की छठी, बरवाँ आदि संस्कार खूब हँसी-खुशी से मनाये गये।

धीरे-धीरे शिशु दो महीने का हो गया। नाम रखा गया प्रेमगोपाल। शिशु पालने में झूलता और अक्सर अपने दोनों हाथों के अँगूठे चूसता रहता।

दिवाकर का बेकारी साथ नहीं छोड़ रही थी, अखिल के रुपये न जाने कब खत्म हो गये। तीस रुपया महीना किराया मिलता था अब फिर उसको एक-एक पैसे की दिक्कत होने लगी।

कभी-कभी दिवाकर जब हिम्मत हार जाता तो सोचने लगता कि बिगड़ी बात बनती नहीं, बिगड़ा फेर बँधता नहीं, आदमी मजबूर हो जाता है। रहीम का अनुभव कितना पक्का था। दरबार में वे नवरत्न रहे और भड़भूजे का भार भी झोंका। उनका दोहा है :—

बिगड़ी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय।
रहिमन बिगरे दूध को मथे न माखन होय॥

यही दुर्भाग्य शायद मेरे भी साथ है, तभी मेरी हर कोशिश बेकार साबित होती है। क्या करूँ? दुनिया में हर बाजी जीती और हारी जा सकती है, लेकिन मुकद्दर की बाजी की न हार है और न जीत। उसके आगे इंसान झुकता है, जैसे मैं।

इस तरह कभी उदास, कभी कोई नई योजना के चक्कर में दिवाकर अपने प्रयत्नों के साथ भटक रहा था। वह अपनी कोशिश से पीछे नहीं था, क्योंकि उत्तरदायित्व की बहुत बड़ी गठरी रखी थी उसके सिर पर।

दिवाकर अक्सर अपने भाग्य को झींखा करता था; मगर एक दिन उसके मुँह से बरबस ही निकल गया कि हमारे इस शिशु का भाग्य बहुत

अच्छा है। मुझे एक जगह नौकरी मिल गई है, पचास रुपये महीने की। एक बिसातखाने की दूकान पर क्लर्की का काम है।

उस दिन अन्नपूर्णा ने भी खुशी मनाई। दम्पति ने शिशु की बलायें लीं और कमला के आनन्द का तो ओर-छोर ही नहीं रहा कि अब उसके घर के गिरे दिन जा रहे हैं और अच्छे दिन आरहे हैं।

५

निर्मला आठ वर्ष की थी और पप्पू बारह का। दोनों में खूब बनती थी और झगड़ा भी होता था। पप्पू की पढ़ाई गत वर्ष से रुक गई वर्ना वह इस साल छठी कक्षा में होता और ऐसे ही निर्मला भी पहले दर्जे से ही घर में बैठ रही। दिवाकर को जब कभी थोड़ा समय मिल जाता वह बच्चों को पढ़ाने बैठ जाता, लेकिन अब उसकी जरूरत नहीं रही थी। दोनों बच्चे स्कूल जाने लगे थे।

इस बीच अखिल हाथ धोकर दिवाकर के पीछे पड़ा था। उसका कहना था कि तीस रुपया महीना किराया आता है, पचास रुपये तनख्वाह मिलती है और इसके अलावा भी मिलते हैं ट्यूशन के दस रुपये; सब मिलाकर नब्बे हुये, थोड़े-थोड़े करके मुझे देते जाओ तो तीन-चार महीने में कर्ज अदा हो सकता है।

किन्तु कोशिश करने पर भी दिवाकर अखिल को एक पैसा नहीं दे पाता था। गृहस्थी का कुआँ इतना गहरा था कि वह उसमें जो कुछ भी लाकर डाल देता सब समाता चला जाता और कुआँ फिर भी खाली ही बना रहता। छोटे-मोटे तगादे वालों का उसने मुँह बन्द कर दिया था और सिद्धान्त बना लिया था कि अब एक पैसे की भी चीज उधार नहीं खरीदेगा। तुरन्त दान महा कल्याण अति उत्तम है। वह अपने स्तर के दायरे में सीमित होकर रहना चाहता था। उसकी न किसी से दोस्ती थी और न दुश्मनी, वह सिर्फ अपने काम से मतलब रखता था।

अधिक सिधाई हानि की द्योतक है। लोग दिवाकर से ईर्ष्या करने लगे,

उससे जलने लगे। वर्ष का महान त्यौहार सम्पन्न हो गया, मुहल्ले का एक बच्चा भी दिवाकर के घर होली मिलने नहीं आया। यह बात अन्नपूर्णा को बहुत खटकी। उसने एक दिन पति के कान खोले और उनमें इतना तेज तेजाब डाल दिया जिससे दिवाकर का अन्तर और मस्तिष्क दोनों क्षत-विक्षत होकर रह गये। कमला का ब्याह इसी चैत से लेकर बैसाख तक कर देना है। यह काम बहुत आवश्यक है। जाति-बिरादरी की चिंता तो पीछे करनी है सब से पहले वर खोजना है। कन्यादान के लिए रकम चाहिये, क्या करूँ? दिवाकर उस समय बहुत परेशान हो उठा। उसने अन्त में एक ओर जाकर थोड़ी-सी विश्रान्ति पाई कि धीरे-धीरे करके अखिल का पैसा निकाल दूँ, वही एक घर है जहाँ से कुछ काम हो सकता है। कमला के ब्याह में रुपया उसी से ले लूँगा। अरे, नहीं मानेगा तो मकान गिरवी रख दूँगा। ब्याह तो इन्हीं सहालगों में करना ही है।

बस फिर क्या था दिवाकर लगन से लग गया वर की तलाश में। वह दिन-रात दौड़ता था। नौकरी पर जाना, ट्यूशन का भी ध्यान रखना। घर का काम-काज और फिर वर की खोज। उसने अपने को इतना अधिक व्यस्त बना लिया था कि सपने में भी उसका चित्त स्थिर नहीं रहता। मन भटकता ही रहता था।

पैसे का यह हाल था, जो भी हाथ में आता खर्च हो जाता। लक्ष्मी चंचला है यह उक्ति दिवाकर के सामने साक्षात् चरितार्थ हो रही थी। चैत बीतने पर आ गया और वह कुछ भी नहीं कर पाया। इधर पूरे साल-भर से वह न हाउस टैक्स जमा कर पाया था और न वाटर टैक्स। परिणाम यह हुआ कि एक दिन वाटर वर्क्स के कुछ कर्मचारियों ने आकर पानी का नल काट दिया और अब पानी लाना पड़ता था स्वयं दिवाकर को सड़क के नल से। उसके सम्मुख यह एक बहुत ही चिन्त्य स्थिति उत्पन्न हो गई।

किरायेदारों ने भी धमकी देना शुरू किया कि नल लगवाओ बाबू,

नहीं तो हम लोग मकान छोड़ देंगे। और दिवाकर सोचने लगा कि इस महीने वेतन मिलते ही सारा रुपया वाटर वर्क्स में जमा कर दूँगा। नल का कनेक्शन जुड़ जायेगा, फिर किरायेदार चीं-चीं नहीं करेंगे।

किन्तु प्रत्येक योजना पूरी नहीं उतरती। उसके मार्ग में बाधायें अचानक आकर खड़ी हो जाती हैं। दिवाकर सोचता ही रह गया और हाउस टैक्स न चुका सकने के कारण म्युनिसिपैलिटी ने उस पर मुकदमा चला दिया। हुआ यह कि उसी महीने से मकान का किराया म्युनिसिपैलिटी खुद वसूल करने लगी। अब दिवाकर की परेशानी और बढ़ी। वह तय नहीं कर पा रहा था कि क्या करे? उसका अन्तर्मन कह रहा था कि होली जल गई है, साल बदल गया है, लेकिन मेरे भाग्य का पाँसा शायद पलट गया है! तभी मैं आये-दिन मुसीबतों के मुँह में आता जा रहा हूँ।

किरायेदारों में एक किरायेदार तनिक शौकीन मिज़ाज़ का था। उसने बैसाख में घर खाली कर दिया और दूसरी जगह चला गया। दिवाकर को यह चोट भी बहुत खली। वह समाई करके रह गया। इस तरह बैसाख भी बीत गया और कमला के लिए वर नहीं मिला।

वर मिलता तो कैसे, पैसे वालों के लिए आजकल शादी-ब्याह एक व्यापार हो गया है। दिवाकर जहाँ जाता, हजारों की माँग होती। वह अपना-सा मुँह लेकर चला आता। अन्नपूर्णा जब पूछती तो ऊबकर लम्बी साँसें लेता हुआ वह कहने लगता कि पैसे वालों की दुनिया में गरीबों को कौन पूछता है? यहाँ सैकड़ों के दर्शन नहीं होते, वहाँ हजारों की माँग है, भला तुम्हीं बताओ, कि ऊँट किस करवट बैठेगा?

जिस घर में अभी कुछ महीने पहले उल्लास का जन्म हुआ था, वहाँ दुःख के बादल छा रहे थे। समस्याओं पर समस्यायें आगे आ रही थीं। अखिल ने एक दिन दिवाकर से साफ-साफ कह दिया कि इस महीने अगर उसे कुछ रुपया न मिला, तो वह दावा दायर कर देगा। दोस्ती का मत-

तब यह नहीं कि मुझ से नाजायज फायदा उठाओ। आखिर कहाँ तक राह देखूँ? बहुत दिन तो हो गये।

दिवाकर को अब ऐसा लग रहा था कि अपनी जिन्दगी में वह बुरी तरह फेल हो गया है। बिगड़ा हुआ क्रम सुधरने की अब कोई आशा नहीं।

६

वित्त का आदान-प्रदान ही कटुता और जड़ता को जन्म देता है। यह वस्तु जितनी ही प्रिय है उतनी ही उपेक्षित। अपनी मेहनत का पैसा जब किसी को मिलने वाला होता है तो वह मन में फूला नहीं समाता; किन्तु जब किसी का पैसा देना होता है और मनुष्य देने की स्थिति में नहीं होता तो उसे भार सा मालूम होने लगता है और मन में हिचक सी लगी रहती है कि कहीं तगादगीर टोक न दे। दिवाकर जिस बात से डरता था आखिर वह एक दिन होकर रही। अखिल ने वकील की मार्फत उसके पास नोटिस भेजा था। उसमें दावा करने के लिये साफ-साफ लिखा था। वह घबड़ाया और दौड़ा हुआ अखिल के पास गया।

तब अखिल कहने लगा—"भाई, मैं यह कब चाहता हूँ कि तुम पर दावा करूं, लेकिन पैसा बहुत बुरी चीज होती है दिवाकर। इसके पीछे बाप-बेटों के बीच भेद की दीवाल खड़ी हो जाती है। इसीलिये तुमसे बार-बार कहता था कि थोड़ा-थोड़ा करके देते जाओ; मगर तुमने ध्यान ही नहीं दिया। अब केवल एक सूरत हो सकती है।"

"क्या ?" दिवाकर को जैसे कुछ आश्वासन मिल गया हो। वह गौरपूर्वक अखिल के चेहरे की ओर देखने लगा।

अखिल मुस्कराकर कहने लगा—"मैं जानता हूँ कि इस समय तुम बहुत तकलीफ में हो, तुम्हें पैसे की सख्त जरूरत है, मेरी बात मानो, एक काम करो।"

"वही तो जानना चाहता हूँ मैं। सच कहता हूँ अखिल भइया कि

इस समय मेरी तकदीर ही मुझसे रूठी है। एक आपका ही सहारा है, मैं आपकी हर बात मानने को तैयार हूँ।"

नरम चारा पाकर अखिल का हौसला बढ़ गया। वह धीरे-धीरे कहने लगा—"मकान गिरवीं रख दो, तुम्हें कुछ और रुपये दे दूँगा। बोलो है न ठीक, कैसा रहेगा ?"

"कैसा, क्या बताऊँ यह तो बहुत अटपटा मसला है। मैंने सोचा था कि कमला के ब्याह में आपसे कुछ रुपये लूँगा। अगर उस समय आप न माने तो मकान गिरवी रख दूँगा, सो अभी लड़का ही नहीं मिला, कई महीनों से तलाश कर रहा हूँ। घर में कमला की भाभी इस बात के लिये कभी राजी नहीं होंगी कि मैं मकान रेहन रखूँ। घर में सलाह करके ही आपको जवाब दे सकूँगा।"

दिवाकर की ये बातें सुनकर अखिल ने फौरन ही अपना रङ्ग बदल दिया। वह छूटते ही बोल उठा—"तो भाई यहाँ इतना समय कहाँ है ? नोटिस तुमने ले ही लिया है। मै·········"

"सुनिये तो, मैंने कहा था न कि घर में सलाह करके आपको जवाब दूँगा। कुछ तो मौका दीजिये मुझे।" अधीर होकर दिवाकर ने यह कहा और उठकर खड़ा होता हुआ बोला—"चलता हूँ, रात को आऊँगा और·········"

अखिल को यह बिलकुल अच्छा नहीं लगा। वह बुरी तरह चिढ़ गया और गरम होकर कहने लगा—"जो जवाब देना है वह अभी दो मैं तुम्हारा इन्तजार नहीं करूँगा।"

अब दिवाकर मुड़कर खड़ा हो गया और दयनीय मुद्रा बनाकर विनम्र स्वर में कहने लगा—"आप मुझ पर इतना भी यकीन नहीं करते अखिल बाबू बड़े अफसोस की बात है आदमी अगर आदमी की बात न माने तो दुनिया का काम नहीं चल सकता। कह दिया कि रात को आपको बतलाऊँगा। अभी एकदम एकाएक······"

"एकदम, एकाएक यह तो ऐसा लग रहा है कि जैसे किसी ने तुम्हें

सजा का हुक्म सुना दिया हो। इतना घबड़ा गये कि जैसे मकान कहीं चला जायेगा।" यह कहकर अखिल कुछ नरम पड़ा और फिर दुंवाड़ी तक सांप सरकाता हुआ बोला—"इसमें कोई खास काम नहीं है, रेहन-नामा मेरे नाम कर दो, सौ रुपये अभी देता हूँ और चिन्ता क्यों करते हो दिवाकर कमला के ब्याह में भी मैं तुम्हारी मदद करूंगा। मैंने तुम्हें कभी गैर समझा ही नहीं।"

दिवाकर के माथे पर पसीने की बूँदें छलछला आईं। यद्यपि बिजली का पंखा पर्याप्त हवा प्रसारित कर रहा था, फिर भी उसके मस्तिष्क में इतनी उलझन थी कि उसे लगता कि सिर के अन्दर एक भट्ठी सी जल रही है, कलेजे में भी एक टीस हो रही है, क्योंकि वह अँगारे की भाँति तप रहा है। मजबूर इंसान दोनों हाथ माथे पर रख वहीं बैठ गया, उसके मुँह से जोर की एक गर्म उसाँस निकल पड़ी जिसकी उष्णता का अनुभव पास बैठे अखिल को भी हुआ। और थका-स्वर निकल पड़ा दिवाकर के मुँह से—"तो फिर, जैसी आपकी मरजी। मैं बहुत हैरान हूँ अखिल बाबू, ईश्वर दुश्मन को भी ऐसे दिन न दिखाये जैसी नाजुक परिस्थितियों में होकर मैं गुजर रहा हूँ। एक मेरे ही नहीं, बल्कि घर में सभी के भाग्य पर जंग लग गई है। सुना है कि जंग लोहे को भी खा जाती है, फिर हम लोग तो इंसान हैं। क्या मुकद्दर है ? क्या दुनिया है ? हम भी इंसान हैं यह दुनिया का दावा है, लेकिन झूठा, बिल्कुल सरासर ! क्योंकि आदमी ही आदमी को जीने नहीं देता है। मुझे जिन्दा रहने दो, अखिल बाबू, मैं आपका बहुत एहसान मानूँगा।"

अखिल अब दुनियादारी के नाते सहृदयता से भर आया था। वह कहने लगा—"हाँ, ऐसी कोई बात नहीं है मैं तुम्हारे मुँह से केवल हाँ सुनना चाहता था; बाकी रह गई लिखा-पढ़ी की बात वह होती रहेगी। अच्छा तो अब जाओ और रुपये रात को ले जाना।"

दिवाकर जब घर पहुंचा तो उसकी सारी देह चूर-चूर हो रही थी। दुखी मन से उसने अन्नपूर्णा को मकान गिरवीं रखने वाली बात बतलाई।

वह सीधे स्वभाव की नारी सुनते ही विचलित हो उठी। उसकी आँखों में आँसू आ गये और रोकर कहने लगी—"बुजुर्गों की निशानी भी मालूम होता है शायद हम लोगों से छिन जायेगी। कर्ज काढ़ना जितना आसान है उसका अदा करना उतना ही मुश्किल। भगवान् ही लाज रखेगा इस घर की, एक उसी का सहारा है।"

और जब कमला ने सुना कि दिवाकर घर गिरवीं रख रहा है तो उसके पैरों के नीचे से जैसे धरती निकल गई। उसे लगा कि पतन अपनी लम्बी जीभ निकालकर तेजी से लपलपा रहा है। और अब अन्त की गोद में, विलय होने के दिन आ गये हैं। भइया कर्ज से लद रहे हैं, सूद बढ़ेगा। उसको अदा करने में वे किस भाँति सफल होंगे, समझ में नहीं आता।

और दिवाकर उसी रात को अखिल से सौ की अपेक्षा दो सौ रुपये ले आया। दूसरे दिन मकान गिरवीं की लिखा-पढ़ी भी हो गई।

७

आषाढ़ का महीना आरम्भ होते ही बरसात ने अपना उग्र रूप धारण कर लिया। महीना आधे से भी अधिक बीत गया। अन्तिम सहालगें निकट आ लगी थीं, लेकिन दिवाकर को कमला के लिए वर नहीं मिला। इस वर्ष भी कमला अविवाहिता ही रहेगी यह भूत एक सनक बन उस पर सवार हो गया। अन्य वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष आमों की फसल बहुत अच्छी हुई थी। देशी ही नहीं कलमी आम भी बहुत सस्ता था। बच्चों ने आम खूब खाये और उनकी गर्मी फोड़ों के रूप में सामने आ गई। पप्पू के कई फोड़े निकले जो पके, भरे और फूटे, लेकिन निर्मला की जाँघ में निकला एक फोड़ा बहता ही रहा अच्छा नहीं हुआ। धीरे-धीरे लोग कहने लगे कि यह नासूर बन गया है।

सावन के बादल झूम-झूमकर धरती पर बरसते। दिवाकर और अन्नपूर्णा ऊब-ऊबकर लम्बी साँसें ले रहे थे कि इस वर्ष भी कमला का ब्याह नहीं हो पाया। सयानी लड़की जब घर में बैठी होती है तो ऐसा लगता है कि सिर पर कोई बहुत बड़ा पहाड़ रखा है।

बरसात के महीने क्या सम्पन्न और क्या विपन्न सभी लोगों को खलते हैं। सुख देते हैं केवल उस वर्ग को जो सर्वथा समर्थ होता है और ऐश करना ही उसकी जिन्दगी का ध्येय है। लगातार कई दिन तक पानी की झड़ी लगी रही और एक रात को दिवाकर के घर का पीछे वाला आधा हिस्सा भरभराकर बैठ गया। जनहानि नहीं हुई नुकसान काफी

हुआ। इस अकस्माती आपत्ति ने अन्नपूर्णा और दिवाकर को विषाद के गहरे रंग में रंग दिया।

दिवाकर के सामने अब यह एक बहुत बड़ी समस्या आकर खड़ी हो गई थी कि गिरे हुए मकान को वह किस तरह बनवा पायेगा। कर्ज यों ही बढ़ रहा है अखिल से रुपये लाकर उसने नल का कनेक्शन फिर ले लिया था और म्युनिसिपैलिटी में भी हाउस टैक्स की शेष रकम जमा कर दी थी। लेकिन दुर्भाग्य। मकान गिरते ही किरायेदार निकल गये, यह बहुत करारी चोट लगी दिवाकर के कलेजे पर।

इधर निर्मला के नासूर ने उसको एकदम निचोड़ डाला था। एक महीने में ही उसका शरीर कंकाल-सा प्रतीत होने लगा और भादों बीतते-बीतते यह स्थिति हो गई कि वह इतनी कमजोर हो गई कि उठकर चल. भी नही सकती थी। दिवाकर के पास पैसा नहीं था जो उसके इलाज में खर्च करता। दम्पति घरेलू दवाइयों को ही उपचार-स्वरूप व्यवहार में ला रहे थे, किन्तु नासूर अपनी अवधि की मर्यादा को भंग नहीं करना चाहता था।

जहाँ दिवाकर ट्यूशन पढ़ाता था वह लड़का अपने ननिहाल चला गया। अतः ट्यूशन वाली आमदनी भी बन्द हो गई। अब केवल नौकरी का ही सहारा था, वही साथ दे रही थी। उस पर भी अचानक एक दिन आँच आ गई। यह दिवाली का अवसर था। दूकान के मालिक को इस वर्ष अपनी रोकड़ में काफ़ी लम्बा घाटा हुआ, क्योंकि टैक्स बहुत बढ़ गये थे। उसकी दृष्टि में दिवाकर ही उसके कर्मचारी वर्ग में अतिरिक्त था जिसका वेतन देना उसे फालतू खर्च मालूम दे रहा था। इस तरह नौकरी से भी जवाब मिल गया दिवाकर को। वह किंकर्तव्य-विमूढ़ बना, घर में बैठा रहा, कई दिन तक बाहर नहीं निकला।

मुहल्ले वाले दिवाकर के पास जाकर हमदर्दी दिखलाते ऐसा नहीं हुआ, बल्कि लोग पीठ पीछे आपस में यह कहने लगे कि मकान गिर गया

है अब दिवाकर की ऐंठ अपने आप चली जायगी। वह तो किसी से बात ही नहीं करता है जैसे कोई बहुत बड़ा आलिम-फाजिल हो। घमंड सबका एक दिन चूर होता है, तभी आदमी की आँखें खुलती हैं।

दिवाकर फिर भटकने लगा सड़कों पर। इन दिनों नौकरी की तलाश उसे अन्धा बना रही थी। वह प्रात: तड़के ही घर से निकल जाता और काफी रात गये लौटता; किन्तु निराशा उससे आगे-आगे चलती थी। वह बहुत परेशान था।

दिवाकर से अब परिवार का दुख नहीं देखा जाता। निर्मला चारपाई से लग गई थी। पप्पू की पढ़ाई फिर बन्द हो गई। उसके कपड़े बुरी तरह फट रहे थे। इधर गोद वाला बच्चा और अन्नपूर्णा भी सूख-कर काँटा हो रहे थे। कमला पड़ गई थी बिलकुल पीली मानो उसकी देह में खून की एक बूँद भी न रही हो। घर में रोटियों के लाले पड़े थे। दम्पति अब कमला के विवाह की समस्या को जैसे भूल ही गये थे।

दिवाकर जब कभी थोड़ा-बहुत संतुलित होता तो सोचने लगता कि आपत्ति जब आती है तो चारों तरफ से। आदमी को भागे बीच नहीं मिलता है। रेत से सोना निकालने वाले उसका ढेर लगाते समय यह कभी नहीं सोचते कि हवा चलेगी, ढेर बिखर जायगा और सोने के बदले मिट्टी हाथ लगेगी। भला कहीं बालू की भी दीवाल बनती है। क्या-क्या सोचा था मैंने और क्या हो गया। मैं गम के घूंटों को जहर समझते हुये भी जिन्दा रहने के लिये पीता रहा। वह हलाहल जीते जी मौत का कारण बन जायेगा यह नहीं जानता था। एक अनार और सौ बीमार, मैं किस-किस का ध्यान करूँ ? समझ में नहीं आता ? क्योंकि नाकामयाबी मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ गई है। अखिल से पहले कर्ज लिया, फिर मकान गिरवी रखा, बीच में नौकरी मिली और छूटी। न जाने क्यों भगवान् मुझे गुड़ दिखलाकर ईंट मार रहे हैं।

इस भाँति दिवाकर अहर्निश अपनी उलझन में ही व्यस्त रहता। वह न दिन को दिन गिनता था और न रात को रात। उसे केवल एक धुन थी कि अगर मुझे कहीं काम न मिला तो मेरा परिवार भूख से बिलबिलाकर मर जायेगा। इंसान को जिन्दा रहने के लिये सबसे पहले रोटी चाहिये, वही जीवन तत्व है, उसके बिना मनुष्य एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता।

८

ऊम-घूमकर फिर माघ का महीना आ गया। सहालगें जोरों पर थीं और दिवाकर अपनी परिस्थितियों के सम्मुख जैसे कमला के ब्याह वाली बात बिल्कुल भूल ही गया था।

एक दिन अन्नपूर्णा ने कहा कि होली पर कमला पूरे अठारह वर्ष की हो जायेगी। उसकी हमजोली की लड़कियों की गोदें भर गई हैं और वह अभी तक कुंआरी है। घर-घर में चख-चख मची है कि कमला का भाई क्या खाकर इस जिन्दगी में उसका ब्याह करेगा! फटर-फटर करता घूमता है, पेट के लिये रोटियों का सहारा नहीं, ऐसी हालत में बहन का ब्याह कैसे करेगा। समझ में नहीं आता कि जवान बहन को आखिर कब तक घर में बिठाये रखेगा!

दिवाकर पत्नी की बातें सुनकर एक दीर्घ उच्छ्वास लेकर रह गया। वह सोचने लगा अपनी परिस्थितियों पर। फिर एक काल्पनिक तथ्य के आधार पर उसी दिन जा पहुँचा अखिल के पास और उससे कहने लगा, "अखिल भइया, कुछ रुपये से मदद करना, सोचता हूँ कि होली तक कमला का ब्याह निपटा दूँ। गर्दिश का चक्कर तो चलता ही रहेगा, इस को लेकर कब तक झींखता रहूँगा। जमाना इतना अधिक खराब हो गया है कि ब्याह पक्का करने के पहले ही लोग अग्रिम माँगते हैं। हटिया में एक लड़का है, दो हजार की बात हुई; लेकिन वे लोग पाँच सौ रुपया एडवांस

माँगते हैं, दो-चार दिन में रुपये का प्रबन्ध कर दो। आपने कहा भी था कि कमला के ब्याह में मैं तुम्हारी मदद करूँगा। लड़की का काम है जितनी जल्दी निपट जाय, उतना अच्छा है, बस जिस दिन उनको रुपये दे आऊँ उसी दिन ब्याह पक्का समझो।"

दिवाकर आसमान से गिरा था और अब खजूर पर अटककर चाहता था कि यही उसका आश्रय बने, लेकिन अखिल ने खजूर की डाल अपनी तर्क की तलवार से काट दी और वह धड़ाम से औंधे मुँह जमीन पर आ गिरा। अखिल कह रहा था और दिवाकर सुन रहा था—"दिवाकर, तीन सौ रुपये तो नकद हो गये और इधर न जाने कितना ब्याज हो गया है। सौ-पचास रुपये की बात और है, लेकिन इकट्ठे पाँच सौ मैं नहीं दे पाऊँगा, तुम्हीं देख लो न, मकान की कीमत अब कितनी रह गई है, आधे से ज्यादा तो गिर गया है, और फिर मैं चाहता हूँ कि हम लोगों की दोस्ती बरकरार रहे, उसमें कोई फर्क न आये। इसलिये यह इन्तजाम तुम कहीं और से कर लो, मैंने जो कहा है वह जरूर पूरा करूँगा।"

दिवाकर का सारा हौसला पस्त हो गया। वह धीरे-धीरे मुर्दा-स्वर में कहने लगा—"अखिल बाबू मैं तो जीते जी मर गया। एक मकान का ही सहारा था कमला का ब्याह करने के लिये सो उसके लिये आप ऐसा कह रहे हैं। भगवान गरीबों को मौत क्यों नहीं दे देता? उन्हें किसलिये जिन्दा रखता है? जब पाँच सौ का प्रबन्ध मैं नहीं कर सकता तो दो हजार तो बहुत हैं। क्या करूँ? आप···"

कहते-कहते दिवाकर रुक गया, क्योंकि अखिल उसके सम्मुख सहानुभूति के घट उँडेलने लगा था। इस तरह निष्कर्ष कुछ भी नहीं निकला और दिवाकर को अपना-सा मुँह लेकर वापस लौट आना पड़ा।

यह बात दिवाकर ने जब अन्नपूर्णा को बतलाई तो वह भी उसकी भाँति अधीर हो उठी।

इस बीच भगवान ने थोड़ी-सी लाज रख ली। एक जगह पच्चीस रुपये मासिक पर दिवाकर को पार्ट टाइम काम मिल गया। मालिक सीधा था। उसने उसकी पतली हालत पर रहम खाकर कुछ रुपये अग्रिम दे दिये। दिवाकर को उस समय वे थोड़े से रुपये लाखों के बराबर मालूम हो रहे थे।

फागुन बीता। होली जल गई और दिवाकर कमला के ब्याह के लिये कुछ भी नहीं कर सका। एक दिन चिन्तित और हैरान-सा वह चला जा रहा था, सड़क नापता हुआ। अचानक राधे से भेंट हो गई। यह भी उसी मुहल्ले में रहता था। दिवाकर उसे अच्छी तरह जानता था कि वह जरायम-पेशा आदमी है, लेकिन न वह किसी का दोस्त था न दुश्मन। इधर मुहल्लेदारी के नाते राधे को भी उसकी स्थिति का ज्ञान था। हमदर्दी के नाते उसने पूछ दिया—"दिवाकर भइया, क्या हाल-चाल हैं? सुना है कि आपकी नौकरी छूट गई; इस समय आप बहुत परेशान हैं। क्या बताऊँ मैं अगर किसी योग्य होता तो आपकी मदद जरूर करता। अच्छा देखो, कोशिश करूँगा। मैनपुरी तम्बाकू की एक दूकान वाले मेरे दोस्त हैं, उनके यहाँ कई आदमी काम करते हैं अगर गुंजाइश हुई तो मैं आपको जगह दिलवा दूँगा। आओ, अभी चलो मेरे साथ, कोई दूर नहीं यहीं पास ही है।"

आश्वासन का पुट पाकर दिवाकर चल दिया राधे के साथ। दोनों मैनपुरी तम्बाकू की दूकान पर पहुँचे। राधे ने मालिक से बातचीत की। कोरा जवाब मिला, कोई जगह खाली नहीं थी। तब निराश हो राधे दिवाकर का हाथ पकड़ प्रत्यावर्तन की स्थिति में आ उससे सान्त्वनापूर्ण शब्दों में कहने लगा—"कोई बात नहीं भइया, हिम्मत हारने की जरूरत नहीं, मैं दूसरी जगह कोशिश करूँगा।"

किन्तु दिवाकर मौन था। उसे ऐसा लग रहा था कि विजय-फल उसके हाथ में आना चाहते हैं और भाग्य उन्हें बीच में ही दबोच लेता

है। वह राधे के साथ घर की ओर लौट रहा था। राधे यारबाश आदमी था। सहृदयता और दोस्ती के नाते वह दिन में कई रुपये खर्च कर देता, जिसकी उसे कोई चिन्ता नहीं होती। सामने एक सिन्धी रेस्ट्राँ था। उसने देखा कि दिवाकर का चेहरा उतरा हुआ है, वह एकदम मुरझा गया है। उसने आग्रहपूर्वक कहा—"आओ भइया, चाय पी लो, सोच क्यों करते हो, काम आज नहीं मिला तो कल मिलेगा। मुसीबतजदा इन्सान की भगवान ही मदद करता है।"

दोनों रेस्ट्राँ की एक केबिन में जाकर बैठ गये, चाय की चुस्कियाँ चलने लगीं और साथ ही बातों का सिलसिला भी जमा रहा। आदमी जब अपना दुख किसी से कह लेता है, तो उसे एक प्रकार का एक क्षणिक सन्तोष-सा मिल जाता है। यही हालत दिवाकर की हुई और उसकी आस्था राधे के प्रति दृढ़ होती चली गई।

उस दिन घर आकर दिवाकर राधे के प्रति सोचता रहा कि वह आदमी बुरा हो चाहे भला; लेकिन उसमें इन्सानियत है, जिसके मैंने प्रत्यक्ष दर्शन किए। मुहल्ले में कोई भी तो ऐसा पात्र नहीं जिसने किसी दिन मुझसे फूटे मुँह पूछा होता कि तुम कहाँ हो और तुम्हारी दुनिया किधर जा रही है? राधे के पास हमदर्दी है, वह दूसरे का दुख-सुख पहचानता है। मुहल्ले वाले उससे इसलिए घृणा करते हैं कि उसकी संगति अच्छे लोगों की नहीं है। लेकिन मुझे बुराई से क्या प्रयोजन? मैं तो इन्सान का दिल देखता हूँ।

दिन के बाद रात को दिवाकर को नींद नहीं आई। वह राधे के प्रति ही विचार-विमर्श करता रहा कि राधे चरस और अफीम का अवैध व्यापार करता है यह तो उसकी वृत्ति है, उसकी अपनी पसन्द। लोग उससे दहशत खाते हैं, घबड़ाते हैं, वह फक्कड़ है, अभी तक ब्याह नहीं किया। लड़का अच्छे खानदान का है। उम्र भी अधिक नहीं लगभग पच्चीस की होगी। अगर इसके साथ जरायम वाली व्याधि न होती तो मैं

कमला का ब्याह उससे कर देता। काश ! कमला के हाथ मैं पीले कर पाता तो एक बहुत बड़ी समस्या हल हो जाती।

रात चलती रही और दिवाकर सोचता रहा। अम्बर में तारों की ज्योति क्षीण पड़ने लगी थी। चन्द्रमा आकाश के घूंघट में मुंह छिपाने की तैयारी कर रहा था और दिवाकर के विचारों का क्रम अब तक नहीं टूटा था।

९

भिन्न-भिन्न वृत्तियाँ अपनाकर ही आदमी अपनी जीविका निर्वाह करता है। सफल और असफल सभी अपना पेट भरते हैं। यही विश्व-प्रणाली है, फिर जहां अच्छाइयाँ हैं वहाँ बुराइयाँ भी, जहाँ पाप है वहाँ पुण्य भी। इतिहास के पन्ने गुण-दोषमय स्थिति का वर्णन करते हैं और भावी इतिहास की रूपरेखा भी ऐसी ही रहेगी। आने वाली पीढ़ियाँ भी कहेंगी कि सारा संसार गुण-दोषमय है। राधे से मुहल्ले वाले खुश नहीं थे; क्योंकि वह जरायम करता था। लेकिन दिवाकर टिका था धर्म और ईमान पर। हमदर्दी दिखलाने की अपेक्षा लोग उसे भी बुरा-भला कहते थे। यह स्थिति थी उस बस्ती की जहाँ का यह सिद्धान्त था कि पैसे वाले का दोस्त पैसे वाला ही हो सकता है, कोई गरीब नहीं।

राधे श्वेत मरसराइज्ड की बुर्राक जैसी धोती पहनता उस पर सिल्क का कुरता उसे खूब फबता था। उसके गले में सोने की एक मोटी-सी जंजीर पड़ी रहती और पान वह दिनभर खाये रहता था। इतना स्वच्छन्द हो गया था वह कि अपने ब्राह्मणत्व का तनिक भी ख्याल न करके वह मुहल्ले के बड़े-बूढ़े बुर्जुगों के सामने खुलमखुल्ला सिगरेट पीता था। पैरों में वार्निश के काले चमचमाते जूते और कभी-कभी फैंसी चप्पल पहनने का वह शौकीन था। मकान किराये का था, परिवार में कोई नहीं। इस तरह उसकी अकेली जिन्दगी ऐशो-इशरत से भरी बीत

रही थी। जमाना क्या कहता है इसकी उसे बिल्कुल परवाह नहीं थी।

आजकल राधे दिवाकर का केन्द्र-विन्दु बन रहा था। अक्सर दोनों की भेंट हो जाती और देर तक बातें होती रहतीं। एक दिन दिवाकर ने गोल-मोल भाषा में उससे उसकी वृत्ति के विषय में बात की। राधे समझ गया कि दिवाकर जानना चाहता है कि आखिर मैं अवैध रोजगार क्यों करता हूँ। यद्यपि आज तक राधे ने अपने अतीत की कहानी किसी को नहीं बताई; लेकिन दिवाकर से उसका मन कुछ मिल गया था। अतः उसने बतलाया कि पिताजी की मृत्यु के बाद घर में डाका पड़ गया और माँ का कत्ल हो गया। मैं एक-एक पैसे को मोहताज हो गया, किसी ने मेरी मदद नहीं की। मैट्रिक से आगे पढ़ा नहीं था नौकरी मिलना टेढ़ी खीर हो गई। पैसा होता तो कोई रोजगार करता। सब कुछ करके देख लिया, कहीं भी दाल नहीं गली। इसी गर्दिश में कुछ जरायम पेशा लोगों का साथ हो गया, अब लत पड़ गई है, यह मुश्किल से छूटेगी।

दिवाकर ने इससे अनुमान लगा लिया कि समय और समाज ने मिलकर ही राधे को इस गैरकानूनी गलत रास्ते पर चलने के लिए मजबूर कर दिया है। वह आपत्तियों का शिकार बना, किसी ने भी उसकी परवाह नहीं की और जब जिन्दा रहने के लिए, उसने अनुचित कदम उठाया तो सब कहते हैं कि वह गुनाह करता है जिसकी सजा उसे जरूर मिलनी चाहिए। कैसा अन्याय है? कैसा अन्धेर! संसार का रहस्य कुछ समझ में नहीं आता!

दिनों की गाड़ी आगे चली। रातें और सबेरे नये पुराने होते चले गए। फिर अषाढ़ का महीना आ लगा। यही सहालगों का आखिरी महीना था। कमला का ब्याह इस महीने होना बहुत आवश्यक है यही दिवाकर सोच रहा था। एक दिन इस सम्बन्ध में राधे से उसने बातचीत की। राधे ब्याह के बन्धन में बँधने के लिए राजी नहीं था। अपनी

अकेली जिन्दगी को मस्त बनाकर रखने की उसकी आदत थी। लेकिन दिवाकर ने उसे गृहस्थी के मोह में डाल दिया। उसने गृहस्थ-जीवन बिताने के लिये उसे मजबूर कर दिया और राघे के मन में भी यह बात घर कर गई कि हाँ मुझे घर बसा लेना चाहिए।

इस तरह घर में इस बात को लेकर दिवाकर का अन्नपूर्णा से वाद-विवाद हुआ। वह नहीं चाहती थी कि कमला का ब्याह राघे से हो।

कोलाहल के पेड़ में फल लगे, उनकी वृद्धि हुई तब लोग चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे कि दिवाकर राघे के साथ कमला का ब्याह कर रहा है इसमें जरूर कोई गहरा राज है। सुना है कि राघे दहेज नहीं लेगा और कुछ लोग तो यहाँ तक कहते थे कि राघे समय-कुसमय पर दिवाकर की मदद करता रहेगा। उसने दिवाकर से हमेशा साथ देने का वादा किया है। जितने मुँह थे उतनी बातें थीं। अखिल मन ही मन यह डर रहा था कि कमला के ब्याह का समय आ पहुँचा है, कहीं ऐसा न हो कि दिवाकर आकर मुझसे रुपए माँगने लगे।

यद्यपि ब्याह को केवल दस दिन ही रह गये थे; लेकिन अन्नपूर्णा अब भी उससे सहमत नहीं थी। वह एक बार पति से जोर देकर कहने लगी—"मैं कहती हूँ कि तुम्हें क्या हो गया है? कहाँ आँखें हैं तुम्हारी? इससे बेहतर तो यह है कि कमला को भाड़ में झोंक दो उसको एक आवारा आदमी के गले में बाँधना ठीक नहीं। राघे अच्छा आदमी नहीं है। ऐसे ही कोई अपने घर झाँकने नहीं आता है और फिर अगर यह ब्याह हो गया तो बदनामी खूब कसकर हो जाएगी। लोग यही कहेंगे कि तुम्हें कुछ लालच था राघे से तभी तुमने कमला को उसके साथ ब्याह दिया।"

दिवाकर पत्नी को हर बात का जवाब देने के लिये तैयार था। उसने तत्क्षण कहा—"अन्नपूर्णा, एक बार नहीं तुमसे कितनी बार कहा

कि मुझे उस समाज का तनिक भी भय नहीं है, जो मेरा कल्याण नहीं कर सकता। जो निश्चय कर चुका हूँ उससे अब पीछे नहीं हटूँगा बदनामी से डरूँ तो नेकनामी की कब तक राह देखूँगा ? बहुत दिन समाई की। आखिर जवान लड़की को कब तक घर में बिठाए रखूँगा। तुम कहती हो कि राधे बुरा है, आवारा है; लेकिन मैं जानता हूँ वह जो कुछ है। कमला जैसी पत्नी पाकर उसके आचरण स्वयं ही सुधर जाएँगे ऐसी मुझे आशा है, और आशा तथा विश्वास पर ही दुनिया कायम है।"

अन्नपूर्णा पति की बातें सुनकर खीझ गई। वह झुँझलाये स्वर में कहने लगी—"बात नहीं मानते ! अपने मन की करते हो। सबसे पहले आदमी को अपनी तरफ देखना चाहिए। अगर ससुराल जाकर कमला को बड़े-बड़े आँसुओं रोना पड़ा तो उसका मन किसको कोसेगा ? तुम्हें और हमें या दुनिया को ? उसकी जिन्दगी बरबाद न करो इससे तो वह किसी गरीब के घर जाय, चक्की पीसे और कुएँ पानी से भरे मगर चैन से दो रोटियाँ तो खायेगी।"

दिवाकर ने जब पत्नी की इस बात की भी उपेक्षा की तो वह रोने लगी और दिवाकर ने इस पर उसको एक लम्बा प्रवचन दे डाला और फिर उठकर बाहर चला गया।

कमला ने भी सुनी थीं भाई और भाभी की बातें। वह स्वयं अपनी समस्याओं से बोझिल हो उठी और सोचने लगी कि भैया जो कुछ कर रहे हैं, वह मजबूरीवश। राधे मनुष्य है; लेकिन उसकी वृत्तियाँ पाशविक। आवारा लोगों के पास अपना कोई निजी काम नहीं होता और ऐसे लोगों को सुधारने के लिए जान तक की बाज़ी लगा दो; परंतु वे नहीं सुधरते हैं। तनिक बहुत सुधार होता भी है तो वह इस तरह कि चोर चोरी से जाता है लेकिन टालाफेरी से कभी नहीं जाता।

इसके अतिरिक्त कमला अच्छी तरह जानती थी कि दिवाकर उसके

ब्याह के प्रसंग को लेकर कितना हैरान हो चुका है और तकलीफें उठाते हुए भी वह इस ब्याह कार्य को सम्पन्न कर निश्चिन्त हो, पेट की समस्या हल करने में जुटना चाहता है, मैं एक रोड़ा हूँ बीच में, और एक बहुत बड़ा व्याघात। इसलिये सन्तोष कर लेने में ही मेरी सीमा है और मर्यादा के अन्दर रहना ही स्त्रीत्व है, जहाँ और जिस घर में भैया भाभी भेज रहे हैं, वहाँ मुझे मन मैला करके नहीं, हँसी-खुशी जाना चाहिए।

इस भाँति कमला ने अपने पर सन्तोष पा लिया। और ब्याह की तिथि बिल्कुल निकट आ लगी थी। घर में मंगल-गीत गाए जाने लगे।

१०

यद्यपि ब्याह में दहेज न देने की योजना थी दिवाकर की; लेकिन लोकाचार कुछ थोड़ा-सा प्रदर्शन तो जरूर चाहता है और प्रदर्शन की सृष्टि पैसे से ही होती है, क्योंकि वही चमक है वही चकाचौंध। विलास उसका कीड़ा है और लक्ष्मी उसका नाम। इसके लिए दिवाकर राधे के आगे हाथ फैलाना नहीं चाहता था और न जाना चाहता था अखिल के पास; उसका स्वाभिमान जागृत था। उसने किसी स्वार्थवश राधे को कमला के साथ ब्याहने का निश्चय नहीं किया था। उसका पहले से ही दृढ़ संकल्प था कि वह राधे को ब्याह के बाद सुमार्ग पर लाने की पूरी-पूरी कोशिश करेगा।

कुछ रुपये की जरूरत तो पड़ेगी ही यह सोच-सोचकर दिवाकर हैरान हो रहा था और ब्याह को केवल तीन दिन शेष रह गये थे। ऐसे में दिवाकर को एक युक्ति सूझी। वह जहाँ पार्ट टाइम काम करता था वे लोग काफी मेहरबान रहते थे उस पर। उसने वहाँ जाकर सौ-डेढ़सौ रुपये की मांग की और यह कहा कि रुपये धीरे-धीरे करके वह तनख्वाह में कटवा देगा।

रकम तो मिल गई, लेकिन दिवाकर को प्रोनोट पर डेढ़ सौ की रकम पर हस्ताक्षर करने पड़े। मुहल्ले के लोग तो हैरान थे, जिस दिन बारात दिवाकर के दरवाजे पर आकर बजने लगी लोग चौंक-चौंक उठते थे और एक दूसरे से पूछने लगते कि रुपया तो किसी ने दिया नहीं। और मुहल्ले में दिवाकर किसी के यहाँ कर्ज काढ़ने जाता तो पता चल

जाता। अखिल अब उसको कौड़ी देने वाला है नहीं फिर यह रुपया कहाँ से आया, जिससे स्वागत समारोह का सामान जुटा। जरूर इस समय राधे ने उसकी पैसे से मदद की होगी।

राधे और कमला का विवाह कार्य सम्पन्न हो गया। मुहल्ले का कोई भी आदमी विवाह में शामिल नहीं हुआ और न सहयोग के नाम पर दिवाकर के घर ही आया। हाँ, अखिल और उसके लगुए-लपेटुए दुनियादारी नहीं भूले। वे जनातियों की ओर से अगवानी तथा न्यौतनी में शामिल हुये। सबने व्यवहार भी दिया दो-दो रुपये का। और अखिल ने हमदर्दी की दाद देने के लिये ऐसा किया कि अपने हाथों कमला को एक धोती दी जिस पर पाँच रुपये का नोट और एक ब्लाउज का कपड़ा भी रखा था।

× × ×

ससुराल आकर कमला ने पति का अध्ययन आरम्भ किया और राधे अपनी नवविवाहिता पत्नी के सामने ऐसा बन गया, मानों सरलता की साक्षात् मूर्ति हो। कमला जैसा सुनती थी उसके अनुकूल उसको कुछ भी नहीं मिला। वह मन ही मन प्रसन्नता से भर रही थी कि विवाह होते ही उसके पति ने अपने को कैसा बदल दिया। काश ! दिन पर दिन उनमें इसी प्रकार परिवर्तन आता चला जाय, तो मेरी जिन्दगी में कोई अभाव नहीं रह जायेगा।

और विवाह के बाद राधे को ऐसा अनुभव होने लगा कि उसके पैरों में बेड़ियाँ पड़ गई हैं। वह अब आजाद परिन्दा नहीं रहा, एक अटूट बन्धन में बँध गया है। इसीलिये वह फूँक-फूँककर कदम रखता और बहुत सँभलकर चलता था कि किसी स्थल पर कहीं भी कमला उसको टोक न दे कि तुम यह क्या कर रहे हो।

राधे अक्सर सोचा करता कि कमला मेरी जीवन संगिन है। साँप हर जगह टेढ़ा चलता है; लेकिन अपनी बाँबी में जाता है तो सीधा होकर। इसलिये बहुत जरूरी है अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने को

लिये, कि मेरा अवैधानिक व्यापार कमला की नजरों से बचकर हो। इसके बाद कुछ अधिक पैसे हाथ आयें तो मैं कोई छोटी-मोटी दूकान खोलकर बैठ जाऊँ।

और कमला देखती थी पति को कि वह प्रातः दस बजे घर से निकलता है और फिर शाम को आता है। वह कुछ नहीं पूछती राधे स्वयँ ही बतलाता कि वह चौक सराफे से आ रहा है वहीं दलाली करता है चाँदी-सोने की। अभी कुछ ही दिन हुये यह धंधा शुरू किया है।

लेकिन न जाने कमला को विश्वास क्यों नहीं होता था। वह कभी तर्क नही करती, ऐसी परिस्थितियों में वह मौन हो जाया करती थी। विवाह के समय लगभग हजार-डेढ़हजार के आभूषण बनवाये थे राधे ने पत्नी को और प्रतिदिन जब वह घर आता तो दस-पाँच रुपये जरूर लाता था। कमला हैरान थी कि अभी दलाली करते थोड़े ही दिन हुये और इतनी अच्छी आमदनी होने लगी। यह बात कुछ समझ में नहीं आती।

राधे को लग रहा था कि वह जो भी भूमिका कमला के सामने बाँधता है उस पर उसकी गढ़ी हुई कहानियाँ पूरी उतर जाती हैं। छल करना अपने को धोखा देना है और धोखा देने से धोखा खाना कहीं अधिक अच्छा है। इसी तरह राधे कमला के लिये कभी कोई साड़ी खरीद लाता कभी क्रीम, पाउडर और स्नो आदि। इसके अतिरिक्त वह कभी-कभी उसे अपने साथ सिनेमा दिखलाने भी ले जाता था। कमला को लगता कि उसकी सरलता यहाँ बनावट का चोगा पहनकर कहीं कुछ की कुछ न बन जाय इसलिये अपने प्रति वह कुछ सतर्क रहने लगी और सादगी में सुख की अनुभूति के प्रत्यक्ष दर्शन करने लगी।

पति के प्रति कमला के सेवाभाव में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही थी। वह उसे देवता समझती थी और उसके मन में यह धारणा धीरे-धीरे पुष्ट होती चली जाती थी कि बिगड़ा हुआ इन्सान जब घर-गृहस्थी के चक्कर में पड़ता है तो मजबूरियाँ उसकी नाक में नकेल डाल उसे स्वयं ही सीधा

कर देती हैं। शायद मैं उनकी हूँ इसलिये वे मेरा ख्याल रखते हैं और इसीलिये उन्होंने अपराधीवृत्ति को तिलांजलि दे डाली है।

नवदम्पत्ति का जीवन उल्लासपूर्वक व्यतीत हो रहा था। बरसात के सलोने मौसम ने उनकी विवाहित जिन्दगी में सब रस लाकर एकत्रित कर दिये थे। लगता था कि यह घर नहीं एक उद्यान है, कली खिल रही है और भौंरा उस पर मँडरा रहा है। कमला जब माँग में सिंदूर भरती और रंगीन परिधान में लिपटकर खड़ी हो जाती, तो ऐसा प्रतीत होता कि उसके सम्मुख आकाश का चाँद लजा रहा है।

११

हृदय की धड़कन जिन्दगी का साज है और उसपर बजनेवाले स्वर संगीत की संज्ञा पाते हैं। सितार का जब एक भी तार टूट जाता है अथवा कुछ विकृत हो टेढ़ा-मेढ़ा हो जाता है तो सितार बजता तो जरूर है; लेकिन उसका बजना सर्वथा व्यर्थ होता है। कमला अनुमान की आधार शिला पर खड़ी दिन-रात सुनहले सपने देखा करती कि उसका पति कुमार्ग छोड़कर अब सुमार्ग पर चल रहा है, उसकी बदनामी एक दिन नेकनामी बनकर रहेगी।

किन्तु पतन उसकी आँखें खोलने के लिये विवश हो रहा था। एक रात को जब राघे घर आया तो वह कुछ बदला हुआ था। उसके कपड़े अस्त-व्यस्त थे। उसके मुँह से गन्ध आ रही थी और आते ही बिना खाना खाये वह चारपाई पर पड़ रहा। उसकी पलकें मुँद गईं; वह सो गया। कमला ने जगाया तो हिल-डुलकर रह गया। सबेरे जब सोकर उठा तो उसकी आँखें लाल थीं और वह मुँह फैला-फैलाकर जमुहाइयाँ ले रहा था।

कमला ने पति के इस आचरण की उससे कोई शिकायत नहीं की। वह समझ गई कि उसका पति शराब का नशा भी करता है, ये बनने के लक्षण नहीं। पता नहीं क्या होने वाला है! जिसको मैं देवता समझ बैठी थी उसमें अब भी दानवता के अंश शेष हैं, कैसे पार पाऊँ? किस

तरह कहूँ क्योंकि कटुता उत्पन्न होते ही, हम दोनों का जीवन नारकीय बन जायेगा।

राधे स्वयं लज्जित था अपने कृत्य पर। वह कई दिन तक झेंपा-झेंपा बना रहा और मन ही मन डरता रहा कि कहीं कमला उससे कुछ पूछ न बैठे।

दिवाकर कभी-कभी कमला के घर आता था। उसका हाल-चाल पूछकर चला जाता। तब कमला कह देती कि मैं बहुत मजे में हूँ भइया, आपके आशिर्वाद से मुझे कोई तकलीफ नहीं है।

दिवाकर यही सब जाकर अन्नपूर्णा से कहता। वह मन में फूली नहीं समाती कि कमला अच्छे घर गई है और विवाह होने के बाद राधे बहुत सुधर गया है।

राधे अपने जीवन के काले पर्दे को सफेद बनाने की कोशिश करता तो भी धब्बे रह जाते और वे पर्दे को बीभत्स बनाने से बाज नहीं आते। चाँद के धब्बे उसका कलंक हैं और ऐसे ही दाग और धब्बों का समावेश पा आदमी भी कलंकित हुये बिना नहीं रहता। राधे अपने धंधे को छोड़ना चाहता था; लेकिन दूसरा जरियायेमाश क्या होगा यह उसकी समझ में नहीं आता था; क्योंकि जरायम का पैसा आँधी की तरह आता था और पानी की तरह बह जाता, उसमें बरक्कत कभी नहीं मालूम होती। बल्कि ऐसा अक्सर हो जाता कि लेने के बदले देने पड़ जाते और कभी-कभी तो घर के धान भी पयार में मिल जाते थे।

कमला को राधे हर भाँति प्रसन्न रखने की कोशिश में लगा रहता। उसे सबसे बड़ा डर यही था, कि कहीं उसकी गृहिणी भी उसकी वृत्ति का विरोध न करने लगे। दिवाकर से राधे की अक्सर भेंट होती तब वह उसे पूरा-पूरा आश्वासन देता कि चन्द महीनों मे ही मैं कोई न कोई काम करके बैठ जाऊँगा, कमला को पता भी नहीं लगेगा कि इसके पहले मैं क्या धंधा करता था।

दिवाकर यह सुनकर प्रसन्न हो जाता और सोचने लगता कि हर

इन्सान तरक्की करना चाहता है, लेकिन कितनी कोशिशें बेकार होतीं हैं और कितनी कामयाब ! यह हर आदमी जानता है तभी कोई सुखी है और कोई दुखी । दुख के दरिया का मेल जब सुख की सरिता से होता है तो आदमी स्थिर हो जाता है और वह सन्तोष की साँसें लेने लगता है । मगर जब दुख पहाड़ बन उसपर टूट पड़ता है तो वह दब जाता है और अपनी वर्तमान परिस्थिति को जैसे भूल ही जाता है । मैं भटक रहा हूँ नौकरी पाने के लिये, और राधे बिलबिला रहा है सुन्दर सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लिये । कहीं जीत है और कहीं हार । मेरे पल्ले हमेशा हार ही पड़ी; लेकिन फिर भी मुझमें हिम्मत है और हिम्मत आदमी की एक बहुत बड़ी ताकत है ।

घर में निर्मला बिल्कुल चारपाई से लग गई थी । लेटे ही लेटे वह मल-मूत्र त्यागती और खाना भी लेटे ही लेटे खाती थी । समय बहुत अधिक हो गया था । नासूर पुराना पड़ चुका था । लेटे-लेटे वह छोटी-सी जान हैरान हो गई थी । उसका चेहरा मुरझा गया था । आँखें गड्ढों में धँस गई थीं । उसकी कमर में बिस्तर पर दिन-रात पड़े रहने से घाव हो गये थे । कमला जब उसको देखने जाती तो उसके आँसू भर आते । यद्यपि राधे के माध्यम से उसका डाक्टरी-इलाज हो रहा था, किन्तु रोग विजयी होता है, जब वह पुराना पड़ जाता है ।

निर्मला का उपचार सुचारु रूप से चल रहा था । वह दिन पर दिन क्षीण होती चली जाती थी । इधर घर की स्थिति पहले ही जैसी थी । दिवाकर जहाँ पार्ट टाइम काम करता था वहाँ कुछ बात बिगड़ गई । वे लोग अकारण ही उस पर असन्तुष्ट हो गये और दोष देने लगे कि वह कभी ठीक समय पर नहीं आता है । दिवाकर ने परिस्थिति को भरसक सम्हालने का प्रयत्न किया; मगर बिगड़ी बात बनी नहीं और बिगड़ती ही चली गई । आखिर एक दिन वह काम छूट गया और इत्तला मिल गई कि अगर दो-तीन महीने के अन्दर उसने जो ऋण लिया है, अदा

नहीं कर देगा, तो उस पर दावा कर दिया जायेगा।

दिवाकर रात को जब चारपाई पर लेटता तो उसे कोरी आँखों सबेरा हो जाता था। वह इतना अधिक सोचता कि उसके सिर में दर्द होने लगता। राधे उसकी सहायता करने को तैयार था; किन्तु इसके लिये उसका साहस नहीं होता, न जाने क्यों ? शायद वह स्वयं अपने आप से बहुत डरता था।

१२

गर्दिश के दिनों में इन्सान अपने आत्मीयों से बहुत कुछ उम्मीद रखता है। लेकिन तब अपने पराये बन जाते हैं और कोई उस गरीब का साथ नहीं देता। मगर कुछ लोग होते हैं दरियादिल, जो दूसरे की पीर को अपनी पीर समझते हैं। वे ऐसे दुष्काल में अपनों को तो क्या गैरों को भी नहीं भूलते। रिश्तेदारी और नातेदारी का मतलब यही होता है कि समय पर वह सहयोगी बने; लेकिन ऐसा लोग कर बहुत कम पाते हैं। राघे से अब दिवाकर के परिवार का दुख नहीं देखा जाता। उसने पप्पू को पुन: स्कूल में भरती करवा दिया था और निर्मला के इलाज पर भी मुनासिब खर्च कर रहा था, जिसमें उसका नासूर अच्छा हो जाये। छोटा बच्चा प्रेमू भी गूँ-गाँ करने लगा था। वह राघे से इतना हिल गया कि दिन में एक बार राघे उसे खिलाने घर जरूर आता था।

ऐसे ही दिवाकर मना करता रह गया और राघे एक दिन गेहूँ, चावल, दाल आदि जिन्सें लगभग पूरे महीने भर के लिये अन्नपूर्णा के सामने ले जाकर रखवा आया। इस पर दम्पत्ति ने अपने-अपने संकोच का उसके सम्मुख प्रदर्शन किया और हर तरह उसे मजबूर किया कि वह सामान अपने घर ले जाय क्योंकि इन्सान पर जब गर्दिश आती है तो हाथ का सोना भी उसके लिये मिट्टी हो जाता है। किन्तु राघे नहीं माना, उसने यह कहकर टाल दिया कि मैं आप लोगों के लिये कुछ नहीं लाया

यह सब बच्चों के लिये है और आप तो जानते ही हैं कि बच्चे मुझे कितने प्यारे हैं।

इसके कुछ ही दिन बाद एक दूसरा दृश्य बदला। दिवाकर पर बेकारी का भूत सवार था। कपड़े उसके बिल्कुल तार-तार हो रहे थे। चप्पलें जवाब दे गई थीं और ऐसी ही हालत थी अन्नपूर्णा की। वह भी चीथड़ों से लद रही थी। राधे साले और सरहज के लिये आवश्यक कपड़े खरीद लाया, साथ में वह बच्चों के लिये भी कपड़े लाना नहीं भूला। अब तो अन्नपूर्णा और दिवाकर बहुत चौंक गये। दम्पति मन ही मन डरने लगे कि इस राज को लेकर कहीं उन लोगों की बदनामी न हो जाय कि राधे हमारे परिवार की मदद करता है। उन दोनों ने राधे को बड़ा उलाहना दिया और अन्त में यह कहकर दुख जाहिर किया कि नसीब जब खोटा होता है तो भगवान पहले रूठ जाता है। आखिर तुम कहाँ तक हम सबकी मदद करोगे राधे? मुकद्दर में जो लिखा है, उसे भोगना पड़ेगा चाहे वह राजा हो या रंक!

लेकिन राधे हँसता रहा।

एक बात और थी। राधे जो कुछ करता अपनी तबियत से। इसके लिये वह कभी कमला से सलाह लेने नहीं बैठता। उसने कभी कमला को नहीं बतलाया कि आज मैं अमुक सामान दिवाकर के घर दे आया। ऐसा करने का भी एक कारण था। वह सोचता था कि कहीं कमला इससे यह न समझ बैठे कि मैं उथला हूँ।

कमला कुछ-कुछ जानती थी कि उसका पति निर्मला की दवाई पर पैसे खर्च करता है और पप्पू की पढ़ाई का खर्चा भी देता है। एक दिन अन्नपूर्णा ने उसे बतलाया कि ननदोई साहब उस दिन गल्ला रखवा गये थे। तुम्हारे भइया के कपड़े बिल्कुल फट गये थे बेचारों ने बड़ी मदद की उस दिन उनके साथ मेरे लिये भी धोती ले आये। मैंने अब आगे के लिये उन्हें समझा दिया है कि तकलीफ-आराम तो चलती रहती है वे हैरान न हों।

कमला यह सुनकर गर्व से फूल उठी। उसकी दृष्टि में उसके पति का महत्व इतना अधिक बढ़ गया जिसकी सीमा न रही। वह अपनी भाभी से कहने लगी कि भाभी उन्होंने जो किया उसके लिये तुम्हें उनसे कुछ भी नहीं कहना चाहिये। हर आदमी अपना कर्त्तव्य पालन करता है।

ननद को अधिक बोलने का अवसर न दे, अन्नपूर्णा बीच में ही राघे की प्रशंसा के पुल बाँधती हुई बोल उठी कि न जाने लोग कैसे कहते हैं कि राघे बुरा है। तुम्हीं बताओ बीबी कि जबसे ब्याह कर गई आज साल भर हो रहा है तुम्हें क्या तकलीफ मिली उसके घर में? मैं कहती हूँ उसने ब्याह होते ही अपना चोला बदल दिया है।

कमला मौन होकर रह गई और अन्नपूर्णा समझ रही थी कि कमला सर्वथा सुखी है यह मौन उसका प्रतीक है।

१३

समाज में यदि कोई पनपता है तो लोग उसके कारण की खोज पहले करते हैं और इसी प्रकार जब कोई गिरा हुआ उठकर खड़ा होता है तो लोग चौंक जाते हैं कि आखिर इसकी समस्या किस तरह हल हुई ! निर्मला का इलाज चल रहा था। दिवाकर के कपड़े नये बन गये थे, लड़का भी स्कूल जाता अच्छे कपड़ों में तब लोग अन्दाज लगाने लगे कि राधे इमदाद करता होगा दिवाकर की। इस तरह यह चर्चा मुहल्ले भर में सर्वत्र फैल गई।

स्त्रियाँ आपस में काना-फूंसी करके कहतीं कि अरे दिवाकर ने इसीलिये कमला का ब्याह किया है राधे से। वह चरस बेचे अफीम बेचे जरायम का पैसा है तभी तो अनाप-शनाप आता है। अच्छा है दिवाकर की चढ़ बनी चोरों ने बचुका लिया बेगारियों ने छुट्टी पाई। दिवाकर यों ही काहिल था और अब वह कहीं काम ढूंढ़ने भी नहीं जायेगा।

मुहल्ले के पुरुषवर्ग में भी ऐसी ही अफवाहों का बाजार गर्म था। लोग अपनी-अपनी कह रहे थे। और अखिल के कुछ खुशामदी टट्टू उसे उकसा रहे थे कि रुपया वसूल करना है तो दावा करो। मकान नीलाम पर चढ़े तब दिवाकर की आँखें खुलेंगी कि दुनिया कहाँ पर है। ऐसा लगता है कि शायद राधे के साथ वह भी जरायम के काम में शामिल है। सहज ही सेंत में कोई किसीको रुपये नहीं दे देता, जरूर कोई राज

है, जो एक दिन खुलकर रहेगा।

कमला ने मुहल्ले में जब ऐसी चखचख सुनी तो उसे बहुत क्रोध आया पति पर कि वह उससे झूठ बोलता है—कहता है मैं दलाली करता हूँ और बेचता है चरस, अफीम। राम-राम कितना घृणित धंधा है और भइया भी गरीबी से तंग आकर शायद काजल की कोठरी में जा रहे हैं, वे भी बेदाग नहीं रहेंगे अगर उन्होंने अपने बहनोई का साथ दिया।

कमला अब चौकन्नी रहने लगी थी। वह पति के सामने अपने रोष को दबा जाती और अकेले में सोचा करती कि उस दिन वे शराब पीकर आये थे। आये दिन यह हरकत होती है उनके मुँह से बू आती है। यह सब क्या है कुछ समझ में नहीं आता। और भइया के लिये जैसाकि लोग कहते हैं कि वे भी जरायम से रुचि रखते हैं, यह भी सही हो सकता है इस हद तक कि ब्याह को लगभग सालभर हो रहा है इसके पहले उन्होंने मेरे पीहर वालों की मदद क्यों नहीं की ? यह व्यौवहारिकता का तमाशा, मैं चंद महीनों से ही देख रही हूँ। हो सकता है कि लोगों का सोचना सही हो।

कमला ने अपनी मानसिक उलझनों को किसी पर भी व्यक्त नहीं होने दिया। राधे समझता था कि कमला को उससे कोई शिकायत नहीं है। मगर कमला अपने मन में एक बहुत बड़ा सन्ताप लिये बैठी थी। वह मन ही मन घुलती रहती अकेले में ऊब-ऊबकर सांसें लेती। उसकी उलझन एक क्षण के लिये भी विश्राम नहीं लेती थी। वह घोर असंतुलन के बीच आ फिर भी अपने पर संयम पाती। यही उसका नारी-धर्म था। वह धर्म की बुनियाद पर दृढ़ रहना चाहती थी इसीलिये कटुता को जन्म देते उसे भय लगता था। भय, संकोच और लज्जा ही नारी के शृंगार हैं तभी वह भीरु कही जाती है।

किसी दिन राधे चिराग-वत्ती जलते ही घर आ जाता और कभी-कभी आता था देर से। प्रायः नौ-दस बजे तक और विलम्ब हुआ तो

ग्यारह-बारह तक। लेकिन एक रात को दो बज गये और वह घर नहीं आया तो कमला का माथा ठनका। उसे दाल में कुछ काला नजर आने लगा, क्योंकि अपशकुन उसके साथ था। उसकी दाहिनी आँख तेजी के साथ फड़क रही थी।

कमला पति की प्रतीक्षा में रत बैठी थी। उसके मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे कि आखिर क्या बात हुई ? वे अब तक आये क्यों नहीं ? कहीं आज फिर दोस्तों के साथ शराब तो नहीं पीली ? मात्रा अधिक हो जाने के कारण वे बेकाबू हो गये हों, इसीलिये घर न आ सके हों। इसके अतिरिक्त और क्या हो सकता है ? कहीं किसी से झगड़ा तो नहीं हो गया ? या और कोई बात हो गई। पता नहीं इस समय कहाँ हों ? ईश्वर रक्षा करना, उनको सुबुद्धि आये और अपनी राह पर चलें। मुझे पूड़ी-मलाई नहीं चाहिये। मैं नमक रोटी से गुजर कर लूँगी। इज्जत से जीना ही जिन्दगी है, और जग-हँसाई की जिन्दगी-जिन्दगी नहीं नर्क होती है !

कमला जागती रही और रात व्यतीत होती रही। निकटवर्ती कमला टावर की घड़ी में टन-टन तीन बज गये। वह भौचक्की-सी हो कमरे की खिड़की खोल बाहर झाँकने लगी। जाड़े का मौसम था। बाहर खूब तेज सुरसुरी हवा बह रही थी। कमला का कलेजा काँप उठा। उसकी आँखों के सामने पति का चित्र नाचने लगा कि ऐसे जाड़े-पाले में वे न जाने कहाँ होंगे ? देर तक वह खिड़की पर खड़ी रही। फिर आकर बैठ रही और बैठे ही बैठे लेट गई। उसे किसी तरह सन्तोष नहीं हो रहा था। हारे दरजे पर उसने यह निश्चय किया कि अलख सबेरे ही भाई दिवाकर के पास जायेगी। उससे कहेगी। वह उनका पता करेगा और घर आने पर पति को समझायेगी कि रात को घर आने में देर न किया करो। इससे लोग न जाने क्या-क्या अनुमान लगा सकते हैं।

चार का घण्टा बजा। उसके बाद पाँच भी बज गये। कमला ने

खिड़की खोली। नीले आकाश पर रुपहले सितारे अब भी चमचमा रहे थे, पाँच बज गये थे और फिर भी लगता था कि अभी बहुत रात है, हवा अब तो बर्फ जैसी ठण्डी हो गई थी।

कमला खिड़की खोल खड़ी रही। रात बीत रही थी और प्रभात आ रहा था, किन्तु उसके मस्तिष्क में आँधी चल रही थी, तूफान मचल रहा था और बार-बार अस्फुट स्वर में निकल पड़ता कि वे आये नहीं, न जाने कहाँ रह गये। सवेरा होने वाला है, शायद अब आते होंगे !

१४

गगन पर छिटके तारों की ज्योति क्षीण पड़ने लगी। मस्जिद में अजान की आवाज़ सुनाई दी और निकटवर्ती मन्दिरों के घंटे टनटनाकर बज उठे। मुर्गों की बाँग सवेरा होने की सूचना दे रही थी। कमला ने शाल में अपने शरीर को लपेटा और योजना बनाई कि अभी जाकर वह अपने शाइया को पति का पता लगाने के लिये भेजे। वह जाने के निमित्त तैयार हो बाहर के दरवाजे की ओर बढ़ी। अभी उसने कुंडी खोली ही थी कि सहसा तभी किवाड़ों पर दस्तक हुई। उसका हृदय प्रसन्नता से उछलने लगा कि शायद वे आ गये हैं। उसने किवाड़ खोले तो देखा पुलिस के कुछ सिपाही और एक दरोगा सामने खड़ा है। वह एकदम काठ हो गई, उसके मुंह से बोल नहीं निकला।

कमला ने आँखें मूँद लीं और दरोगा उससे कहने लगा राधे रात को पकड़ा गया है, उसके पास काफी तादाद में अफीम बरामद हुई है, मैं तलाशी लूँगा घर की। आप···" "वे रात को पकड़े गये। अफीम कहाँ से आ गई। आप तलाशी लेंगे ?" कमला की मुँदी पलकें एकदम खुल गई। वह अवाक हो दरोगा की ओर देखने लगी।

पुलिस अपना काम सम्पादित करने लगी। घर का एक-एक कोना छान डाला। कहीं उसके मतलब की चीज नहीं मिली। कमला खड़ी थी एक ओर बुत बनी। उसका सिर तेजी के साथ घूम रहा था। और वह अनुभव कर रही थी कि घर में पुलिस ने पैर रखा, ये लक्षण अच्छे

नहीं हैं। लगता है कि अब टेढ़े दिन आ गये तभी वे गिरफ्तार हुये हैं। भगवान लाज रख लेना। इज्जत जाकर फिर नहीं मिलती है और बदनामी सात पुश्त तक पीछा नहीं छोड़ती।

पुलिस तलाशी लेकर चली गई और कमला अब भी किंकर्त्तव्य-विमूढ़-सी खड़ी थी। वह भूल गई अपनी योजना जिसके लिये पीहर जा रही थी। कलेजे पर पत्थर रख, मन मसोसकर वह वहीं बैठ गई।

अब सबेरा खूब खुलकर हो गया। बाहर के किवाड़े खुले पड़े थे और कमला इतनी ठण्ड में आँगन में बैठी थी। उसका शाल फर्श पर पड़ा था और वह विक्षिप्ता की भाँति न जाने क्या-क्या सोच रही थी। वह मन ही मन भविष्य की कार्य प्रणाली पर विचार कर रही थी कि जरायम करने से कोई फायदा नहीं बदनामी भी होती है और आदमी को छूत खा जाती है। वे अगर कोई उद्योग करके कमा नहीं सकते तो मुझे मैदान में आना पड़ेगा। देश भर में हाथ करघा उद्योग का तेज़ी के साथ प्रचार हो रहा है। मैंने भी स्कूल में इसकी शिक्षा पाई है। मैं घर में करघा लगाऊँगी, मेहनत करके बुनाई करूँगी, उससे चाहे मुझे आधी ही रोटी मिले मैं सन्तोष करूँगी, मगर ऐसा सोना नहीं पहनूँगी जिससे कान ही फट जायें। मेरी कई सहेलियाँ दरियाँ, कालीन, गलीचे और पलँग तथा मेजपोश आदि खूब सुन्दर बुन लेती हैं। मैं उनका सहयोग लूँगी और छूटा हुआ अभ्यास एक दिन रियाज बन जायेगा। पुरानी कहावत है कि चढ़ी रियाज पर काम खूब होता है।

कमला बैठी अपने विचारों में खो रही थी। सहसा वह चौंक कर सामने देखने लगी। दिवाकर खड़ा कह रहा था—"कमला, लाओ मुझे कुछ रुपये दो, राधे को पुलिस ने जबरदस्ती हवालात में बन्द कर रखा है, अभी छुड़ाकर लाता हूँ मैं।"

कमला के तेवर चढ़े। वह उठकर खड़ी हो गई और तेज गले से कहने लगी—"चले जाओ भइया यहाँ से, मैं कुछ भी नहीं सुनना चाहती हूँ, पुलिस वालों का माथा खराब नहीं था जो उनको बन्द कर दिया।

मुझसे पूछो, मैं बताती हूँ, आपके बहनोई साहब अफीम सहित गिरफ्तार हुए हैं। अलख सुबह घर पर पुलिस आई थी, तलाशी लेकर चली गई। और आप मुझे बताते हैं कि पुलिस ने उन्हें जबरदस्ती बन्द कर दिया, जो आग खायेगा वह अंगार जरूर उगलेगा। जमानत की कोई जरूरत नहीं, पाप का कुछ तो प्रायश्चित होना चाहिये।"

दिवाकर के काटो तो बदन में लोहू नहीं। वह नहीं जानता था कि कमला समय से पहले ही आगाह हो चुकी है। कई क्षण तक मौन रहने के बाद वह धीरे-धीरे फिर बोला—"समय खराब न करो कमला, जल्दी से रुपये दो। नहीं तो कहीं चालान जेल भेज दिया गया तो फिर जमानत कचहरी से ही हो सकेगी।"

कमला अब और भी अधिक उग्र हो उठी। वह तेजी के साथ बोली "मैं नहीं दूँगी रुपये, करनी का फल तो मिलना ही चाहिये, वह चाहे कोई भी बसर हो। मुझे मजबूर न करो भइया।"

दिवाकर देर तक बहन को समझाता रहा, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला। कमला का क्रोध बढ़ता ही गया वह घटा नहीं, तब हार मान-कर दिवाकर वहाँ से चला गया। और कमला पुनः विचार सागर में गोते लगाने लगी। इस समय वह इतने क्रोध में थी कि आवेश के कारण उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकल रही थीं। चेहरा तमतमा रहा था और सारे शरीर में एक विचित्र प्रकार का कम्पन होने लगा था।

धूप छज्जे से उतर कर अब दीवालों पर लोट रही थी। आँगन में गौरैय्याँ फुदक रही थीं और कमला को लग रहा था, जैसे सारा घर घूम रहा है। वह इस समय अपने आपे में नहीं थी।

१५

पूरा दिन बीत गया। तीसरा पहर होने को आ गया; लेकिन कमला अपने स्थान से हिली-डुली तक नहीं। दूधवाला दूध रखकर चला गया। उसने उस ओर ध्यान भी नहीं दिया। बिल्ली आकर सबका सब दूध चट कर गई इसका भी उसे बोध नहीं हुआ।

दिवाकर ने अन्नपूर्णा को कुछ भी नहीं बतलाया था कि राधे गिरफ्तार हो गया है। दोपहर के समय उसने चखचख सुनी कि सवेरे राधे के घर पुलिस आई थी। वह तलाशी लेकर चली गई। राधे रात को ही पकड़ा गया था। अब तक उसकी जमानत नहीं हुई। इधर दिवाकर भी निकला था सूरज निकलने से पहले और अब तक लौटकर नहीं आया था। अन्नपूर्णा समझ गई कि शायद अभी उसके पति को कुछ भी नहीं मालूम है। चादर ओढ़ वह कमला के घर पहुँची। उसे देखते ही कमला फूट-फूटकर रोने लगी। अन्नपूर्णा ने उसके आंसू पोंछे और सान्त्वना देती हुई कहने लगी—"रोती क्यों हो कमला? राधे की जमानत हो जायेगी, तुम्हारे भइया घर आयें मैं उन्हें वैसे ही भेजूँगी।"

कमला तब वास्तविकता को स्पष्ट करके कहने लगी—"सवेरे ही भइया आये थे भाभी, मैंने गुस्से में उन्हें न जाने क्या-क्या कह डाला जो मुझे नहीं कहना चाहिये था आखिर करती भी क्या? मैं बहुत झुँझलाई हुई थी। वे जमानत के लिये रुपये माँगते थे। लेकिन मैं इस पक्ष में नहीं

हूँ कि अपराधी की सहायता की जाये। गुनहगार को उसके गुनाहों की सजा जरूर मिलनी चाहिये। मैं सिद्धान्तों की कायल हूँ; पति हो, पुत्र हो अथवा बाप सिद्धान्तों की लड़ाई मैं सबसे लड़ूँगी, जिसका कोई सिद्धान्त नहीं उसे इन्सान कहना सबसे बड़ी भूल है।''

अन्नपूर्णा के कान खड़े हो गये, आँखें फैलकर रह गई और वह भौंचक्की-सी हो कमला की ओर देखती हुई कहने लगी—''यह तुम क्या कह रही हो बीबी ? राधे की जमानत जल्दी से जल्दी होनी चाहिये। इतनी कठोर न बनो, बिगड़े आचरण सुधर जाते हैं; लेकिन अगर पति-पत्नी के बीच तनिक भी तनाव आया, तो जीवन भर वे दाम्पत्य सुख से वंचित रहते हैं। रोज घर में कलह होती है, पास-पड़ोस वाले भी दोनों की निंदा करने लगते हैं। पागलपन न करो, तुम्हारे भइया आ जायें, उनको फौरन ही भेजती हूँ मैं। अभी जमानत करवाकर आते है, तुमसे कोरा जवाब पाकर वे कहीं भटक रहे होंगे। साँझ होने जा रही है, कहीं ऐसा न हो कि देर हो जाने से आज का काम कल के लिये सरक जाय। ऐसी हालत में खर्चा भी बहुत होगा और हैरानी उल्टी बढ़ जायेगी।''

कमला भाभी की बातों की ओर ध्यान न देकर अपनी बात कहने लगी। वह बोली—''भाभी, अच्छा मुकद्दर था मेरा, अच्छे संस्कार, तभी इस घर में आई तुमने कितना जोर दिया, इसके पीछे तुम्हारा भइया से वाद-विवाद भी हुआ; लेकिन होनहार होकर ही रहा। मैं ऐसे पति की पत्नी हूँ जो समाज में बदनाम है, जिसकी जिन्दगी का हर पहलू काला है कोयले की तरह। संसार ने मुझे खूब ठगा भाभी कैसे कहूँ कि मैं जमानत के पक्ष में नहीं हूँ।''

यह समय व्यर्थ की बातों में व्यतीत करने का नहीं था। अन्नपूर्णा ने कमला को एक मीठी झिड़की दी। वह उसको थोड़ा-सा डाँटकर बोली—''बीबी, इन फिजूल की बातों से कोई फायदा नहीं, बनने की सोचो, बिगाड़ने की नहीं। दुनिया बड़ी बेरहम है, कोई किसी का साथ नहीं देता। राधे से ही तुम्हारी जिन्दगी पार होगी मेरी बात गाँठ बाँध

लो, उसी पर चलना। इस सीख को कभी मत भूलना कि आदमी और स्त्री दोनों के बीच का मनमुटाव, जब एक भेद बनकर घर के बाहर निकलता है तो उस घर की हालत पतली हो जाती है बात बाहर फैल जाती है और निर्दयी दुनिया वालों को हँसने तथा खिल्ली उड़ाने का मौका मिलता है। अभी मैं जाती हूँ और पप्पू को भेजकर तुम्हारे भइया का पता करवाती हूँ वे आयें; क्योंकि जमानत वाला काम जल्दी ही होना चाहिये।"

इसके बाद अन्नपूर्णा यहाँ अधिक देर नहीं ठहरी। वह उठकर चल दी और कमला आश्चर्य से चौंककर रह गई कि भाभी ने कहीं पर भी यह जिक्र नहीं किया कि आखिर जमानत के लिये रुपये का प्रबन्ध कहाँ से होगा।

किन्तु कमला यह नहीं जानती थी कि स्त्री का स्वाभिमान ही उसकी सत्ता है और जहाँ उसके पति की जबान खाली गई हो वहाँ वह सबसे पहले विवेक से काम लेगी झुकेगी नहीं अपने पर दृढ़ रहेगी। अन्नपूर्णा की भी यही स्थिति थी। उसने जान-बूझकर रुपयों वाला प्रसंग नहीं चलाया। घर आकर उसने सोच लिया था कि वह गृहस्थी के बर्तन बेच देगी और राधे की जमानत करवायेगी। उसका भी अपना एक सिद्धान्त था जो मुसीबत में अपना साथ दे उसके एहसान को कभी नहीं भूलना चाहिये। उसने सहायता करने के लिये अपना पसीना गिराया था अवसर आने पर अगर जरूरत पड़ जाय तो उसके लिये खून बहा देना ही सच्ची इन्सानियत है। बदला हर काम का मिलता है चाहे वह भला हो या बुरा। कोशिश करने से बड़ी-बड़ी समस्यायें हल हो जाती हैं, यह तो एक छोटा-सा मसला है।

अन्नपूर्णा ने पप्पू को यह कहकर घर से बाहर भेज दिया कि जाओ देखो, इधर-उधर थोड़ी दूर तक देख आओ अगर पापा कहीं मिल जाँय, तो उनको बुला लाओ कहना माँ बुला रही हैं बहुत जरूरी काम है।

पप्पू चला गया और अन्नपूर्णा सोचने लगी कि आखिर जिसका मुझे

डर था वही हुआ। राधे ने अपनी आदतें नहीं छोड़ीं। उसने केंचुल पहनने की कोशिश की, लेकिन वह फट गई परिणाम सामने आ गया, इस समय वह हवालात में है। कैसे कहता था कि मैं अब दलाली करने लगा हूँ। झूठ आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन है. इससे हर एक को बचना चाहिये, क्योंकि एक झूठ छिपाने के लिये सौ झूठ बोलनी पड़ती है। राधे अगर कुमार्ग पर न चलता होता तो उसकी प्रतिष्ठा में बट्टा क्यों लगता ?

इस तरह अन्नपूर्णा विचारों में खोई खिन्न मन बैठी थी। दिन का प्रकाश अब अँधेरे के रूप में परिणत होने लगा था। बीच-बीच जब वह थोड़ी-सी साँस लेती तो ख्याल आ जाता कि अरे अभी पप्पू नहीं आया बहुत देर हो गई। ऐसी स्थिति में कभी-कभी वह बाहर चौखट पर जाकर झाँकने लगती थी।

१६

हर वर्ग की अपनी एक अलग जमात होती है उस जमात को ही समुदाय कहते हैं और उसी को संस्था। यों तो समाज स्वयं ही एक बहुत बड़ा संस्था है, किन्तु उसकी साखें जब गुटबन्दी को जन्म देती हैं, तो अच्छाई अपनी जगह रह जाती है और बुराई विकृत बन इधर-उधर भटकने लगती है। राधे का वर्ग उससे विशेष सहानुभूति रखता था उसके सभी साथी प्रायः उससे खुश ही रहते; क्योंकि वह सबके काम आता था। अवैधानिकवृत्ति के अलावा वह करीब-करीब दुरुस्त था और अपने वर्ग में अक्सर यह प्रसंग छेड़कर बैठ जाता कि यह पाप का पेड़ फल दे रहा है इसका भरोसा नहीं, दुनिया पुण्य को ही महत्व देती है। मुझे तो कहीं भी कोई सिलसिला मिल जाय मैं इस धंधे को छोड़ दूंगा। क्योंकि इसमें एक मिनट के लिये भी शान्ति नहीं मिलती हमेशा, उलझन ही बनी रहती है।

इसी बुनियाद पर राधे के साथी पीठ पीछे उसकी तारीफ करते थे। उनको जब पता चला कि राधे हवालात में बन्द है तो उस दिन उन लोगों ने काफी दौड़-धूप की, लेकिन जमानत नहीं हो सकी। दूसरे दिन जमानत मंजूर हो गई, परवाना बन गया और संध्या होते-होते राधे छूटकर घर आ गया। आने के पहले वह सुन चुका था कि पुलिस घर में भी आई थी। वह समझ गया कि अब सारा भंडाफोड़ हो गया है।

कमला सब कुछ जान गई होगी, आखिर अब मैं उसके सामने कौन-सा बहाना करूँगा।

कमला ने पति से बात भी नहीं की। वह मौन रही और गृहस्थी के कामों में लगी रही। राधे को उसका यह रुखा व्यवहार बहुत खला। वह चिढ़कर कहने लगा—"क्या बात है कमला? तुम खामोश क्यों हो?"

कमला जैसे उसके इस प्रश्न का खरा जवाब देने के लिये तैयार बैठी थी। वह बोली—"इसलिये जिसमें कहीं तुम्हें अपनी सफाई न देनी पड़े। पुरुष घर के बाहर निकलता है इसलिये वह बहुत समझदार होता है और स्त्री रहती है घर की चहारदिवारी में कैद तुम्हारे हिसाब से उसकी बुद्धि कुन्द होती है।"

राधे समझ गया कि परिस्थिति गम्भीर है, कमला को असलियत का पता लग गया है तभी वह भरी बैठी है। उसने उलझना ठीक नहीं समझा।

रात मौन के बीच व्यतीत हो गई। सबेरे कमला ने भोजन बनाया और थाली परोसकर रख दी। राधे रूठा रहा और वह चौके में नहीं आया। तब कमला ने अपना मौन तोड़ा और वह उसके पास जा, धीरे-धीरे कहने लगी—"चलो खाना खाओ, अन्न ने क्या बिगाड़ा है जो उसकी उपेक्षा कर रहे हो? क्रोध दूसरे पर नहीं, आदमी को सबसे पहले अपने ऊपर करना चाहिये। मैंने कोई अपराध नहीं किया, मैं कसूरवार नहीं हूँ।"

"हाँ, ठीक कहती हो तुम, कसूरवार तो मैं हूँ, मेरी चादर काली है। मैंने तुमको मिथ्या का दर्पण दिखलाया तभी तुम असन्तुष्ट हो, लेकिन कमला, क्या स्त्री का यह धर्म नहीं होता कि आपत्तिकाल में वह पति की मदद करे, उसका साथ दे। तुम जमानत के लिये अपने भाई को नहीं भेज सकती थीं? मैं जानता हूँ, रिश्तेदार लोग फायदा उठाना खूब जानते हैं, काम आना नहीं। बोलो जवाब दो तुम अपने फर्ज से चूकीं या नहीं?"

पति की ये बातें सुन कमला छूटते ही बोल उठी—"हरगिज नहीं, मैं अपनी जगह पर कायम हूँ, मैं पाप को फलने-फूलने नहीं देना चाहती। इसीलिये जमानत करवाने की जरूरत नहीं समझी। भइया को दोष बेकार देते हो, वे मेरे पास आये थे और जमानत के लिये रुपये मांगते थे, न देने पर, वे भी असन्तुष्ट होकर चले गये। उनका यों ही गिरा हाल है, रुपये का प्रबन्ध कर सकना, उनके लिये टेढ़ी खीर है। मैंने क्रोधावेश में उनको न जाने कितनी बातें कह डालीं। उनके लिये तो यही समझ लो कि मजबूरी थी।"

"अब समझा कमला कि तुम्हारा गुस्सा साधारण नहीं एक भयंकर तूफान है, गलती मेरी है। इसलिये तर्क नहीं करूँगा।" यह कहकर राघे घर से बाहर जाने के लिये उद्यत हुआ।

कमला रास्ते में व्याघात बनकर खड़ी हो गई और उसकी गति में बाधा देकर बोली—"जाते कहाँ हो, खाना खाओ, चलो।"

लेकिन राधे इस स्थिति में भी दो चार कदम आगे बढ़ गया तब कमला की मुद्रा मलिन हो गई और वह रोनी सी सूरत बना लम्बे स्वर में कहने लगी—"चलो, रसोई में चलो तुम्हें मेरी सौगंध है, जिन्दा रहने के लिये पेट भरना जरूरी है भूखे न जाओ घर के बाहर, चलो।"

राधे पीछे मुड़ा। कमला ने उसे शपथ के बन्धन में बांध लिया था। वह लौट पड़ा और तनिक देर में ही वहाँ का वातावरण मुखरित हो उठा। राधे बैठा भोजन कर रहा था। कमला हँस-हँसकर उससे बातें कर रही थी। वह कह रही थी—"देखो, मेरी बातों को बुरा न मानो मैं तुम्हारे अच्छे के लिये ही कहती हूँ, जो कुछ हुआ या अब तक तुम जो करते रहे वह छोड़ो उसको भूल जाओ जितना चल आये हो बस वहीं से मुड़ जाओ, उस रास्ते को छोड़ दो। इसी में गति है हम दोनों की। मैं नहीं चाहती कि बदनामी के नित्य नये धब्बे तुम्हारे चरित्र पर लगते रहें। मैं नहीं सुन पाऊँगी तुम्हारी निन्दा मेरे कान फूट जायेंगे। मेरे पास जो गहने हैं उन्हें बेचकर कोई भी छोटा-मोटा धंधाकर लो, जिसमें तुम्हारा

मन भरे। क्या रखा है इस गैर कानूनी धंधे में जिसे देखो वही मुँह बिचकाता है।"

इस तरह कमला पति को अपने मन की बातें बतलाती रही, वह ध्यानपूर्वक सुनता रहा और मन ही मन अपने भाग्य की विडम्बना पर रोता रहा कि उसे पति कहलाने का जो अधिकार मिला है सो दैव दुर्विपाक उसके पीछे हाथ धोकर पड़ा है। कहीं ऐसा न हो कि यह अधिकार उससे छिन जाय और गम मेरी कमला का ग्राहक बन जाय। मुझे सुधरना चाहिये, कमला की बातों में कितनी जान है वह मेरे हित के लिये ही कह रही है। काश! ईश्वर मुझे इतना सहारा दे कि मैं उसकी यह इच्छा जरूर पूरी कर सकूँ।

भोजन कर कपड़े बदल राधे जब घर से जाने लगा तो कमला ने चाँदी के वर्क लगे पान के दो बीड़े उसके सामने ला प्रस्तुत किये और मुस्कराकर धीरे से उसकी ओर बढ़ा दिये। राधे ने मन्द-मन्द मुस्कराहट के साथ पानों की गिलौरियाँ मुँह में दाब लीं और दांतों के बीच उनको कुचरता हुआ, घर से बाहर निकल गया।

१७

निर्मला अब बहुत क्षीण तथा दुर्बल हो गई थी। इधर बीच में उसके उपचार में शिथिलता आ गई, क्योंकि राघे अपने चक्कर में था। लम्बा नुकसान हो गया उसका हाथ इस समय तंग था खैराती अस्पताल का इलाज हो रहा था। उसके शरीर में अब कुछ शेष नहीं बचा था केवल मात्र पीत-वदना खाल में लिपटा हड्डियों का एक कंकाल था। उस बालिका की यह हालत देखकर आँखों में आँसू आ जाते थे। निर्धनता के साथ दरिद्रता का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। अर्थाभाव बड़े-बड़े परिवारों को निगल जाता है, अजगर की भाँति गरीबी की मार बहुत बुरी होती है। दिवाकर और अन्नपूर्णा एक दिन छाती पीटकर रह गए और रो धोकर बैठ रहे। निर्मला जैसे मर नहीं तर गई थी। उसे इतना अधिक कष्ट था, जिसकी कोई सीमा नहीं थी। उसकी मृत्यु से घर में मातम छा गया। दिवाकर को ऐसा लग रहा था कि अभी और कुछ देखना बदा है उसको। तभी दैवी प्रकोप उस पर अचानक ही आकर बरस पड़ा। उसे दुख था तो इस बात का कि वह एक समर्थ बाप नहीं था तभी अपनी औलाद को मौत के मुँह में जाने से नहीं बचा सका।

निर्मला की मृत्यु पर कमला पीहर आई कई दिन तक रही। क्योंकि अन्नपूर्णा की हालत इस समय दयनीय थी। पाली-पोसी लड़की धरती से उठ गई इसकी उसे समाई नहीं हो रही थी। दुख आँसू बन अहर्निशि

आँखों की राह प्रवाहित होता रहता, आँखें एकदम सूज गई थीं वे लाल हो गई थीं।

राधे ने भी काफी हमदर्दी दिखलाई। वह अक्सर अन्नपूर्णा और दिवाकर को समझाता रहता था। उसको स्वयं भी निर्मला की कारुणिक मृत्यु पर बहुत अफसोस था।

इस तरह दुख का दरिया अबाध रूप से बह रहा था, अन्नपूर्णा और दिवाकर उसमें बहे चले जा रहे थे। राधे और कमला नदी के दो पाट बन गये, वे बहते हुए दम्पति को अपनी बाहों में समेट लेना चाहते थे। किन्तु समय और परिस्थितियों का नाटक धरा के विशाल मंच पर दिन-रात चलता रहता है, एक क्षण के लिए भी नहीं रुकता। योग और सह-योग सहानुभूति से साक्षात् करना चाहते थे; मगर भाग्य की विडम्बनाएं बीच में कुहासा बन किरणों को आच्छादित कर रही थीं तभी तबाही और बरबादी उस परिवार का पीछा नहीं छोड़ रही थी।

दिवाकर ने डेढ़ सौ रुपए कमला के विवाह में जो ऋण लिया था, उसका उस पर दावा हो गया। यह पता चलते ही अखिल भी सतर्क हो गया। उसने दिवाकर को बुलाकर उससे तगादा किया, दिवाकर ने अपनी मजबूरी दिखलाई। इस समय फिलहाल अभी कुछ महीनों के लिए उसे दो ट्यूशन मिल गए थे दस-दस रुपए के। वही अल्प धन पूरे परि-वार की जीविका का साधन था। तब अखिल को मौका मिल गया। उसने भी उस पर दावा दायर कर दिया।

अब दिवाकर को लगा जैसे उसकी कमर टूट गई हो, वह इस कदर घबड़ा गया कि उसे अपने पर संयम पाना कठिन हो गया।

इधर राधे को भी पैसे की जरूरत थी और पत्नी का मन रखने के लिए वह जरायम से भी दूर रहना चाहता था, किन्तु परिस्थितियाँ झकझोर रही थीं उसे विवश कर रही थीं कि वह मोरी का कीड़ा है, उससे बाहर नहीं निकल सकता।

प्रयत्न विफलता की ओर अग्रसर हो रहे थे। दिवाकर के आगे अँधेरा छा रहा था कि वह कर्जा कैसे अदा करेगा। न जाने क्या होने वाला है—पता नहीं यह गर्दिश की मंज़िल कितनी लम्बी है! मैं तो हार गया, अपने साहस से नहीं अपनी जिन्दगी से और मुझे लगता है कि शायद मैं भटकने के लिए ही पैदा हुआ था।

अन्नपूर्णा की स्थिति पति से भी अधिक चिन्त्य थी। उसकी चिंताओं का कोई ओर-छोर नहीं था। उसे अब यह आभास हो रहा था कि शायद उसके घर की हालत कभी नहीं सुधरेगी। देहाती कहावत मेरे घर में चरितार्थ हो रही है कि रस्सी जितनी बटती जाती है पड़वा उतनी ही चबाता जाता है। पानी से भी पतली परिस्थिति हो गई है इस घर की। हवेली की जब एक ईंट खिसकने लगती है तो लोग कहते हैं कि हवेली गिरने वाली है। इसके दिन आ गए, यह जल्दी ही ढह जाएगी। ऐसी बातें होती थीं मुहल्ले के बड़े-बूढ़ों के बीच। लोग कहते थे कि दिवाकर रुपया कहाँ से भरेगा। देख लेना एक दिन मकान की बोलियाँ लगेंगी, वह नीलाम पर चढ़ेगा। बैठे-बैठे खाने का यही नतीजा होता है।

दिवाकर को किसी की भी बातें सुनने का अवकाश नहीं था। वह स्वयं ही अपनी समस्या पर इतना अधिक सोचने में व्यस्त था कि दिन तो दिन रातों को भी उसकी नींद हराम हो जाती थी। वह अखिल से कई बार मिला और कहा कि वह कम से कम उसे छः महीने की मोहलत और दे दे, इस बीच उसका कहीं कुछ सिलसिला बनेगा ही। फिर प्रति-मास जितना उससे हो सकेगा देता रहेगा। लेकिन अखिल नहीं माना, उसने अपनी कार्यवाही चालू रखी और दिवाकर से यह कहकर उसे स्वयं ही लज्जित कर दिया कि न जाने कब बाबा मरेंगे और कब बैल बिकेंगे; मैं कब तक राह देखूँगा तुम्हारी? आज तक तुमने मुझे एक कौड़ी भी नहीं दी, ब्याज तो ब्याज मूल भी खटाई में पड़ गया। न जाने कितने वायदे किए तुमने, मगर एक भी पूरा नहीं हुआ। मुझे भरोसा

नहीं होता कि तुम कुछ दे पाओगे, क्योंकि तुम खुद ही परेशान हो।

दिवाकर के हाथ-पैर फूल गए। उसका दम घुटने लगा, जैसे कलेजे में किसी ने चुटकी काट ली हो और उसके अन्तरिक्ष के तार झनझना कर बज उठे। उनसे आवाज़ निकली कि निर्धनता जिन्दगी का अभिशाप है। आज के जमाने में पैसा माई-बाप है, उसके सामने व्यवहार कोई चीज नहीं।

१९

चोर, चोर, चोर का हल्ला दुनिया बड़ी जल्दी मचाने लगती है; लेकिन उस चोर के मर्म को कभी नहीं समझ पाती कि आखिर वह चोर क्यों बना ? चोरी की ही वृत्ति पर उसे सन्तोष मिल गया ऐसा क्यों ? वह चोरी ही क्यों करता है सीनाजोरी भी तो कर सकता है; लेकिन जिधर मजबूरी होती है वहाँ प्रवृति न होते हुए भी इन्सान को झुकना पड़ता है। जैसे वेश्या चाहे कि पाक-दामन बनकर वह हमारी बधू-बधूटियों के बीच अन्त:पुरों की शोभा बने तो वह ऐसा नहीं कर सकती। समाज उसे कभी स्वीकार नहीं करेगा। दुनिया की रीति ऐसी है कि बुराई करने वाले को बुरा बनकर रहने के लिए विवश और लाचार कर दिया जाता है। यही कारण है कि एक बार जेल की चहार-दीवारी में पहुँच जाने के बाद आदमी निडर हो जाता है और वह बार-बार जेल जाता है। राधे को अब जब कि अपनी वृति से स्वयं ही घृणा हो रही थी, बुरी तरह मजबूर था; क्योंकि उसे स्वयं अपनी गृहस्थी चलानी मुश्किल मालूम हो रही थी। कमला के पास पूँजी स्वरूप जितने भी रुपए थे उसने धीरे-धीरे करके पति को दे दिए। इसमें उसको महान सन्तोष मिलता था कि उसका पति प्रायश्चित कर रहा है। वह एक दिन अच्छा आदमी बनकर रहेगा। किन्तु जब घर में एक भी रुपया नहीं रहा तो राधे बहुत घबड़ाया। कमला ने कहा कि वह उसके गहने ले जाये उनको बेच दे और घर में बैठक वाले कमरे में परचून की दूकान

खोल दे उससे खानेभर को तो मिलेगा ही ।

लेकिन राधे ने यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि जो गहने उसने कमला के पहनने के लिए बनवाए थे वे एक दिन उसी को बेचने पड़ेंगे । वह विवश हो गया और बोला—"नहीं कमला ऐसा नहीं, मैं तुम्हारे गहने नहीं बेचूँगा, बेकारी से बेगार भली, धंधा मिलेगा कैसे नहीं ? मैं कहता हूँ कि मिलकर रहेगा ।"

पति की ऐसी बातें सुनकर कमला विजय गर्व से पुलक उठती कि उसके पति में एक भी दुर्गुण नहीं है । वह बहुत ही समझदार है, लोग उसे व्यर्थ ही बदनाम करते हैं ।

स्त्री निर्भर होती है पुरुष पर इसीलिए पत्नी का पति अभिभावक कहा जाता है और आदमी की ताकत है पैसा उसके बिना वह अपने को जीवन-मृत समझने लगता है । राधे भी आजकल ऐसी ही परिस्थितियों से गुजर रहा था । उसे कमला के सामने जाने में शर्म लगती थी । कहाँ कितना सुनहला और रंगीन जीवन बिताया उसने और कहाँ पत्नी की सीख मानकर आज इस हद को पहुँच गया था कि उसकी जेब में एक पैसा भी नहीं था । वह चाहता था कि जब घर जाय तो मुस्कराता हुआ लेकिन ऐसा तभी सम्भव हो सकता था, जब कि उसकी जेबें भरी हुई हों ।

नौकरी के चक्कर में भटकते-भटकते राधे ने बहुत दिन बिता दिए परिणाम कुछ नहीं निकला, मिली कोरी असफलता, जो आत्मा पर हथौड़ा बन प्रहार करने लगी और वह मन ही मन बिलबिलाकर रह गया । अन्त में एक दिन वह अपने पुराने साथियों के बीच में पहुँचा, उनके काम में हाथ बटाया और पूरा-पूरा सहयोग दिया । उस दिन कुछ रुपए उसको मिले वह लेकर घर आया और कमला रुपयों के विषय में कुछ पूछे, इसके पहले ही कहने लगा—"दलाली भी अजीब धंधा है, आज मुद्दत बाद ये ग्यारह रुपए देखने को मिले, नौकरी-चाकरी तो मिलने से रही । इसीलिए मैं आज सराफे में ही डटा रहा, भगवान ने सुन ली,

देखो कल क्या होता है ?"

राधे के कथन में इतनी स्वाभाविकता थी कि कमला उसके प्रति सहानुभूति से भर आई। वह कहने लगी—"चलो, बड़ा अच्छा हुआ, दलाली में मन लगता है तो वही करो, धीरे-धीरे कोई भी काम हो, उसका सिलसिला बन जाता है। जब तुमने अच्छी राह पर चलने के लिए कमर बाँध ली है तो देख लेना ईश्वर हर कदम पर तुम्हारे साथ रहेगा और तुम्हें अपने काम में खूब सफलता मिलेगी।"

वह रात दम्पति ने हँसी-खुशी के व्यापार में व्यतीत की। दोनों जब तक निद्रादेवी की गोद में नहीं चले गए परस्पर भविष्य की योजनाएँ बनाते रहे।

कल्पना स्वप्न में साकार हो उठी और कमला ने देखा कि वह नीचे से ऊपर तक सोने के गहनों से लद रही है, उसकी माँग का सिन्दूर अपने में आशातीत निखार पा रहा है। उसके घर में चारों ओर नौबतें बज रही हैं और राधे भी बेशकीमती कपड़ों में इतना सुन्दर लगता है, मानों कोई युवराज हो।

ऐसे ही सपनों के सागर में तैर रहा था राधे। दम्पति उस सागर में डुबकियाँ लगा रहे थे। वे परस्पर जल-क्रीड़ा का आनन्द लेने में मगन थे।

यह स्थिति थी उस घर की जिसकी बुनियादों में पानी भर गया था और गृहस्वामिनी समझ रही थी कि उसका घर सुदृढ़ है। उसकी अभी हाल में ही और पुष्टि हो गई कि वह कभी नहीं ढहेगा !

१९

कोई उजड़ रहा था, कोई बस रहा था, कोई जी रहा था और कोई मर रहा था। दिवाकर अपनी पतली परिस्थिति पर खून के आँसुओं रो रहा था। उसके हृदय में घाव हो गये थे, एक नहीं अनेकों। उसका मर्म उसे शूल की भाँति बेध रहा था। अन्तर की पीड़ा असह्य थी अतः मनः-ताप बहुत बढ़ गया था। अखिल ने उस पर दावा पहले ही कर दिया था। दीवानी के मुकदमों में अक्सर बहुत देर लग जाती है। इसलिए अभी दावे वाला कार्यक्रम चल रहा था, फैसला नहीं सुनाया गया था।

कमला के विवाह में लिये हुये रुपयों वाला मुकदमा भी चल रहा था दिवाकर पर सिविल अदालत में। उसके लिये उसको पहले से ही आशंका थी कि हर्जे-खर्चे की भी डिग्री साथ में होगी, ऐसा मालूम होता है। इस तरह इन दोनों मुकदमों के परिणाम की कल्पना कर दिवाकर भीतर ही भीतर काँप उठता था। वह इस सम्बन्ध में कभी एक शब्द अन्नपूर्णा से भी नहीं कह पाता। चिन्ता की चिता पर उसका जीवित शव जल रहा था और दुनिया वाले देख रहे थे कि वह अभी जिन्दा है।

दैवयोग और दैव दुर्विपाक को कहीं लेने नहीं जाना पड़ता है। उन का आगमन अचानक होता है कभी तो आदमी थर्रा जाता है और दैवी आतंक उसकी प्रज्ञा ही नष्ट कर देता है और कभी कभी आकस्मिक संयोग पा मनुष्य मुस्कराने लगता है। उस समय वह दैवयोग की सराहना करते

नहीं थकता। किन्तु दिवाकर के जीवन से हँसी का लोप हो चुका था, रुदन भी प्राय: उससे रूठा ही रूठा रहता। चिन्तन ने घना सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। वह दैवी आपत्तियों के मुँह में आते-आते दुख सहने के लिए पत्थर बन गया था; फिर भी उस पर बिजली टूट पड़ी और वज्रपात हो गया। मकान का पीछे वाला आधा हिस्सा तो गत दो वर्ष पहले ही गिर चुका था। इस बरसात में बैठ गया मकान का दूसरा कोना भी। केवल एक ओर के दो-एक कमरे रह गये। दिवाकर इससे बहुत घबड़ा गया और सोचने लगा कि घर का कहीं रहा-सहा हिस्सा भी न गिर जाय, बड़ी दिक्कत होगी बच्चों को लेकर मैं कहाँ भटकता फिरूँगा ?

लेकिन मकान का बाकी हिस्सा गिरा तो नहीं बरसात निकलते ही एक दिन वह नीलाम पर चढ़ गया। दिवाकर के दरवाजे पर डुगडुगी बज रही थी। एक बहुत बड़ा हजूम नजर आ रहा था। भीड़ बहुत थी; लेकिन कोलाहल सीमित। बोलियाँ लग रही थीं, खरीदारों में होड़ का बाजार गर्म था। म्युनिसिपल अधिकारी और चपरासी बाहर भीड़ के बीच में खड़े थे। दिवाकर उस समय अपने कमरे में बैठा था चारपाई पर, गहन चिन्ता में डूबा हुआ। उसकी दोनों कुहनियाँ घुटनों पर थीं और हथेलियाँ गालों पर टिक रही थीं। बाहर लोगों की आवाजें बुजन्द हो रही थीं। नीलाम पर खड़ा हुआ आदमी उच्च स्वर में चिल्ला रहा था। वह बारबार दुहरा रहा था—"पाँच सौ, हाँ और बोलो ! अरे इस घर की कीमत पाँच सौ रुपये यह तो बहुत थोड़ी है और बोलो पाँच सौ, पाँच···"

दूसरी आवाज एक ओर से गूँज उठी पाँच सौ पच्चीस और फौरन ही उसकी बात कट गई, क्योंकि एक और बोली लग गई थी पाँच सौ पचास।

दिवाकर बैठा यह सब सुन रहा था। अन्नपूर्णा बाहर के किवाड़े

अन्दर से भेड़, दराजों से झाँक रही थी। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे और बार-बार वह सुबक-सुबक उठती थी।

पप्पू बाहर खड़ा था भीड़ में वह भी कुछ उदास था और यह समझ रहा था कि उसका मकान बेचा जा रहा है।

दिवाकर का मकान नीलाम हो रहा था। राधे आज सबेरे ही घर से निकल गया था। कमला को पता चला तो वह भागी हुई आई। अपनी मर्जी से ही वह अपने गहने ले आई थी। वह सीधा दिवाकर के पास पहुँची और रोकर बोली—"भइया, ये लो!" और यह कहने के साथ उसने गहनों की पोटली भाई के सामने रख दी और आँसू बहाती हुई आर्द्र कण्ठ से कहने लगी—"गहना-गुरिया गाढ़ के समय ही काम आता है भइया, इन्हें बेच दो और कर्ज वालों का रुपया चुका दो। जिस घर में पैदा हुई और जहाँ खेल-कूदकर इतनी बड़ी हुई वह घर आज नीलाम हो रहा है, यह नहीं देख सकती मैं भइया!"

कमला बिलख-बिलख कर रो रही थी और वहाँ आ गई अन्नपूर्णा। उसकी आँखों में आँसूओं की बाढ़ आ रही थी; किन्तु दिवाकर बैठा था मौन, गम्भीर। उसने एक बार गहनों की ओर देखा, फिर सहोदरा के आँसुओं को। तब उसकी भी कोरें गीली हो आईं और वह दुखी मन से कहने लगा—"नहीं कमला, मैं ऐसा अन्याय नहीं करूँगा, अपना कर्जा भरने के लिये तुम्हारे गहने बेचूं, कितने शर्म की बात है! रख लो, तुम स्वयं ही आजकल तकलीफ में हो।"

इसके बाद कमला कहती रही और रो-रोकर भाई की चिरौरी करती रही, किन्तु दिवाकर ने अपने विचार नहीं बदले। अन्नपूर्णा भी पति के पक्ष में बोल रही थी। बाहर डुगडुगी बज रही थी और बोलियाँ लग रही थीं, ग्यारह सौ बीस एक ग्यारह सौ बीस दो। दिवाकर चौंक-चौंक उठता था, उसके कान सतर होकर रह जाते।

राधे को दूसरे मुहल्ले में यह मालूम हुआ कि दिवाकर का मकान नीलाम हो रहा है। यह सुनते ही उसके होश-हवाश गुम हो गये। वह भागा हुआ वहाँ आया और भीड़ को चीरता हुआ घर के अन्दर गया। वहाँ दिवाकर कमला से कह रहा था—"ज़िद न करो कमला, मुसीबत झेलने से ही कटती है, सहारा पाकर उसकी मियाद और बढ़ जाती है।"

राधे सबके बीच जाकर खड़ा हो गया। उसने परिस्थिति को समझा और उसका अध्ययन किया। फिर गहनों की पोटली हाथ में उठा, जाने को उद्यत हो, कमला की ओर उन्मुख हो कहने लगा—"मैं अभी रुपये लेकर आता हूँ कमला, मकान नीलाम हो और मैं देखता रहूँ। यह कभी नहीं हो सकता, मैं जाता हूँ और अभी..."

तत्क्षण ही दिवाकर ने उठकर बहनोई का हाथ पकड़ लिया और पोटली अपने हाथ में ले उससे आग्रह करके बोल उठा—"राधे, गहने बेचने की कोई जरूरत नहीं, लोग बहनों को दान में न जाने क्या-क्या देते हैं और मैं जगहँसाई करवाऊँ उसके गहने बेचकर, जेवर नहीं बिकेंगे राधे, मकान नीलाम होने दो।"

राधे की धमनियों में उस समय रक्त का संचार तीव्र गति से हो रहा था। वह जोश को ठण्डा नहीं होने देना चाहता था, किन्तु उबाल उबलकर पानी बन जाने को विवश था तभी उसी में भाप उठने लगी थी।

दिवाकर ने जब देखा कि परिस्थिति सुलझती नहीं और उलझती चली जा रही है तो उसने तथ्य को निकट से परखने की कोशिश की। फिर अपने सम्भावित स्वर में बोला—"राधे ये गहने ज्यादा से ज्यादा हजार ग्यारह सौ के बिकेंगे। दोनों डिगरियों की रकम अठारह सौ बासठ रुपये हैं मय हर्जे-खर्चे के, गहने भी चले जायंगे और कोई काम पूरा न होगा।"

यह सुनते ही राघे को ऐसा लगा जैसे उसके हाथ-पैर फूल गये हों और वह विवश हो गया हो। वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ावस्था में खड़ा था। दरवाजे पर डुगडुगी खूब जोरों से बज रही थी और अब बोली पहुँच गई थी, पन्द्रह सौ से ऊपर। फिर भी आक्शनर उच्च-स्वरों में आवाज़ लगा रहा था—"अरे, अभी बहुत कम है, पन्द्रह सौ सत्तर एक, पन्द्रह सौ सत्तर दो।"

१०

दिवाकर का मकान पूरे दो हजार का नीलाम हुआ। उसके हाथ नकद पूँजीस्वरूप केवल एकसौ अड़तीस रुपये आये। अब वर्तमान परिस्थिति बहुत ही भयंकर हो गई थी। समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। परिवार को लेकर कहाँ जाय? कमला ने भाई और भाभी को इस बात के लिये राजी करना चाहा कि वे लोग उसके घर में चलकर रहें और राधे ने तो इस पर पूरा-पूरा जोर दिया। वह हरचन्द कोशिश करके हार गया; लेकिन दम्पति ने हाँ नहीं की।

उसी मुहल्ले में पन्द्रह रुपये मासिक पर दो कमरे दिवाकर ने किराये पर लिये और उसके जीवन की गाड़ी पुनः अस्त-व्यस्त ढंग से चलने लगी।

मनुष्य की आशाओं पर जब तुषारपात हो जाता है तो वह चकरा जाता है, हैरान होकर सोचने लगता है कि मेरा जीवन व्यर्थ है। काश! मैं पैदा होते ही मर जाता तो कितना अच्छा होता! लेकिन ऐसा भी सिर्फ वही लोग सोच पाते हैं जो उत्तरदायित्व से सर्वथा दूर होते हैं। जिसके सिर पर जिम्मेदारियों की गठरी रखी हो वह उसके बोझ से दबता चला जाता है और कभी उफ तक नहीं करता। दिवाकर की भी स्थिति ऐसी ही थी। मरता क्या न करता। वह दिन-दिनभर भटकता था रोजी के लिये; किन्तु नौकरी जैसे उसके लिये अभिशाप बन गई थी।

जो रुपये अन्नपूर्णा के पास शेष बचे थे उन्हीं को वह कंजूसी के साथ खर्च कर रही थी। दिवाकर उसे रोज दिलासा देता कि कल अमुक ने नौकरी देने को कहा है, परसों फलाँ जगह जाना है, ट्यूशन जरूर मिल जायेगा। मगर सबेरे वह अरमान लेकर घर से बाहर निकलता, जो कली की भाँति विकसित होना चाहते थे और शाम को जब लौटता तो अरमान तो अरमान वह स्वयं भी थककर चकनाचूर हो जाता था। काश ! गरीबी उसका पीछा छोड़ देती तो वह भी समझ पाता कि जीवन क्या है।

इधर दिवाकर के घर की स्थिति स्वयं अपने आपको भींख रही थी, उधर कमला को न जाने किस तरह सन्देह हो गया कि राघे दलाली नहीं करता, वह अफीम और चरस का काम फिर करने लगा है। यह प्रसंग इस तरह चला था कि एक बार मुहल्ले की दो-तीन स्त्रियाँ आई कमला के घर। एक ने पूछा कि राघे आजकल क्या करता है, कमला जो जानती थी वह बतला दिया। इस पर दूसरी स्त्री नाक-भौं सिकोड़कर कहने लगी कि मेरा दीपू कल ही कह रहा था कि राघे चरस और अफीम का काम फिर करने लगा है। उसको समझाओ कमला, यह राह अच्छी नहीं है।

इसी तरह तीसरी स्त्री ने दूसरी का समर्थन किया। उसका कहना था कि तुम क्या जानो कमला, आदमी घर के बाहर क्या करता है। तुमको खुश रखने के लिये बतला दिया होगा राघे ने कि वह दलाली करता है। अब तुम जानो और तुम्हारा काम। हम लोगों को क्या, कोई जब बनता है तो खुशी हासिल होती है और जब बिगड़ता है तो बुरा लगता है।

स्त्रियों की बातों में कुछ तथ्य है या नहीं, कमला ने इस पर विचार नहीं किया। वह अपनी बात सोचने लगी और शंका ने उस पर नियन्त्रण कर लिया। उसने इस सम्बन्ध में पति से पूछने का कुछ भी साहस नहीं किया और बहुत ही सतर्कता के साथ उसकी परिस्थिति का अध्ययन करने लगी।

कीचड़ में ढेले फेंकने वाले इन्सान पर उसकी छींटें ज़रूर पड़ती हैं।

वह बचना चाहता है; लेकिन बच नहीं पाता। भेद अपना महत्व कायम रखने के लिये एक दिन खुलकर रहता है। उसके सामने आदमी के समस्त मिथ्या आवरण फटकर रह जाते हैं। दिवाकर इस बात को समझ गया था कि राधे फिर अपनी पुरानी वृत्ति पर उतर आया है। उसने इस सम्बन्ध में न तो कुछ कहा पत्नी से और न बहन से। एक दिन अकेले में उसने राधे को खूब समझाया। राधे ने केवल हाँ, हाँ, कर दी, उसका मतलब कुछ नहीं निकला। पानी में पेड़ जम रहा था जिसके मूल का कहीं पता नहीं। राधे ऐसे दरख्त की शाखों पर चढ़ा, मन ही मन पुलक रहा था कि अब वह सम्हल रहा है और एक दिन उसकी गृहस्थी का फेर बँधकर ही रहेगा।

एक रात को राधे जब घर पहुँचा तो उसकी जेब में सौ-सौ के तीन नोट पड़े थे और दूसरी जेब में पड़ी थी एक छोटी सी पुड़िया जिसमें काली-काली कोई कड़ी वस्तु थी। कमला के कान खड़े हो गये और वह सोचने लगी यह काली-काली कड़ी चीज चरस ही हो सकती है और ये तीन सौ रुपये इस बात के पक्के सुबूत हैं कि वे जरायम करते हैं जी भर के, और मुझे चकमा देते हैं कि मैं दलाली करता हूँ।

कमला कभी पति की जेबें नहीं टटोलती थी। उस दिन राधे ने ही उससे स्वयं कहा कि जेब का रूमाल बहुत गन्दा हो गया है, उसमें साबुन लगाकर डाल दो। शायद उस समय उसको रुपयों और चरस का ध्यान नहीं रहा होगा।

रात अन्तर्द्वन्द्व में बीत गई। सबेरे जब कमला बिस्तर से उठी, तो उसका शरीर अलसाया हुआ था। जमुहाइयाँ आ रही थीं। उसने नाश्ता पानी कर लेने के बाद पति से धीरे से पूछा—"तुम्हारी जेब में यह रुपये कैसे पड़े हैं? किसके हैं? क्यों रखते हो, किसी की जोखम, अपने पास? अगर कहीं नुकसान हो जाय तो?"

कमला ने इतनी नाटकीयता के साथ प्रश्न किया था कि राधे को बोध ही नहीं हो पाया कि वह वास्तविकता को भाँप गई है। उसने केवल

यही समझा कि रूमाल निकालते समय कमला ने नोट देखें होंगे, तभी पूछ रही है। वह हँसकर कहने लगा—"हाँ, एक ग्राहक के हैं, कुछ गहने खरीदने हैं उसे, आज और रुपये लायेगा। ये रुपये मेरे पास वह जबरदस्ती जमाकर गया है। बोला, अब कहाँ लौटाकर ले जाऊँ भइया, आप ही रखलो।"

इस पर कमला उठ खड़ी हुई और चरस की पुड़िया उसके सामने लाकर रख दी। फिर कहने लगी—"और यह क्या चीज है ? मैं जानती हूँ, कि शायद इसे चरस कहते हैं, मैं बाज आई तुमसे; तुम अपनी आदतें नहीं छोड़ोगे ! अफीम वाले मामले में पकड़े गये थे, उसका मुकदमा चलेगा, अभी तुम जमानत पर हो और फिर भी आँखें भुस में हैं ! जेब में चरस डाले फिरते हो, अगर कहीं पकड़े गये, तो मैं कहीं की नहीं रहूँगी। मुझको चकमा देते हो कि मैं दलाली करता हूँ। क्या,कहूँ तुमको। जहर की एक पुड़िया लाओ और खिला दो मुझे फिर चैन की वंशी बजाओ। अभी जरायम करके तुम्हारा जी नहीं भरा।"

राधे कमला की ये बातें सुनकर दंग रह गया। वह चुप्पी साधकर बैठ गया; क्योंकि बात बनाने की कहीं भी सन्धि शेष नहीं रह गई थी। कमला फिर कहने लगी—"तो फिर क्या निश्चय करते हो ? मेरी बातें कान खोलकर सुन लो। मेरे दो पहलू हैं तुम्हारे सामने, अगर तुम्हें अपने हाथ गुनाहों में रँगने हैं, तो शौक से रँगो मैं मना नहीं करती ; लेकिन ऐसी स्थिति में भविष्य में एक दिन तुम घर में मुझको नहीं, मेरी लाश को पाओगे। मैं जान दे दूँगी; लेकिन जीते जी तुम्हें जरायम नहीं करने दूँगी। और दूसरा पहलू यह है कि ईमानदारी के साथ मेहनत करो, उससे जो रूखी-सूखी मिले, सन्तोष करो। सन्तोष ही आदमी की सबसे बड़ी तृप्ति है। क्यों नहीं ले जाते गहने, उनको बेच दो। कहती हूँ परचून की दूकान खोलकर बैठो इसमें कोई शर्म नहीं, मगर तुम···"

राधे ने ऊबकर एक लम्बी साँस ली और कमला की बातों में बाधा देकर बोल पड़ा—"कमला, अब अधिक शर्मिंदा न करो, कैसे बतलाऊँ

कि मैंने कितनी कोशिश की सम्हलने की ; लेकिन मजबूरियों ने मेरी एक नहीं चलने दी, अच्छा अब वही करूँगा, जो तुम कहती हो, मेरी प्रतीक्षा करना कमला, मैं तभी लौटकर आऊँगा जब मेरे अन्दर का शैतान मर जाएगा और मेरे जीवनगत इन्सान को स्वतन्त्र होकर जीने का अधिकार मिल जायेगा।"

यह कहने के साथ राधे उठ खड़ा हुआ। वह बाहर जाने लगा, कमला पीछे दौड़ी। वह कह रही थी—"अरे ये कैसी बहकी-बहकी बातें करते हो। तुम्हारी गोल-मोल बातें मेरी समझ में नहीं आतीं। साफ-साफ कहो, रुको, ठहरो, अरे जाते कहाँ हो ?"

राधे चौखट तक आगया था। कमला भी उसके निकट आ लगी तब राधे पीछे मुड़ा और उसके सिर पर हाथ रख आर्द्र से बोला—"जाने दो कमला, प्रायश्चित्त घर में रहकर नहीं पूरा हो सकता। मुझे वही बनता है जैसा तुम चाहती हो। इन्सान अगर भगवान नहीं बन सकता तो उसकी इन्सानियत के प्रति दृढ़ता, उसमें चार चाँद तो लगा ही सकती है। मैं......"

कमला ने पति के मुँह पर हाथ रख दिया और अधीर होकर व्याकुल स्वर में बोली। वह रोने लगी थी उसके आँसू बह रहे थे। स्वर निकल रहा था गीला-गीला करुणा से भरा हुआ—"ऐसा पागलपन नहीं करते, बात धीरे से समझी जाती है और धीरे से ही उस पर अमल किया जाता है। तूफान की ताकत बहुत बड़ी होती है ; लेकिन आयु बहुत थोड़ी। आवेश बनते काम बिगाड़ देता है, चलो, अन्दर चलकर बैठो। अब मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूँगी।"

कमला पति का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींच रही थी ; किन्तु जाने वाला अपने इरादे से नहीं डिगना चाहता था। उसने जेब में हाथ डाला और सौ-सौ रुपये वाले तीनों नोट कमला के आँचल में छोड़ जाते-जाते यह कहने लगा—"कमला, रोना मत, तुम्हें मेरी शपथ है; अगर तुम रोओगी तो मेरी मंजिल अधूरी रह जायेगी। मैं अधूरा रह जाऊँगा,

इन्सान नहीं बन पाऊँगा। मेरी राह देखना, मैं आदमी बनकर ही घर लौटूँगा, फिर तुम्हें मुझसे कोई शिकायत नहीं होगी।"

कमला रोती रही और राघे चला गया। उस समय सबेरा दोपहर में बदलने जा रहा था। धूप में गरमी समा रही थी और कमला के मानस में उबाल आ रहा था कि देखते-देखते तनिक देर में ही, यह सब क्या हो गया। अब परिस्थिति बेकाबू हो गई है, मुझे लगता है कि दुनिया की बाजार लगी थी और मैं उसमें सजधजकर खड़ी थी। मैं ठग गई बुरी तरह लुट गई, मेरा सब कुछ चला गया।

पूर्वी हवा पैनी होकर बह रही थी। आँगन में खड़ी कमला का आँसुओं से तर हो रहा आँचल उसमें बार-बार उड़ रहा था और उसके कानों में ये शब्द गूँज रहे थे कि मेरी राह देखना कमला, मैं आऊँगा मेरी······

२१

कमला ने यह कभी नहीं सोचा था कि उसका पति इतनी जल्दी भावावेग में बह जायेगा। वह मन ही मन बहुत पछता रही थी कि मैंने उस दिन नाहक उनसे तर्क किया। वे चले गये पता नहीं कहाँ होंगे क्या कर रहे होंगे और कब आयेंगे ? पति ही स्त्री का संसार है उसके बिना सब कुछ सूना-सूना लगता है, किससे कहूँ अपने मन की पीर घर में दीवालें हैं और मैं। क्या करने जा रही थी और क्या कर बैठी। लोग सही कहते हैं कि विद्रोह को दबाने के लिये हिंसा के नहीं अहिंसा के अस्त्र होने चाहिये। मैंने कटुता से काम लिया तभी जड़ बनी बैठी हूँ। जड़ में जीवन तो होता है; लेकिन वह पनपता नहीं।

कई दिन हो गये राधे घर नहीं आया। कमला उस बीच घर के बाहर नहीं निकली। उसका मन हुआ कि भाई और भाभी के सामने अपना दुख रोये तब उसके अन्तरिक्ष से पुनः यह ध्वनि निकलने लगी। अगर तुम रोओगी कमला तो मेरी मंजिल अधूरी रह जायेगी, मैं अधूरा रह जाऊँगा, इन्सान नहीं बन पाऊँगा। इस परिस्थिति में आ कमला के पैर ठिठक जाते, वह नहीं जा पाती कहीं। किन्तु एक दिन दिवाकर और अन्नपूर्णा उसके घर स्वयं आ गये। परिस्थिति का स्पष्टीकरण हुआ। दम्पति राधे के प्रति समवेदना प्रकट करने लगे और कमला को सान्त्वना दी, ननद को आश्वासन का पुट देती हुई अन्नपूर्णा कहने लगी—"धीरज

रखो कमला, हम लोग तो यहीं हैं, मुहल्ले में ही। क्या करे राघे बेचारे ने बहुत तो सम्हलने की कोशिश की, लेकिन आजकल खुरखुरे पत्थरों का तो नाम ही नहीं रहा सभी चिकने हो गये है, पैर फिसल ही जाता है। आदमी को अपनी जरूरतें पूरी करने के लिये पैसा चाहिए। वह उसे कोशिशें करने और मेहनत करने पर भी नहीं मिल पाता, वह अपराध करने लगता है, लोग उसे गुनहगार समझने लगते हैं, असलियत को कोई नहीं परख पाता। अफसोस न करो कमला, राघे जल्दी ही आ जायेगा। उसकी आँखों में शरम है और मनमें आगे बढने का हौसला। वह विजयी होगा, मेरा मन बोल रहा है।"

और इसी तरह दिलासा दिया भाई ने बहन को। उसके शब्द थे—"कमला, राघे बच्चा नहीं जवान है, भलाई-बुराई को अच्छी तरह पहचानता है, उसकी आँखें खुल गई हैं। मैं जानता हूँ कि वह ईमानदारी के साथ रोजी पैदा करने के लिये निकला है। उसमें कामयाब होकर ही लौटेगा। हम लोग कहीं दूर नहीं, जब जी ऊबे चली आया करो और देख लो कुछ दिन, फिर मैं राघे की तलाश करूँगा और उसको लाकर रहूँगा।"

दिन पर दिन बीतते गये और राघे का कुछ पता नहीं चला। दिवाकर अक्सर उसकी तलाश में रहता, लेकिन भेंट नहीं होती, मुहल्ले-वाले भी कहते थे कि न जाने राघे कहाँ चला गया। अब कमला की हैरानी दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ रही थी। उसके संयम का बाँध टूट गया और आँसू बाढ़ बनकर बहने लगे। वह इतनी दुखिया हो गई थी कि भाई को सामने देखते ही पूछने लगती कुछ पता चला भइया और जब दिवाकर उत्तर में नकारात्मक सिर हिलाता तो वह आँचल से आँसू पोंछने लगती।

दिवाकर के परिवार पर शनि की ऐसी दृष्टि पड़ी कि वह टिककर रह गई। अनर्थ पर अनर्थ होते चले गये। वह कड़ुए घूँट पीता रहा और जीता रहा। एक दिन कमला जब मैके गई तो वहाँ देखा कि फूल

और पीतल के बर्तन घर में एक भी नहीं हैं, अलम्युनियम की बटलोई थी और उसीके इने-गिने कुछ और हल्के-फुल्के बर्तन। पूछने पर अन्नपूर्णा ने बतलाया कि अगर बर्तन न बिकते तो हम लोग पता नहीं, अब तक जिन्दा रहते या मर गये होते। प्रतिष्ठा का रंग दिन पर दिन फीका होता जा रहा है अब चुनरी का रंग चटक होने की आशा नहीं, क्योंकि आज की दुनिया में आदमी की कीमत कुछ रह ही नहीं गई है।

कमला का पति दरियादिल था। हमदर्दी उसका केन्द्र-बिन्दु थी। उसके इस कार्य के आवश्यक अंगों की पूर्ति कमला तन, मन और धन तीनों से कर रही थी। उसने पप्पू और प्रेमू को कपड़े बनवाये और जिस दिन नैहर में चूल्हा नहीं जलता, उस दिन वह जिन्स पहुँचाती। इसी तरह वह भाई और भाभी को हर प्रकार का सहयोग देने को तैयार रहती।

कमला अपना दुख भूलने के लिये इस प्रवृत्ति की ओर झुक रही थी कि दिन पर दिन परोपकार के प्रति उसकी आस्था दृढ़ और अटूट होती जा रही थी। धीरे-धीरे एक दिन वह आ गया जब उसके पास एक पैसा भी नहीं रहा केवल गहने रह गये। और उसे लग रहा था कि उसका भाई अपनी गृहस्थी का बोझा उठाने में असमर्थ है इसलिये परिवार का उत्तरदायित्व वह स्वयं अपने ऊपर ओढ़ रही थी इसीलिये उसे विशेष चिन्ता थी। उसकी चिन्ताओं का ओर-छोर नहीं था। एक समस्या सुलझ नहीं पाती और दूसरी सामने आकर खड़ी हो जाती, न जाने कितने भागों में बट रहा था उसका दुख, पति से बिछुड़कर वह जैसे योगिनी बन गई थी। छः महीने से ऊपर हो गये राघे का कोई समाचार नहीं मिला। कमला मन ही मन रोती थी, अपनी भूल पर पछताती थी, तब उसका हृदय कचोट-कचोट उठता था।

हैरानी और परेशानी की हालत में आदमी चाहता है एकान्त और जब वह सूनेपन से ऊब जाता है तो फिर उसका मन आत्मीयों की ओर दौड़ता है। वह अपने संगी-साथियों से मिलने के लिये एक हौसला ले

चल पड़ता है। कमला एक दिन तीसरे पहर अपनी सहेली रमा के घर गई। वहाँ रमा बैठी करघे पर उंगलियाँ चला रही थी। एक दरी का ताना-बाना लग रहा था। कमला बहुत दिनों पर आई थी। आते ही दोनों में दुख-सुख की बातें होने लगीं। रमा ने अपनी कहानी बतलाई कि जब वह ब्याहकर ससुराल गई थी, वहाँ भाइयों में फूट पड़ गई, सब लोग अलग-अलग रहने लगे। उस फूट का परिणाम यह हुआ कि मकान बिक गया, उसके चार हिस्से हुये और चारों भाई उस पैसे को बैठे-बैठे खा गये। कोई भी किसी धन्धे से नहीं लग सका, सभी भटकते रहे। तबाही और बरबादी की नौबत आ गई। सभी लोग कर्जे से लद गये और तगा-दगीरों ने नाक में दम कर दिया। सभी की गृहस्थी कच्ची थी तब ऐसे में मेरी छोटी देवरानी ने एक नया कदम उठाया, जिससे आज तुम मुझे खुशहाल देख रही हो।

कमला ने जिज्ञासा प्रकट की और रमा फिर कहने लगी कि हाथ करघा उद्योग ने ही हमारे पिछड़े हुये परिवारों को फिर आगे लाकर खड़ा कर दिया। सभी घरों में करघे चलते हैं, बल्कि मैं तो अपने घर में यहाँ तक करती हूँ कि कपास को स्वयं अपने हाथों ओट बिनौले अलग कर देती हूँ और घर में ही उसकी धुनने तथा पोली बनाने की क्रिया भी करती हूँ। चरखे पर सूत भी घर में ही काता जाता है और उसको रँगने तथा सँवारने का काम हम सब लोग बहुत सावधानी के साथ करते हैं। कभी दरियो का दौर चलता है तो हफ्तों उनकी बुनाई चलती रहती है, अँगोछे, पलँग तथा मेजपोश, जनानी मर्दानी धोतियाँ बस यह समझ लो कि मैं लगभग सभी तरह का कपड़ा घर में ही बुन लेती हूँ। अपनी जरूरत भर का कपड़ा तैयार करने के बाद बाकी कपड़ा बाजार में बिक जाता है। मैं कैसे यकीन दिलाऊँ कि हाथ करघे का कपड़ा बहुत टिकाऊ और मजबूत होता है।

रमा ने एक बात कमला को और बतलाई थी कि अब उसके पति

के चारों भाई ऋण से मुक्त हो गये हैं, वे सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

अन्त में रमा ने कमला को भी सलाह दी और याद दिलायी कि मैट्रिक तक वह अपने इस विषय में कितनी अधिक रुचि लेती रही थी।

कमला जब रमा के घर से वापस लौटी तो उसके पैरों की गति तीव्र हो गई थी। और मन में विश्वास ने घर कर लिया कि हाथ करघा उद्योग अपनाते ही शायद उसके भी दिन फिर जायेंगे जैसा कि रमा के साथ हुआ है।

२२

कमला अब घर फूँक तमाशा देखने पर उतर आई थी। कई महीने हो गये, मकान का किराया काफी चढ़ गया था। मकान मालिक ने नोटिस देकर बजरिये अदालत घर खाली करवा लिया। वह आजकल मैके में रह रही थी। उसने दिवाकर को अपना हार दिया और उसको घर में करघा लगाने की बात समझाई। पहले दिवाकर ने आनाकानी की, किन्तु जब कमला जिद पकड़ गई, तो हार बेचकर वह रुपये ले आया।

कमला ने उन रुपयों से दो चरखे मँगवाये और कपास। साथ ही कपास ओटने वाली चरखी भी। इसके अतिरिक्त करघे का पूरा-पूरा सामान रमा से सूची बनवाकर वह भाई के साथ खरीद लाई और फिर रमा के घर जा, उससे यह विनय की कि दिन में प्रातः और सायं वह उसे थोड़ा समय दे दिया करे, कष्ट तो होगा थोड़े दिनों में वह सब सीख लेगी।

इस तरह दिवाकर के घर में हाथ करघा उद्योग का जन्म हुआ। कमला धुन की पक्की थी। वह दत्तचित्त हो अपने काम में लग गई। रमा का सहयोग उसको पूर्णतया प्राप्त था। वह इस सहयोग की सराहना करते मन ही मन कभी नहीं थकती और सोचा करती कि यदि मैं इसमें सफल हो गई तो समझूँगी कि मुझमें नवजीवन पनप उठा है। मेहनत कितनी अच्छी और कितनी सुखदाई है। मेहनत से आदमी क्या नहीं कर

सकता ? प्रयत्न और परिश्रम दो जंजीरें हैं इनमें आदमी स्वयं अपने आप ही बँध जाता है, तभी वह जीविका पाने में सफल होता है।

जिस दिन पहली दरी तैयार हुई और दिवाकर लेकर उसे बाजार गया, तो मेस्टन रोड पर अन्य दरी बेचने वाले बार-बार उसे नीचे से ऊपर तक निहारते थे, किन्तु श्रम का मूल्य अपना स्वत्व पहचानता है, वह ज़रूर मिलता है। दिवाकर की दरी साढ़े सात रुपये की बिक गई। उसने रुपये लाकर बहन को दिये।

वह रात कितने आनन्द की रही यह नहीं कहा जा सकता। अन्नपूर्णा आधी रात तक नहीं सोई। वह कमला से बातें करती रही कि बीबी अब इस एक करघे से काम नहीं चलेगा, घर में चलेंगे तीन करघे, मैं और तुम्हारे भइया भी दरियाँ बुनेंगे।

इसी तरह का प्रसंग दिवाकर सवेरे चलाना भी नहीं भूला। उसने कहा कि कमला हम तीनों दिन-रात जुटकर काम करेंगे, मुझे यकीन है कि माल बाजार में हाथों हाथ बिक जायेगा।

कमला यह सब सुनकर खुशी से फूली नहीं समा रही थी। वह प्रोत्साहन वाले मामले में हमेशा आगे रही। एक सप्ताह के अन्तर्गत ही घर में दो करघे और चलने लगे। इसके लिये भी कमला के आभूषण बिके, अब केवल उसके पास कंगनों की एक जोड़ी शेष रह गई थी।

२३

धीरे-धीरे दिवाकर के घर की स्थिति बदल गई थी। अब उसकी रोटी की समस्या हल हो चुकी थी। घर में हथकरघे चलते थे। दरियाँ, निबाड़ और पलंग की चद्दरें आदि बुनी जातीं। उनकी बिक्री भी बराबर होती रहती थी। पसीना सफल हो रहा था और सोने में सुगंधि-सी आ गई थी।

दिवाकर का पिछड़ा हुआ परिवार हाथ करघा उद्योग के कारण अब सबके बीच में आकर खड़ा हो गया था, मुहल्ले वाले भी कहने लगे थे कि दिवाकर के दिन फिर गये। कमला दिन-रात भूत-सी काम में जुटी रहती है। उसने भाई को आदमी बना दिया। बेचारी कितनी दुखी है, पति नाराज होकर चला गया और आज तक नहीं लौटा। वाकई कमला का जीवन अपना एक आदर्श रखता है।

कमला जब अपने जीवन के प्रति विचार करती तो उसे लगता कि सब सूना-सूना है। उसका पति ही उसका जीवन है, उसकी अनुपस्थिति में वह जीवन-मृत है। वह नित्य जब रात को सोती तो पति का स्मरण स्वप्नों में आता था और वह पूरे दिन आशा से भरी-भरी रहती कि आज उसका परदेशी प्रीतम जरूर आयेगा, लेकिन सांझ होते-होते उसकी आशा की गगरी छूँछी हो जाती। दिन डूब जाता और तारे निकल आते, शमा जल उठती और पारवाने आकर उस पर मचलने लगते, मगर कमला

के अन्तर में धुआँ उठ रहा था। वह निराशा से जैसे उकता-सी गई थी।

एक दिन दिवाकर को मालूम हुआ कि राधे कहीं और नहीं गया यहीं शहर में भटकता रहा, मजबूरीवश, क्योंकि उस पर मुकदमा चलने को था। वह जमानत पर रिहा था। आखिर में हार मानकर वह फिर अपने पेशे को करने लगा। मुकदमे की कार्यवाही शुरू हो गई थी और उसके लिये पैसे की जरूरत थी। उस पर पाँच सौ रुपया जुर्माना हुआ। उसको अदा न कर सकने के कारण इस समय वह जेल में सड़ रहा था। जुर्माना न देने पर छः महीने की कैद का हुक्म हुआ था। उसी के मुताबिक वह सजा काट रहा था।

कमला ने जब यह सुना तो वह बिलबिला उठी। अन्नपूर्णा और दिवाकर सोचते ही रह गये कि जुर्माने की रकम भरने के लिये रुपये की क्या व्यवस्था की जाय। इतनी लम्बी रकम का जल्दी इन्तजाम हो जाना नामुमकिन सा लगता है। लेकिन कमला के पास अभी कंगन शेष थे। वह भाई से कहने लगी—"कंगन बेच दो भइया और जुर्माना जमा करके उनको जेल से छुड़ा लाओ। बहुत भटके अब घर आयें, घर में अपने धंधे की कमी नहीं। अभी हम तीन आदमी काम करते हैं फिर चार हो जायेंगे और उनको भी यह मानना पड़ेगा कि स्वयं अपने हाथों से मेहनत करना कितना अच्छा होता है और हाथ करघे का काम कितना सुलभ और कितना उपयोगी है।"

दिवाकर कमला की बातें सुनकर गहरे सोच में पड़ गया। उसका साहस नहीं होता था कि कंगन बेचने जाय। वह संकोच से गड़ता हुआ धीरे-धीरे कहने लगा—"कमला, अब तुम्हारे पास केवल एक यही गहना बचा है, इसे न हटाओ। घर में सब मिलाकर सौ-डेढ़ सौ रुपये नकद निकल आयेंगे, एक करघा बेच दूँगा इस तरह घटा-बढ़ाकर रुपये का प्रबन्ध हो जायेगा। इस पर भी अगर कम रहा तो दूसरा करघा भी बेच दूँगा। ये कंगन तुम्हारे हाथों की शोभा हैं, और सुहागिन के सौभाग्य के प्रतीक, इन्हें रख लो।"

किन्तु कमला अपनी बात पर दृढ़ रही। वह कहने लगी—"भइया, एक तो छोटी पूँजी को रोजगार खुद ही भींखता रहता है और तुम उसके बारदाने में कमी करने की सोच रहे हो। ऐसी हालत में धंधा कभी जिन्दा नहीं रह सकता। कंगनों का मोह क्या, तुम बने रहो, वे सलामत रहें। पप्पू और प्रेमू द्वीज के चांद की भाँति बढ़ और फले-फूलें। एक जोड़ी कंगन क्या अगर हजार जोड़ी भी हों तो मैं वे सब तुम लोगों पर निछावर कर दूँ। जहां पर भयानक मौके सामने आयें वहाँ सोच-विचार में अधिक समय गँवाना सबसे बड़ी भूल होती है।"

दिवाकर देर तक कमला से बातों में उलझा रहा। बीच-बीच में अन्नपूर्णा भी पति का समर्थन करने लगती थी। लेकिन कमला नहीं मानी। वह भाई को भेजकर ही रही।

उसी दिन कंगन बिके और उसी दिन जुर्माना भी जमा कर दिया गया, लेकिन परवाना बन पाया दूसरे दिन। और साँझ होते-होते राधे जेल से रिहा कर दिया गया।

जेल के फाटक पर राधे की दिवाकर से भेंट हुई। वह बहुत झेंपा। उसकी दृष्टि नीचे गड़कर रह गई।

दिवाकर ने कहा—"घर चलो राधे, कमला सूखकर आधी रह गई है। अब हम लोगों ने घर पर ही हाथ करघा उद्योग को अपना लिया है, तीन करघे चलते हैं, खूब काम होता है। अब हमारी गरीबी दूर हो गई है राधे, तुम न जाने क्यों भटकते रहे, घर नहीं आये। ऐसी भी धुन किस काम की जिसमें घर ही उजड़ जाय, क्योंकि उजड़ा घर एक तो बसता नहीं और अगर बसता है तो बहुत देर में।"

राधे अपने मन का असमंजस व्यक्त करता हुआ बोला—"कहाँ चलूँ, कुछ समझ में नहीं आता, चलो पहले यहाँ से तो चलूँ।"

दोनों आगे बढ़े। बड़े चौराहे पर आ, राधे रुकना चाहता था। उसने एक रेस्ट्राँ में चलने की इच्छा जाहिर की। दोनों एक कोने में खड़े थे। दिवाकर ने एक मीठी डाँट बताई। वह बोला—"घर चलो राधे,

चाय घर पर चलकर पीना, तुम्हें पता नहीं कमला और उसकी भाभी दोनों तुम्हारी राह देख रही होंगी।"

राधे दाँतों से होठ चबाता हुआ, उदास मुद्रा में कहने लगा—"दिवाकर भइया, आप मेरे मर्म को नहीं समझ पाओगे। मैं बहुत दुखी हूँ, इच्छा होती है कि रो दूँ। मैं कमला से कहकर आया था कि मैं इंसान बनने आ रहा हूँ और अब क्या बनकर लौट रहा हूँ, यह ग्लानि मुझे खाये जा रही है। कैसे जाऊँगा कमला के सामने। वह स्त्री है और मैं पुरुष, फिर भी मुझे भय लगता है, संकोच मेरी गर्दन दबा रहा है। इसका कारण कमला की दृढ़ता और मेरी अस्थिरता है। मैं नहीं जाऊँगा घर, मुझे मजबूर न करो भइया। मैं अपनी बात नहीं भूला हूँ, जो कह आया हूँ उसे पूरा करूँगा। देखना है कामयाबी कब तक मुझसे दूर-दूर भागती है!"

दिवाकर ने बहनोई को बहुत समझाया। वह घर चलने के लिये राजी ही नहीं हो रहा था। अन्त में हार मानकर जब दिवाकर ने उसे अपनी शपथ खिलाई और बच्चों का स्मरण दिलाया कि प्रेमू अपने फूफा को कितना याद करता है तब कहीं राधे उसके साथ चलने को प्रस्तुत हुआ। उसका हृदय इस समय तीव्र गति से धड़कने लगा था और पैर कुछ काँप रहे थे जिससे चलने में डग कभी अस्त-व्यस्त पड़ जाते।

२४

कमला में अभिनव स्फूर्ति का संचार हो चला था। वह मगन हो उठी थी और उसकी उमंगें मन के आँगन में पुलक रही थीं, फुदक रही थीं। उसने पति को हाथों हाथ लिया, और कोई शिकायत नहीं की। शिकायत का अंजाम वह भुगत चुकी थी। इसीलिये सजग थी। वह अपनी अहिंसा वृति के द्वारा और सेवा भाव से पति को जीतना चाहती थी। अपने इस उद्देश्य में सफल होने के लिये वह ललक रही थी।

जब कमला ने कहीं पर भी सख्त कदम नहीं उठाया और गड़े मुर्दे उखाड़ने की उसने जरूरत ही नहीं समझी तो राधे और उसके सम्मुख और भी अधिक शरमा कर रह गया। उसने स्वयं ही अपनी स्थिति को स्पष्ट किया।

कमला पति की बातें सुन, उसे प्रोत्साहन का पुट देती हुई बोली—"मन क्यों छोटा करते हो, अब कहीं भटकने की जरूरत नहीं। पहले काम सीख लो फिर एक करघा और लग जायेगा, देखो यह सूझ अगर पहले ही आ गई होती तो हम लोग मुसीबतों के चक्कर में कभी न पड़ते। बेचारी रमा ने हमारी बड़ी मदद की।"

इसके बाद कमला, पति को हाथ करघा उद्योग का श्रीगणेश उसके घर में कैसे हुआ, वह कहानी रोचक ढंग से सुनाने लगी जिसका समस्त प्राधान्य रमा को था।

राधे अपनी बुद्धि पर तरस खाने लगा। वह धीरे-धीरे घर के वातावरण में रंगता चला गया। एक सप्ताह के अन्तर्गत ही वह दरी और निवाड़ बुनना सीख गया। आदमी की मेहनत जब सफल होती है तो उसे खुशी हासिल होती है। उसका उत्साह बढ़ता है और काम में खूब मन लगता है। राधे भी जुटकर मेहनत करता था। कमला को इससे प्रसन्नता होती। वह मन में फूली नहीं समाती थी कि उसकी बिगड़ी बन रही है। उसका संयम विजयी हुआ। वह बहुत कुछ पा गई है, आशा से परे। उसके पति का उपनाम आवारा नहीं, जरायमपेशा नहीं, श्रमजीवी है। श्रम का महत्व है और उसका अस्तित्व भी मनुष्यगत अस्तित्व से कहीं पर भी कम नहीं।

संगति के लिये पुरानी कहावत आज भी खूब कही-सुनी जाती है कि 'संगति ही गुण उपजे और संगति ही गुण जाय। बाँस-फाँस और मिश्री तीनों एक ही भाव बिकाय।' आदमी जो दायरा अपने लिये स्वयं बनाता है वह उसका बन्दी बनकर रह जाता है और इसके लिये उसे मन ही मन कायल होना पड़ता है। यद्यपि राधे गन्दगी से बहुत दूर निकल आया था, लेकिन फिर भी अगर कहीं उसके पुराने साथी मिल जाते तो उनके स्वागत-सत्कार में, उसे कुछ खर्च करना पड़ जाता था। स्वभाव का वह उदार था। इसीलिये कभी-कभी लोगों का साहस पड़ जाता और वे उससे दो-चार, दस-पाँच रुपये नकद भी माँग लेते थे। कुछ भी हो, मेहनत की कमाई को नाहक खर्च करने में राधे का मन कसकता था और वह अपनी इस समस्या पर स्वयं ही विचार किया करता, किसी से कुछ नहीं कहता।

कभी-कभी राधे अपने मित्रों को यह सलाह देता कि वे जरायम का पेशा छोड़कर हाथ करघा उद्योग को अपना लें। इस पर मित्रवर्ग मुँह बना लेता, किसी को उसकी बात नहीं भाती थी। किन्तु वह अपने कर्त्तव्य से नहीं चूकता, अपनी बात कहना नहीं भूलता—लोग सुनें या न सुनें, अमल करें या न करें।

एक दिन राधे एक अजीब उलझन में फँस गया, अचानक एक आतंक पूर्ण समस्या ने आकर उससे साक्षात कर लिया। उसका एक हमपेशा भाई हवालात में बन्द था, उसकी जमानत के लिये रुपयों की जरूरत थी। उसके अतीत के सभी साथी जानते थे कि आजकल राधे खुशहाल है। सबने आकर उससे माँग की। वह मजबूर हो गया। उस दिन सब माल बयालीस रुपये का बिका था कई दिन की मेहनत की कमाई थी। राधे ने दो रुपये जेब में रख लिये और चालीस माँगने वालों को दे दिये।

घर आकर राधे सत्य को पत्नी के सम्मुख व्यक्त नहीं कर सका। वह रुपयों के गुम हो जाने वाली बात सोचने लगा। रास्ते भर योजना बनाई और घर में घुसा तो गमगीन चेहरा लिये। और आते ही कहने लगा—"मैं तो लुट गया कमला, किसी ने जेब ही साफ कर दी। एक जेब में दो रुपये पड़े थे वे रह गये और चालीस दूसरी जेब से न जाने किस ने कब और कैसे निकाल लिये। कमला, अन्नपूर्णा और दिवाकर सब लोग वहां जुट आये। सबके चेहरे उतर गये और उन पर उदासी छाकर रह गई।

कमला ने सन्तोष किया और काम में दूनी मेहनत से जुट गई। लेकिन एक और नया परिवर्तन उसने स्वयं किया। उस दिन जब राधे बुना हुआ सामान लेकर बेचने बाजार चला तो उसने भाई को उसके साथ कर दिया और यह कहकर पति का मन भर दिया कि दूकानदारी अकेले नहीं होती, एक से दो भले होते हैं।

उस दिन रात को जब राधे अपने बिस्तर पर गया तो उसे नींद नहीं आई। वह मन ही मन आशंका से भरता रहा। और अपने प्रति सोचता रहा कि कमला की प्रवीणता देखते ही बनती है। शायद उसने मुझपर विश्वास नहीं किया कि रुपये जेब से निकल गये तभी दिवाकर को साथ भेजा था, वर्ना मैं नित्य अकेला ही बाजार जाता था। वह मेरी पत्नी है और मुझ पर विश्वास नहीं करती। गनीमत यह है कि वह स्वयं अपने मन में ही गुनती है किसी से कुछ कहती नहीं।

राधे अब यह अच्छी तरह जान गया था कि कमला उससे कलह कभी नहीं करेगी। वह आजकल अहिंसा की पुजारिन हो रही है। धीरे-धीरे ही स्थिति पर काबू पाना उसने अपना ध्येय बना रखा है। वह मुँह से कुछ नहीं कहेगी, सोचे हुये को कार्य रूप में परिणत करेगी। इसका मतलब यह है कि वह खुला विरोध नहीं, अन्तर्विरोध की सृष्टि कर रही है।

रात का रंग निखरता रहा और तारे झिलमिलाते रहे नीले अम्बर के सागर में। चाँद मुस्कराता रहा और पवन भी मन भावन होकर बहता रहा, किन्तु राधे को वह शीतल चाँदनी लग रही थी कड़ी जेठ-बैसाख जैसी धूप। उसका मस्तिष्क घूम रहा था उसके मन में कमला के प्रति उपेक्षा अपना घर बना रही थी और वह स्वयं ही अपनी घृणा से गला जा रहा था। उसे अपने ऊपर अत्यधिक ग्लानि थी। उसकी देह से चिनगारियाँ निकल रही थीं और वह अनुभव कर रहा था कि किसी की लगाई आग में नहीं स्वयं अपनी आग में ही जल रहा है। वह गुनाह करता रहा, करके छोड़ दिया और अब बगुला-भगत बन गया, लेकिन कहने वाले उसे गुनहगार ही कहेंगे।

२५

प्रेमू अब तीन वर्ष का हो गया था और पप्पू इस साल दसवीं कक्षा का छात्र था। कमला के अब तक कोई सन्तान नहीं हुई। अन्नपूर्णा इसके लिये मनौतियाँ मानती थी। वह जब भी तपेश्वरी देवी के मन्दिर में जाती तो एक पत्थर उठाकर आले में मन्दिर के पीछे धरना रख आती कि मेरी ननद के जब लड़का होगा तो इस पत्थर को घी-गुड़ से पूजूँगी।

घर में आमोद-प्रमोद का वातावरण दिन-रात मुखरित रहता। दिवाकर प्रसन्न था, अन्नपूर्णा अपने में भरी-पूरी थी; लेकिन राधे और कमला सूखी हँसी हँसते थे सबको दिखाने के लिये, उनकी स्वाभाविक हँसी का जैसे लोप हो गया था।

देहाती कहावत है कि 'गीधी गाय गोलहन्दे खाय, धाय-धाय महुआ के नीचे जाय।' यही हालत थी राधे के साथी जरायम-पेशा लोगों की। उनमें से सभी अच्छे घर के नहीं थे, कुछ ओछी तबियत के भी थे। वे आये दिन कोई न कोई मजबूरी दिखलाकर राधे से रुपया ऐंठने की सोचते रहते। राधे विवश था। अतः उसने बाजार जाना बन्द कर दिया और अब दिवाकर अकेले ही सामान बेंचने जाता था।

राधे मुँह लुकाये घर में बैठा रहता यह बात उसके दोस्तों को अच्छी नहीं लगी। वे उसे हैरान करने की सोचने लगे और एक रात को जब दिवाकर अपना सामान बेंचकर घर लौट रहा था तो घर से तनिक दूर जहाँ अँधेरा पड़ता था वहीं एक आदमी ने पिस्तौल दिखाकर उससे रुपये

छीन लिये। यह बात जब राधे को मालूम हुई तो उसका खून खौल उठा। वह फौरन ही समझ गया कि यह काम उसके दोस्तों का ही है। वह उसी समय ताव में भरा हुआ, सबके बीच में पहुँचा और बिगड़कर बोला—"लाओ, वे रुपये मुझे दो, जो अभी दिवाकर से छीने हैं। तुम लोग इतने नीच निकलोगे मैंने कभी नहीं सोचा था।"

बात का बतंगड़ बन गया। तू-तू, मैं-मैं होने लगी। राधे आपे से बाहर हो रहा था और उसके साथी भी उसके सिर हो रहे थे। अन्त में मामला तूल पकड़ गया। एक आदमी ने कहा—"किसके रुपये? कैसे रुपये? कौन लाया यहाँ? तमीज से बात करो जी, नहीं तो अभी मुँह तोड़ दूँगा।"

इस पर गरम होकर राधे ने उस आदमी को जवाब देने के लिये अपनी गरदन आगे बढ़ाई। इतने में उसने उसके गाल पर एक भरपूर थप्पड़ जमा दिया। बस फिर क्या था, दोनों में मल्ल-युद्ध होने लगा। राधे ने घूँसों, थप्पड़ों और लातों से उस आदमी को अधमरा कर डाला। यह देखते ही उस पर एक साथ ही कई आदमी टूट पड़े और मारते-मारते उसे बेदम कर दिया। पुलिस आई, सब लोग पकड़े गये। राधे भी हवालात में बन्द कर दिया गया।

दिवाकर और कमला को जब इस घटना का हाल मालूम हुआ तो दिवाकर तो व्याकुल हो उठा कि जल्दी से जाकर वह राधे की जमानत करवाये; लेकिन कमला ने अपने को एकदम बदल दिया। वह बोली—"बच्चों को समझाया जाता है, दाढ़ी-मूँछ वाले आदमी को नहीं। जब एक रास्ता बुरा है तो मैं कहती हूँ कि उस पर चलो ही क्यों? उनका लोगों से साथ नहीं छूटेगा, आये दिन ऐसी घटनायें होंगी। घर में रहते हैं, तो भूले रहते हैं, बाहर जाते ही, फिर अपनी धुन में लग जाते हैं। आज जमानत करो, इसके बाद मुकदमा लड़ने के लिये भी रुपये का इन्तजाम रखो। यह सब करके कोई परिवार नहीं पनप सकता भइया। उनकी आदतें बदलेंगी नहीं, भला बताओ झगड़ा करने की क्या जरूरत थी?"

कमला ने बहुतेरा कहा; लेकिन दिवाकर नहीं माना और राधे की जमानत करवा, उसको घर लिवा लाया।

कमला और राधे के बीच एक गहरी खाई बन गई थी। वह पति पर रुष्ट थी लेकिन प्रकट में नहीं, परोक्ष में। वह अपना मर्म किसी पर व्यक्त नहीं करती। चिन्तायें राधे को भी घेरतीं और उसे अपना जीवन नीरस-नीरस-सा लगने लगता। किन्तु वह पुरुष था वह बात को भूलता और याद करता रहता। ऐसे उसकी प्रगति चल रही थी। और कमला मन में आई हुई शंकाओं को निकाल नहीं पाती थी। वह कुछ भी नहीं भूलती, हर बात उसे अच्छी तरह याद रहती थी। वह नारी थी इसीलिये मर्यादा के अन्दर रह, आँसुओं को पीती रही, मन दुखता रहा और उसे कराहते, कभी किसीने नहीं सुना।

मनुष्य जब दुख को पी जाने की कोशिश करता है तो दुख उसे स्वयं ही पी लेता है। उसका सारा खून जल जाता है सोचने और विचारने में। जठराग्नि कभी प्रज्ज्वलित ही नहीं होती, भूख मर जाती है खूराक कम हो जाती है और आदमी दुर्बल पड़ जाता है।

धीरे-धीरे कमला रुग्ण रहने लगी। उसका शरीर पीला पड़ता जा रहा था, हल्दी के माफिक। लगता था जैसे उसे पीलिया हो गया हो। अन्नपूर्णा को उसकी चिन्ता हुई। उसने पति से कहकर उसका इलाज आरम्भ कर दिया।

कमला को मन्द ज्वर रहने लगा था। उसका सिलसिला टूटा नहीं जारी रहा। उपचार चल रहा था और इस बीमारी की हालत में भी कमला करघे पर बैठती। दिवाकर और अन्नपूर्णा उसे मना करते-करते थक जाते, वह नहीं मानती, काम में लगी रहती। तब राधे को उसके सामने आना पड़ता। वह पत्नी को मीठी झिड़की देकर काम पर से हटा देता, केवल यही क्षण ऐसा होता था, जब वह अपने पत्नी गत-संस्कार का कुछ महत्व समझ पाती थी वैसे उसकी जिन्दगी सूनी हो गई थी, उसमें कुछ भी नहीं रहा था।

२६

मौसम बरसात का चल रहा था। उमस भरे सड़ी गर्मी के दिन और कभी आँधी झोर पानी का बरसना, मनुष्यमात्र को न दिन में चैन और न रात में ही आराम। उस पर नगर की दुनिया बहुत ही तंग, अँधेरी गलियों में स्थित कोठरियाँ कालकोठरी के मानिन्द, एक घर और दस किरायेदार। गन्दगी को ऐसी जगहों में फूलने-फलने का खूब प्रश्रय मिलता है। कमला की बीमारी अपनी अवधि को न जाने कितनी दूर ले जा पहुँची थी। चन्द महीनों में ही वह चारपाई से लग गई। उसके हाथ-पैर बिल्कुल सूख गये थे, यहाँ तक कष्ट बढ़ा कि उसे उठने-बैठने में भी तकलीफ होने लगी। एक्सरे-चित्र और खून, थूक आदि की परीक्षा करने के बाद डाक्टरों ने प्रमाणित कर दिया था कि कमला को दिक हो गया है और उसकी पहली स्टेज पूरी हो गई है। अब सैनीटोरियम में ही इसको आराम मिल सकता है या फिर यहीं कहीं खुले हुये साफ-सुथरे मकान में बीमार को रखा जाय, यह घर उसके लिये सर्वथा अनुपयुक्त है।

दिवाकर और अन्नपूर्णा परस्पर इस सम्बन्ध में बातें करने लगे। कमला को पहाड़ भेजने और वहाँ सैनीटोरियम में इलाज करवाने में बहुत पैसा खर्च होगा। यहाँ तो सेर में एक पोनी भी नहीं है जो कुछ है इलाज में लगा दो। मेरा मन कहता है कि कमला जल्दी ही अच्छी हो जायगी।

राधे को भी पत्नी के बढ़ते हुये रोग की चिन्ता हुई। अतः वह काम

में अब दिन-रात जुटा रहने लगा, क्योंकि कमला की बीमारी के कारण दिवाकर का काम-धंधा बिल्कुल ढीला पड़ गया था।

किन्तु दुनिया के जंजाल आदमी को आगे नहीं बढ़ने देते, वे जोंक बनकर चिपक जाते हैं और छुटाये नहीं छूटते। दैवीमार की बात, राधे पर मुकदमा चलने लगा उसी अभियोग में जब मारपीट के सिलसिले में वह बन्द हुआ था। उसका पक्ष कमजोर पड़ रहा था, लगता था उसे दण्ड जरूर मिलेगा, क्योंकि उसने उद्दंडता की थी।

मुकदमे का नाम सुनते ही कमला के कलेजे के सभी घाव हरे हो उठे। वह सोचने लगी कि जब आदमी एक बार अपराधी बन जाता है तो बार-बार अपराध करने में उसे कोई झेंप नहीं मालूम होती। उसका एक पैर जेल के अन्दर और दूसरा जेल के बाहर रहता है।

राधे अवसर निकालकर अब कमला के पास बैठता भी। इधर-उधर की बातें करके उसका मन बहलाने की कोशिश करता और उसका हर प्रयत्न इसलिये होता कि कमला का विश्वास उस पर अडिग हो जाय। वह उसे गुनहगार न समझकर अपना पति समझे।

इलाज बहुत मंहगा पड़ रहा था। इधर राधे के मुकदमे में भी रुपया खर्च हो रहा था। विवश होकर दिवाकर को एक करघा बेच देना पड़ा। कमला ने जब यह सुना तो वह बहुत रोई। आजकल उसको ऊपर कमरे में रखा जाता था जिसका अतिरिक्त किराया दिवाकर को देना पड़ता था बारह रुपया मासिक। यह आयोजन केवल स्वच्छ वातावरण और खुली हवा के मिलने के लिये किया गया था।

उम्मीद की जाती थी कि मुकदमे में राधे पर जुर्माना होगा; लेकिन धारा तीन सौ तेइस के अन्तर्गत उसको एक महीने के कारावास का कठोर दण्ड मिला। इस तरह उसको सजा हो गई, वह जेल में बन्द हो गया। अब कमला की बेचैनी बहुत बढ़ी। वह पति के प्रति बहुत दुखी थी और मन ही मन अपनी तकदीर को झींख रही थी कि न जाने उसने किस कुघड़ी में जन्म लिया था, जो उसे ऐसा पति मिला। जिसका समाज

निरादर करता है। जुर्माना जमा करने की बात होती तो एक बार घर फूँक तमाशा देख लिया जाता, लेकिन राघे को तो हुई थी सजा। उसको जमानत पर रिहा करने और अपील करने के लिये काफी पैसे की जरूरत थी। इस सम्बन्ध में दिवाकर ने अनुमान लगा लिया था कि इस मामले में उसे सेशन कोर्ट से लेकर हाईकोर्ट तक दौड़ना पड़ेगा। एक महीना होता ही कितना है, राघे को सजा काटनी पड़ेगी। उसकी जमानत और अपील आदि करने में घर का सब सामान बिक जायेगा। उस पर भी अगर परिणाम कुछ नहीं निकला, सजा बहाल रही तब तो हम सब लोग जीते जी मर जायेंगे।

एक दूसरी बात दिवाकर और सोचता था। वह यह थी कि कमला यह कभी नही पसंद करेगी कि मैं करघे बेचूँ, अपनी छोटी-सी पूँजी मुकदमा लड़ने में खर्च कर डालूँ। गरीबी की सख्त जंजीरों से अब हम मुक्त हो पाये है और इस तरह उसको फिर निमन्त्रण दिया जाय। कमला यह कभी बर्दाश्त नहीं करेगी। वह घुट-घुटकर मर जायेगी।

दिवाकर राघे के मामले में मौन रहा। कमला भी कभी उसका जिक्र नहीं करती थी। हाँ अन्नपूर्णा अलबत्ता चर्चा चलाने लगती, क्योंकि प्रभू दिन में कई बार पूछता था कि माँ, फूफा नहीं आये कहाँ गये हैं ?

इस तरह घर में राघे एक भूला-भटका विषय बन रहा था। वह बन्द था जेल की चहारदीवारी के अन्दर, जहाँ दिन-रात उसे दुख घेरे रहता था कि कमला को बहुत तकलीफ थी, पता नहीं वह अब कैसी होगी ? बहुत ही क्षीण हो गई होगी। ईश्वर उसको नई जिन्दगी दे, बस मुझे दुनिया में और कुछ नहीं चाहिये।

२७

पत्नी में जब कमियाँ होती हैं तो पति उससे खुले रूप में विरक्त न होकर बाहर भटकने की कोशिश करता है और अपना मन बहलाने के साधन खोजने लगता है। वह भटक जाता है तभी उसे ग्लानि और क्षोभ पराजित नहीं कर पाते। वह जीता रहता है सुखी और मीठी हँसी हँसा करता है। किन्तु जब पति में अभाव होते हैं तो पत्नी दो ही कदम उठा पाती है। एक में वह विरोध करती है और दूसरे में समाई। विरोधाभास घर को नष्ट कर देता है और समाई साँपिन बनकर, पत्नी को डस लेती है। ऐसी ही स्थिति में पहुँच रही थी कमला। अब भी उसके सोचने-विचारने के क्रम में कोई कमी नहीं हुई थी।

अन्नपूर्णा कमला को पुत्रीवत् स्नेह करती थी। वह जब भी गृहकार्यों से अवकाश पाती ननद के पास आ बैठती और उसका मन बहलाने के लिए बातें करने लगती। एक बार उसने राधे का प्रसंग चलाते हुए कहा कि दुनिया आदमी को जीने नहीं देती, जो एक बार कानूनी बन्दिश में आ जाता है फिर उसके हर कदम पर अविश्वास की निगाहें उठने लगती हैं। भला आदमी सम्भले तो कैसे, उसे मौका तो मिलना चाहिए।

कमला भाभी की बातें सुनकर दुखी-स्वर में कहने लगी—"भाभी, सब खेल मुकद्दर का है, जिसके नसीब में जो बदा है, वही मिलता है। अब कुछ भी समझ लो, सोचकर सन्तोष कर लो, या तो मेरी तकदीर

खराब थी अथवा उनकी···"

कहते-कहते कमला रुआसी हो आई। अन्नपूर्णा उसे समझाने लगी। वह कहने लगी—"दुख झेलने से ही कटता है बीबी, तुम एक सफल पत्नी रहीं और पति को अपने अनुकूल बनाने की हरचन्द कोशिश की, लेकिन तुम्हारी हर कोशिश बेकार गई। इसका मुझे बहुत दुःख है। ऐसे ही समझ लो कि आदमी की सारी आशाएँ पूरी नहीं हो पातीं। वह लालसाओं की गठरी साथ लिए चला जाता है। मन को भटकाए रहा करो कमला, तुम्हारे लिए अधिक सोचना ठीक नहीं। एक बात मैं तुमसे और कहना चाहती हूँ कि राधे को अपनी दृष्टि में निरा दोषी ही न समझो। तुम कहती हो, उसे शान्ति से काम लेना चाहिए था। उसने झगड़ा क्यों किया? लेकिन सोचो तो कमला कि वह झगड़ा हम स्त्रियों का झगड़ा नहीं था कि गाल बजा लिए, बुरा-भला कह लिया और थोड़ी देर बाद फिर एक हो गईं। मर्दों की बात हमसे जुदा है जहाँ पर जान और मार की नौबत आ जाय वहाँ वे पीछे नहीं हटते, डटकर मुकाबला करते हैं। राधे कायर नहीं था, इसीलिए वह जब्त नहीं कर सका।"

कमला को भाभी की बातें सुनकर कुछ सन्तोष मिला। वह मन की बात कहने लगी—"वे बुरे हैं मैं यह नहीं कहती, भाभी उनकी संगति बुरे लोगों की है जिसकी मुझे शुरू से शिकायत रही। वे अपने कर्तव्य को पहचानकर अपने काम से लग गए; लेकिन बुराई के कीड़े रेंगते रहे वे उन पर चढ़ आए। वे दोस्ताना निभाते रहे और मेरी यह हालत हो गई। अब भी जेल से आकर क्या वे सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाकर चलेंगे। क्या अपने जरायम-पेशा लोगों से नहीं मिलेंगे। इस पर मुझे विश्वास नहीं होता भाभी?"

विश्वास और अविश्वास की पृष्ठभूमि को लेकर अन्नपूर्णा कमला से दुनियादारी बतलाने लगी। उसने कई उदाहरण दिए और जब तक बातों का सिलसिला नहीं टूटा उस बीच उसने कमला से जो कुछ भी कहा उसका यही निष्कर्ष था कि कमला राधे पर अविश्वास न करे। उसके

प्रति अपने मन में कोई निंद्य भावना न रखे। उसके साथ मित्रता का व्यवहार करे। वही मनुष्य एक दिन देवता बन जाएगा।

कमला अपने मन की स्थिति को स्वयं ही समझ सकती थी। दवा इलाज का यह हाल था कि घर में अब केवल एक करघा रह गया था। उस पर मरे मन से कभी काम करती थी अन्नपूर्णा और कभी दिवाकर। आमदनी से अधिक खर्च बढ़ा हुआ था। कमला की बीमारी में काफी पैसा खर्च हो रहा था जब कि इलाज खैराती अस्पताल का चल रहा था। यह स्थिति थी धर्मार्थ संस्थाओं की। दिवाकर जब भी बहन को दिखलाने ले जाता तो डाक्टर एक लम्बा-सा पर्चा लिख देता और कहता : ये दवाइयाँ बाजार से खरीद लो और मिक्शचर यहाँ से बनवा लो।

घर में अब रोटियों की तंगी-तबाही होने लगी थी। दो महीने हो गए। पप्पू की फीस नहीं पहुँच पाई। कमला यह सब सुनकर मन ही मन भय से काँप उठी कि मालूम होता है मेरे पीछे भैया फिर तबाही की मंजिल की ओर जा रहे हैं। क्या करूँ, अब मैं अशक्त हूँ, कुछ भी नहीं कर सकती। लोग मरने से डरते हैं; लेकिन मैं डरती नहीं। मैं चाहती हूँ कि एक बार ईश्वर मुझे फिर शक्ति दे, मेरी नई जिन्दगी हो तो मैं दुनिया को दिखला दूँ कि बिगड़े हुए लोग किस तरह सुधारे जाते हैं और उखड़े हुए पाँव किस तरह स्थिर किए जाते हैं। जिन्दगी का मोह इन्सान को हमेशा से रहा और रहेगा। परम्परा अपनी राह पर चल रही है दुख-सुख, उसके दोनों पक्ष हैं, मैं उससे वंचित कैसे रह सकती हूँ ?

कमला की बीमारी ने अब भयंकर रूप धारण कर लिया था। पहले भी उसे नींद बहुत कम आती थी; लेकिन इधर कुछ दिनों से खाँसी की शिकायत हो गई थी। सारी रात उसे खाँसना पड़ता। फिर भी वह सोचा करती थी अपने पति के प्रति और अपने पातिव्रत धर्म के प्रति।

२८

राधे जब जेल से छूटकर घर आया तो देखा कि घर की दशा एकदम बदल गई है। कमला की बीमारी अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। हाथ करघा उद्योग घर में बस रहे रोग से लड़ रहा था। अन्नपूर्णा और दिवाकर दिन-रात कमला के पास बैठे रहते, फिर भला करघा कौन चलाता? आते ही राधे कमला की चारपाई पर बैठ गया और उसकी ओर उन्मुख हो कहने लगा—"कमला, तुम मुझ पर नाराज होगी कि मैं बार-बार जेल जाता हूँ। तुम्हारी यह हालत थी और मैं बन्द था। मगर मैं अपनी खुशी से नहीं मजबूरी से गया था। आज तुमसे वायदा करता हूँ, भइया और भाभी भी सामने बैठे हैं कि जिन लोगों से मेल-मुरब्बत रखने के कारण मैंने दुबारा फिर जेल की हवा खाई, अब उनकी छाया से भी दूर रहूँगा और घर के इस पिछड़े हुए हाथ करघा उद्योग को नया जीवन दूंगा। अब मैं मेहनत करूँगा कमला, मेरे पास इतना समय ही नहीं रहेगा कि किसी से मिलने जाऊँ, तुम अच्छी हो जाओ। मैंने तुमसे एक दिन कहा था न कि मैं इन्सान बनने जा रहा हूँ और इन्सान बनकर लौटूँगा। उस समस्या का हल सामने मौजूद है। धन्धे को कहीं खोजने नहीं जाना है उसको स्वयं मेरी तलाश है। बस मन को प्रसन्न रखो, और यह सोच लो कि यहाँ से हम लोगों की जिन्दगी एक नया मोड़ ले रही है। हम अब कभी हैरान नहीं होंगे, तबाही और बर्बादी के मुंह में नहीं जायँगे।"

कमला को पति की बातें सुनकर सन्तोष हुआ। वह उस समय मुस्कराई। तभी खाँसी आ गई और उसकी पसलियाँ खाँसते-खाँसते फुड़िया-सी दुखने लगीं।

दूसरे दिन राधे काम पर बैठने की सोचता ही रह गया। वह पूरे दिन कमला की परिचर्या में लगा रहा और दूसरे दिन भी उसका यही क्रम रहा। किन्तु उस समय उसकी आँखें खुलीं और जमीन-आसमान नजर आ गये, जब डाक्टर ने एक इन्जेक्शन लिखा जो लगभग दस रुपये का आता था। दिवाकर और अन्नपूर्णा दोनों खाली हाथ थे। वह किससे जाकर माँगे; क्योंकि इतनी जल्दी दरी भी तो नहीं तैयार हो सकती थी। यद्यपि दो दरियों का सूत घर में रखा था; मगर उनको बुनने के लिये समय की जरूरत थी। हथेली पर सरसों नहीं जम सकती है यह सोचकर राधे घर से बाहर निकला।

बाहर आकर राधे सोचने लगा कि रुपये का तत्काल प्रबन्ध कहाँ से और कैसे हो सकता है? काफी सोच-विचार के बाद वह एक गली की ओर मुड़ गया। यह जरायम-पेशा लोगों का दूसरा ठिकाना था, जिनसे राधे का कभी झगड़ा नहीं हुआ और सम्पर्क भी नहीं रहा। सिर्फ जान-पहचान भर थी। उसने जाकर एक आदमी से दस रुपये माँगे उधार आठ-दस दिन के लिए। देने वाले ने रुपये तो दे दिए। साथ में यह पुट भी जमा दिया कि अरे ले जाओ यार दस रुपये कौन बहुत होते हैं, भाई-चारे और आपसदारी में ऐसा ही चलता है।

राधे को रुपये की जरूरत थी वह लेकर चला आया। उसका मन अन्दर ही अन्दर स्वयं उस पर खीझ रहा था कि वह रुपये ले क्यों आया उसे नहीं लाने चाहिए थे। जहाँ स्वाभिमान की हत्या होती हो वहाँ एक क्षण भी नहीं ठहरना चाहिए; किन्तु अफसोस! मजबूरी आदमी से सब कुछ करा लेती है। बाजार में आकर राधे ने इंजेक्शन खरीदा और उस को ले प्रसन्न मन घर की ओर अग्रसर हुआ।

कमला के सामने जब इंजेक्शन की शीशी पहुँची और राधे उसको

उसी समय अस्पताल ले जाने की तैयारी करने लगा तो उसने इन्जेक्शन की शीशी हाथ में उठा ली और सामने खड़े पति से पूछने लगी—"इन्जेक्शन के लिए रुपये कहाँ से आए, तुम्हारे पास तो कुछ था नहीं ? किसी से माँगकर लाए हो ? मुहल्ले मे कौन ऐसा है, जो हम लोगों को रुपए देगा ?"

अन्नपूर्णा और दिवाकर बुत बने खड़े कभी कमला और कभी राधे की ओर देख रहे थे और राधे था निरुत्तर। वह चुपचाप नीची दृष्टि किए खड़ा था। कमला का फीका चेहरा एकदम तमतमा उठा। उसकी आँखें लाल हो गई। हाथ में सधी इन्जेक्शन की शीशी काँपने लगी। वह तेज गले से बोली—"बोलते क्यों नहीं ? मेरी बात का जवाब दो। रुपए कहाँ से लाए ?"

राधे फिर भी कुछ नहीं बोला। तब कमला का रूप उग्र हो गया और वह व्यस्त गले से पूछने लगी—"जल्दी बताओ, मैं नहीं जाऊँगी डाक्टर के यहाँ। इन्जेक्शन नहीं लगवाऊँगी, जब तक जान नहीं लूँगी कि उसको तुमने कैसे हासिल किया ?"

अब राधे द्विविधा और असमंजस के बीच गोते लगाने लगा। वह जानता कि कमला जो कह रही है वही करेगी। उसके सामने झूठ बोलने का साहस नही होता। क्या बुराई है, असलियत बतला दूँ उसे ?

राधे ने स्थिति का स्पष्टीकरण कर दिया और कमला आवेश में आ, कहने लगी—"फिर तुम गये उस पाप-कुण्ड की ओर और डुबकी लगा आए। मैं यह कभी नहीं सह सकूँगी कि तुम ऐसे लोगों का साथ करो, उनसे सहायता लो, जिन्हें समाज अपने माथे पर कलंक समझता है। ले जाओ इन्जेक्शन वापस कर दो और उस आदमी के रुपए लौटा आओ। मुझे लगता है इस शीशी में भरी हुई दवा औषधि नही, हलाहल विष है। यदि यह इन्जेक्शन मेरे लगा तो मौत का कारण बन सकता है, ले जाओ !" कहते-कहते कमला को धक्की बाँधकर खाँसी आ गई। इंजेक्शन हाथ से छूट गया और फर्श पर गिरकर टूट गया।

राधे अवाक् खड़ा था। वह कमला की ओर देख रहा था और अन्नपूर्णा ननद की पीठ सुहरा रही थी। कमला खाँसते-खाँसते बेदम हो गई। वह कुछ क्षणों के लिए चेतनाहीन-सी हो गई थी। यह देख उसकी भाभी की आँखों में आँसू भर आये और टप-टप फर्श पर चूने लगे। दिवाकर बहन के मुख पर पंखा झलने लगा और प्रेमू उसका कन्धा हिला कर पूछ रहा था—"बूआ को क्या हो गया है पापा? फूफा बड़े खराब हैं, बूआ को नाराज कर देते हैं।"

पप्पू अब काफी समझदार हो गया था। उसने प्रेमू को गोद में उठा लिया और उसके मुँह पर हाथ रखकर कहने लगा—"चुप, चुप। ऐसा नहीं कहते, तू तो बड़ा समझदार है, बुआ को खाँसी का दौरा पड़ गया है अभी अच्छी हो जायेंगी।"

प्रेमू पप्पू की गोद में जाकर बहल गया। तब उस समय कमरे का वातावरण सायँ-सायँ कर रहा था। सन्नाटा छाकर रह गया था। किसी को भी अपनी गतिविधि का होश न था।

२९

रात अंधेरी थी। आसमान पर काले बादल छाये थे। यद्यपि बरसात अब प्रौढ़ हो चली थी; लेकिन फिर भी कभी-कभी बादल घिर आते और उमड़-उमड़कर बरसने लगते। हवा इतने धीरे बह रही थी कि कमरे में उमस ने पूर्णरूपेण अपना साम्राज्य स्थापित कर रखा था। लालटेन जल रही थी एक कोने में खूँटी में टँगी, जिससे भद्दा और बदबूदार धुआँ निकल रहा था। कमला की पलकें अभी बन्द थीं, दिवाकर पंखा झल रहा था और अन्नपूर्णा दोनों हाथों में उसका सिर पकड़े बैठी न जाने क्या सोच रही थी। पप्पू प्रेमू को लेकर बाहर चला गया था।

राघे खड़ा-खड़ा सोच रहा था कि ईमानदरी की जिन्दगी बसर करना भलमनसाहत है, सहारे की जिन्दगी को निरी कायरता कहा जाता है और ईमान खोकर जिन्दा रहना जीते जी आदमी को मार डालता है। मैंने समय व्यर्थ ही नष्ट किया अब तक ताना-बाना लग चुका होता। खैर जहाँ से जगा वहीं से सवेरा समझूँगा अभी जाकर करघे पर बैठता हूं न दिन को दिन गिनूँगा और न रात को रात। एक बड़ी सी दरी तैयार करूँगा, दस रुपये से कम की नही बिकेगी। ईश्वर तब तक कमला को राहत दे, उसे हमेशा मेरी मेहनत की कमाई की साध रही और मैं उसकी यह लालसा कभी पूरी नहीं कर सका। यद्यपि वह मरणासन्न है; लेकिन फिर भी मेरा आत्मविश्वास दृढ़ है, मुझे पूरा-पूरा यकीन है कि दरी बेच

कर मैं जो इन्जेक्शन लाऊँगा उससे लाभ पहुँचेगा। कमला मुस्करा उठेगी और वह मुस्कराहट ही उसका आधा रोग दूर कर देगी।

थोड़ी देर बाद कमला ने आँखें खोलीं। सामने अपराधी की भाँति खड़ा था, उसका जीवन-देवता। वह धीरे से बोली—"इन्जेक्शन फूट गया, पराई अमानत पानी बनकर बह गई; क्या करती, खाँसी ने सब राग बिगाड़ दिया। खड़े क्यों हो, बैठ जाओ न ?"

तब बाहर पानी के बड़े-बड़े बूँद टपकने लगे थे पप्पू अन्दर आ गया। उसने बाहर के किवाड़े बन्द कर लिये। छत पर पहुंच वह कमला के कमरे की ओर जा रहा था तब तक पानी जोर पकड़ गया और हवा भी उसका साथ देने लगी। राधे बैठा नहीं खड़ा रहा। वह पत्नी के सामने बच्चों की तरह रो पड़ा और रुँधे गले से बोला—"कमला, तुम्हारी योजनाओं पर यदि मैं आरम्भ से ही अमल करता तो आज को मुझ में इन्सानियत का रंग निखर आया होता। मेरी बदनामी ने तुम्हारे हृदय में घाव कर दिये और वे घाव अब नासूर बन गये हैं। मैं उन पर मरहम लगाऊँगा, तुम अच्छी हो जाओगी। मैं बैठूँगा नहीं अब काम से लगूँगा, सारी रात जुटूँगा, कल शाम तक दरी तैयार हो जायेगी। बस, अब मैं चला कमला। इस कमरे में तभी आऊँगा जब मेरे हाथ में इन्जेक्शन होगा और साथ में डाक्टर···"

राधे चला गया और कमला के सूखे होठों पर मुस्कान बिखर कर रह गई। वह जाते हुये पति के कदमों को निहारने लगी।

मौसम अपने में भयानकता का समावेश कर सबके मन को आतंकित कर रहा था। आँधी चल रही थी। इतने जोर की कि मकानों पर पड़ी टीनें झनझनाकर बज रही थीं, खुले किवाड़े आपस में लड़ रहे थे। पानी बरस रहा था मूसलाधार। रात काली थी अँधेरी काजल की तरह। ऐसे में कमला के कमरे का सन्नाटा बार-बार काँप-काँप उठता था। किवाड़े और खिड़कियाँ बन्द थीं फिर भी रोशनदान से आ रही हवा लालटेन की खबर ले रही थी। उसकी लौ लुप-लुपाकर रह जाती और तब अब-

पूर्णा की भीत दृष्टि एक बार लालटेन की ओर उठ जाती फिर वह कमला के मुरझाये चेहरे को निहारने लगती थी।

पप्पू और प्रेमू उसी कमरे में एक ओर फर्श पर सो गये थे। कमला कभी आँखें खोल लेती, कभी बन्द कर लेती। इससे दिवाकर की चिन्ता न जाने कितनी बढ़ जाती थी। नीचे के हिस्से में राधे मिट्टी के तेल की ढिबरी जलाये, करघे पर उँगलियाँ चला रहा था।

रात कितनी बीती, कितनी और रह गई है राधे को इसका कुछ बोध ही नहीं था। वह अपनी लगन में लगा था। मन में भावनायें उसके साथ द्वन्द्व कर रही थीं तब कभी-कभी वह सोचने लगता कि करीब दस रुपये का इन्जेक्शन आयेगा और डाक्टर की फीस ? उसके लिये क्या होगा ? गरीबों को भगवान् भी खूब दुख देते हैं। खैर कुछ भी करूँ, मैं डाक्टर को जरूर लाऊँगा उसकी खुशामद करूँगा, वह मान जायेगा और कमला के इन्जेक्शन लग जायेगा।

रात बीत गई सवेरे ने दर्शन दिये, किन्तु पानी थमा नहीं। अब भी खूब जोर बाँधे बरस रहा था। हवा मचल रही थी आँधी की तरह यद्यपि उसका वेग कुछ कम हो गया था। अन्धेर ! महाअन्धेर ! एक बहुत बड़ा अनर्थ हो गया और अन्नपूर्णा की आँखें फटकर रह गईं। दिवाकर भी मुँह बाये देख रहा था कि इस बार खाँसते-खाँसते कमला परेशान हो गई और तेजी के साथ बलबलाकर उसने खून कै कर दिया।

राधे की दरी लगभग आधी पूरी हो गई थी। वह अपनी धुन में व्यस्त था। भूख-प्यास तो दूर रही वह एक बार भी मल-मूत्र त्यागने के लिये नहीं उठा, जब से बैठा—उठा नहीं। अन्नपूर्णा और दिवाकर घबड़ाये हुये कमला की परिचर्या में लगे थे और पप्पू ने नीचे आकर अपने फूफा को खबर दी कि बुआ को खून की कै हुई है। माँ रो रही हैं, जल्दी चलो फूफा, जाओ डाक्टर को बुला लाओ।

राधे की उँगलियाँ करघे पर रुक गईं और वह घबड़ाहट के भीत-स्वर में पूछने लगा—"ऐं, क्या हुआ ? उल्टी हो गई बुआ को, खून की ?"

हाँ द्योतक सिर हिलाता हुआ पप्पू टुसुर-टुसुर रोने लगा। तब राधे ने अपनी आँखें मूँद लीं और एक क्षण तक सोचता रहा। फिर संयत हो पप्पू से कहने लगा—"जाओ, अब देखकर आओ, क्या हाल है ?"

पप्पू चला गया और राधे की उँगलियाँ फिर करघे पर दौड़ने लगीं। इस समय उसके हाथ आँधी की तरह चल रहे थे। बाहर आँधी-पानी का तो जोर था ही; किन्तु उसके मानस-प्रदेश में भी हलचल कम नहीं थी।

थोड़ी देर बाद पप्पू लौट आया और उसने बतलाया कि हाँ अब बुआ चुपचाप लेटी हैं और माँ उनसे बातें कर रही हैं और पापा वह खून धो रहे हैं, जो बुआ के मुँह से गिरा था।

बस राधे के होंठ फड़क उठे उन पर मुस्कान दौड़ गई। उसमें दूने साहस का संचार हो गया और वह काम में भूत की तरह जुट गया।

सबेरा कब दोपहर में बदल गया, आज इस बात का पता ही नहीं चला। चिराग बत्ती का फिर समय हो गया। राधे की दरी अब पूरी होने को थी, थोड़ी कसर रह गई थी। पानी इस समय बन्द हो गया था और हवा की साँसें भी नरम हो आई थीं। आज पूरे दिन भर कमला को उलझन रही। वह बहुत बेचैन रही। राधे को हर समय की स्थिति का ज्ञान कभी अन्नपूर्णा आकर करा जाती और कभी दिवाकर दुखद सूचना लेकर आता। पप्पू, प्रेमू वे दोनों बारबार नीचे आते और फिर ऊपर जाते। दोनों लड़के आज बहुत उदास थे, उनके चेहरे उतरे हुये थे।

दरी पूरी हो गई। राधे ने तहाकर उसे काँधे पर डाला और जब वह घर से जाने लगा तो मन हुआ कि दरी तो अब तैयार ही हो गई है इन्जेक्शन बाजार से लौटते समय मैं लाऊँगा यह भी तय है चलो, कमला को तो देख लूँ। मेरे जाने से उसमें कुछ साहस आ जायेगा और वह जीने के लिए मजबूर हो जायेगी।

किन्तु राधे के अन्तर्मन ने यह स्वीकार नहीं किया। वह निकल पड़ा दरी बेचने के लिए। संयोग की बात आध घण्टे के अन्दर ही दरी बिक गई। ग्यारह रुपये मिले। उसके आनन्द का उछाह नहीं रहा। उसने

जल्दी से जाकर इन्जेक्शन खरीदा और घर की ओर फिर वापस लौटता हुआ यह सोचने लगा डाक्टर का कोई ठीक नहीं, कम्पाउण्डर से ही इन्जेक्शन क्यों न लगवा लूँ, एक रुपया खुशी से लेगा।

राघे जब अपने पड़ोस के कम्पाउण्डर की डिस्पेंशनरी में पहुँचा तो पानी पुनः तेजी के साथ बरसने लगा। कम्पाउण्डर तब कहीं किसी बीमार के यहाँ इन्जेक्शन लगाने गया था। राघे अधिक देर तक डिस्पेंशनरी में नहीं ठहर सका, क्योंकि इस समय उसका एक-एक क्षण बहुत बड़ी कीमत रखता था। एक दूसरे ड्रेसर मैन को वह अच्छी तरह से यह समझाकर चल दिया कि आते ही वह कम्पाउण्डर को उसके घर इन्जेक्शन लगाने के लिए भेज दे।

बिजली कड़क रही थी, बादल गड़गड़ा रहे थे। पानी खूब झमाके के साथ बरस रहा था। राघे भीगता हुआ चला जा रहा था। उसके पैर पानी में छप-छप कर रहे थे। अंधेरा खूब घना हो चला था। घर थोड़े व्यवधान पर रह गया था कि एक ओर से कुत्तों के रोने की आवाज सुनाई थी। वह कुछ सहमा, रोयें सिर उठाकर खड़े हो गए। तभी आकाश में जोर से बिजली कड़कड़ाई और ऐसा लगा कि वह ऊपर गिरी पड़ रही है। दरवाजे पर आते ही उसके कानों में रोने की आवाज सुनाई दी। उसका कलेजा कांप उठा और हृदय जल्दी-जल्दी धड़कने लगा। किवाड़ खुले पड़े थे, वह धड़धड़ाता हुआ अन्दर चला आया और एक क्षण में ही पहुँच गया कमला के कमरे में। उसने देखा कमला की मृत-देह सामने पड़ी है। अन्नपूर्णा बिलख-बिलखकर रो रही है और दिवाकर भी बैठा है गमगीन, उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं। बच्चे सिसक रहे थे। वे अपनी माँ के पास बैठे बार-बार अपनी बुआ की ओर देख रहे थे।

राघे के हाथ से इन्जेक्शन की शीशी छूट पड़ी। गिरते ही वह फूट गई और वह रोने लगा, अधीर होकर वह कह रहा था—"कमला, तुमने मेरी प्रतीक्षा नहीं की तनिक देर और ठहर जातीं, मरने से पहले मैं तुमसे दो बातें कर लेता, और मैं तुम्हें मरने ही नहीं देता कमला;

लेकिन तुम रूठकर चली गईं, तुमने मुझे क्षमा नहीं किया कमला !"

दिवाकर उठा और उसने एक सफेद चादर कमला के शव पर डाल दी। अब अन्नपूर्णा का क्रन्दन इतना करुण हो उठा कि उसको सुनकर पत्थर भी पिघल जाता। राधे पत्नी के पास गया और उसके मुँह के ऊपर से चादर हटा इस तरह कहने लगा, मानो कमला उसके सामने मृत नहीं, जिन्दा पड़ी है। वह कह रहा था—"तुम देवी थीं कमला, मेरे अन्दर के दानव ने तुमको मार डाला, जियो और जीने दो, जिन्दा रहना है, तो काम करो, मेहनत ही इन्सान का फर्ज है। तुमने मरकर यह सब प्रमाणित कर दिया कमला। तुम चली गईं; लेकिन मेरे लिए एक सबक छोड़ गईं जिसे मैं जिन्दगी भर पढ़ता रहूँगा, मेरे पापों का यही प्रायश्चित्त है।"

राधे की स्थिति पागलों जैसी हो गई थी। वह मन में जो कुछ आता बके जा रहा था, कहे जा रहा था। दिवाकर उसके पास गया और समझाने लगा तो वह उसके कन्धे झकझोरकर बोल उठा—"दिवाकर ईमान बड़ी चीज है, मैं न उससे डिगता और न कमला को खोता, कमला मरी नहीं अमर हो गई है। उसका बलिदान मेरे सुधार के लिए हुआ है। उसने घर में हाथ करघा उद्योग धन्धे को अपनाकर जो चमत्कार दिखलाया था मैं उसके शेष काम को लगन से पूरा करूंगा। घरेलू उद्योगों को जितना बल मिले उतना ही अच्छा है। कमला ने इसका श्रीगणेश किया था और अब मैं उस पौधे को सींचूंगा उसकी जड़ें मजबूत करने के लिए।"

दिवाकर खामोश था और अन्नपूर्णा का रुदन अब सिसकियों में बदल गया था। बच्चे बैठे थे दुबके, सहमे हुए। और राधे की बातों का सिलसिला जब नहीं टूटा तो दिवाकर उसके पास से हट आया और कमला का खुला हुआ मुँह ढाँकने लगा।